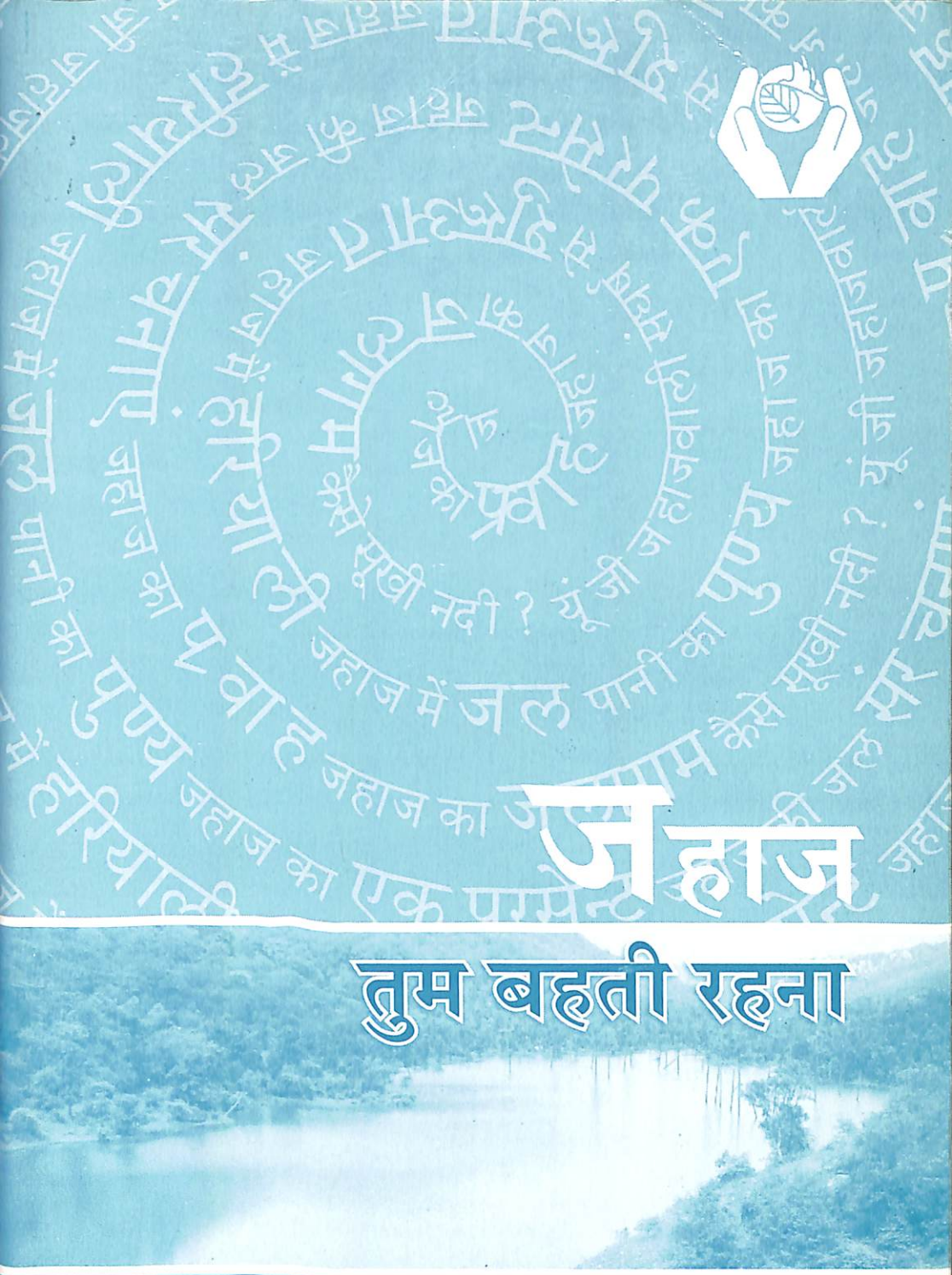

जहाज
तुम बहती रहना

जगदीश गुर्जर

जहाज तुम बहती रहना

प्रथम संस्करण
देवउठनी ग्यारस, विक्रम संवत: 2066

प्रेरणा
राजेन्द्र सिंह

लेखक
जगदीश गुर्जर

लेखन सहयोग
गोपाल सिंह

ग्राफिक्स एवं चित्रांकन
देवयानी कुलकर्णी-विनोद कुमार

प्रकाशक
तरुण भारत संघ

मूल्य
रुपये 80/-

मुद्रक
कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

इस पुस्तक की सामग्री का सदुपयोग करने के लिए सभी स्वतंत्र हैं।
स्रोत का उल्लेख करेंगे, तो अच्छा लगेगा - लेखक/प्रकाशक

श्री मल्ला बाबा

श्री लोकेन्द्र भाई

श्री जगदीश शर्मा

सादर समर्पण

जिनके पुण्य और प्रताप से
जहाजवाली नदी का पुनर्जीवन संभव हो सका।

प्रभात पटेल

परता बाबा

गंगा देवी

सुगन सिंह

लक्ष्मीनारायण शर्मा

ज्ञानी देवी

लक्ष्मण गुर्जर

रामजीलाल शर्मा

प्राक्कथन	3
निवेदन	6
आह्वान	8
वंदना	10
जहाज का प्रवाह	11
जहाज का जलागम	14
कैसे सूखी नदी ?	22
यूं जी जहाजवाली	24
जहाज में हरियाली	38
जहाज में जल	42
जहाज का पुण्य	51
जहाज का एक परसेन्ट	54
जहाज की जल संरचनाएं	67

एक निष्कर्ष ने बदली धारणा
जब मैं कार्यकर्ता बना

प्राक्कथन

जहाजवाली नदी देवरी से शुरू होती है। देवरी यानी देवभूमि। जब मैं पहली बार देवरी गांव गया, तो हम दोनों एक-दूसरे के लिए अपरिचित जैसे ही थे। उन दिनों देवरी गांव बेपानी होकर चारा-पानी के संकट से जूझ रहा था। यहां के बुजुर्ग अपनी-अपनी गाय-भैंसों को लेकर चारा-पानी की तलाश में नीचे के गांवों में गये हुए थे। कुछ बुजुर्ग गांव में भी थे। गुवाड़ा के परताराम गुर्जर, लक्ष्मण गुर्जर, भगवान सहाय गुर्जर व श्रवण लांगड़ी देवता सरीखे लोग थे। बांकाळा के भम्बू, सुरजा और कैलाश गुर्जर सादगी, सरलता और सहजता की मिसाल थे। गांव देवरी के प्रभात पटेल तो जैसे साक्षात् जल-देवता ही थे। प्रभात पटेल को याद करके ही मेरे मानस पटल पर इस इलाके के लोगों की तस्वीर देवताओं जैसी बनी है। इसी गांव के पुजारी जगदीश शर्मा, जिन्हें मैं पंडित जी कहता था... मुझे बहुत याद आते हैं। तरुण भारत संघ के सम्पर्क में आकर जगदीश जी एक पुजारी से सामाजिक कार्यकर्ता बन गये थे।

देवरी गांव से जैसे ही नीचे की ओर आते हैं, तो सामने राड़ा गांव आता है। राड़ा गांव के सुरजा, हरजी, घमण्डी, श्रीकिशन, भरताराम, दयाराम, रूपनारायण, प्रभात डोई, ज्ञानी देवी व गंगा बहन जैसे लोगों ने प्रारम्भ से ही हमारे साथ मिलकर अपने गांव में पानी का काम शुरू कर दिया था। जगदीश व रामदयाल जैसे तरुणों ने पहले अपने गांव में फिर जहाजवाली नदी के पूरे जलागम में काम किया। बाद में तो इन्होंने सम्पूर्ण अलवर जिले में जल संग्रहण हेतु चेतना जगाने व ग्राम संगठन बनाने का कार्य किया। सच पूछो तो इन दोनों तरुणों के कारण ही इस क्षेत्र में पानी का हमारा काम आगे बढ़ सका। ये आज भी पानी का काम सतत रूप से कर रहे हैं। जगदीश चम्बल नदी जलागम क्षेत्र में चमन सिंह के साथ आज भी करौली जिले की सपोटरा तहसील में महेश्वरा नदी को पुनर्जीवित करने के काम से जुड़े हैं। रामदयाल पाली जिले के जोजावर गांव के आस-पास के क्षेत्र में वहां की नदी को सजल करने में जुटे हैं।

राड़ा से आगे ही नांडू गांव शुरू होता है। प्रारम्भ में यहां के सतीश शर्मा ने अपने और आस-पास के गांवों में पानी का अद्भुत काम किया। बाद में कुंजबिहारी शर्मा ने इसी काम को आगे बढ़ाया। इसी गांव की निर्मला शर्मा ने पूरे नदी जलागम क्षेत्र में महिला संगठन व जल संरक्षण के काम किये। सुभाष शर्मा ने भी पानी के काम को आगे बढ़ाया। निर्मला व सुभाष अब भी बिना किसी आर्थिक मदद के पानी व जंगल बचाने के काम में सक्रिय हैं।

मैं किस-किस के नाम गिनाऊँ? इतने हाथ इस काम में लगे रहे कि गिनती गिनना मुश्किल है।

नांडू से आगे आता है गांव - लोसल गूजरान। मुझे याद है। अस्सी के दशक के अंत में देवरी में काम शुरू हुआ था, तभी लोसल गूजरान में भी जल-जंगल बचाने के काम की अद्‌भुत शुरुआत हुई। लक्ष्मण, बुद्धा, रामकरण, हरसहाय, कैलाश, नवरत्न, देवाराम व श्रीराम गुर्जर जैसे कर्मठ लोग काफी सक्रिय भूमिका में थे। इस गांव में शुरू में तो गोवर्धन पंडित ही आये थे, पर बाद में श्रवण शर्मा ने यहां स्कूल चलाने की जिम्मेदारी अपने हाथ ले ली थी। श्रवण ने स्कूल चलाने के अलावा गांव के संगठन पर भी काफी जोर दिया। जल्दी ही यहां पर जल क्रांति के बीज बो उठे थे। लोग अपने गांव का पानी रोकने के लिए जागरूक होने लगे थे। लोसल गूजरान में एक बांध बनाने की बात तय हुई। इस काम में जगदीश व रामदयाल का विशेष सहयोग रहा। फलस्वरूप यहां के बीलूण्डा बांध का काम बड़े जोरों से शुरू हुआ। इस काम में नरेन्द्र सिंह ने भी ट्रैक्टर द्वारा बड़ी ही लगन से काम करके गांव के पानी को रोकने में सहयोग किया। इन सभी के संयुक्त प्रयास से ही यह गांव पानीदार बन सका।

इस गांव से मैंने बहुत कुछ सीखा है। मुझे याद है कि यहां केवल बीलूण्डा बांध के भर जाने से ही लोसल गूजरान के कई कुओं का जलस्तर काफी ऊपर आ गया था। बाद में इस गांव में और भी बहुत काम हुए। इस गांव के कामों के पूरा हो जाने के बाद तो जहाजवाली नदी के पूरे जलागम क्षेत्र में ही जैसे एक जलक्रांति की लहर आ गई। जहाजवाली नदी जलागम क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है, जिसके लगभग सभी गांवों में तरुण भारत संघ व गांवों द्वारा आपसी सहभागिता से पानी का काम हुआ है।

इस क्षेत्र के समाज ने मुझे जो स्नेह दिया है, मैं उसे भुला नहीं सकता। मुझे स्नेह देने वाले अधिकांश बुजुर्ग तो अब स्वर्ग सिधार गये हैं, पर उनकी यादें आज भी मेरे साथ हैं। परताराम गुर्जर, बोदन पटेल, कानाराम व रामकंवार (गुवाड़ा); कन्हैयालाल व कौशल्या (बांकाळा); प्रभात पटेल व रामधन मीणा (देवरी); बख्शी पटेल, हरलाल, हरसहाय, मुरली, छीतर, हरजी, मंगला राम, सुरजा राम, जयनारायण, कन्हैया लाल, घमंडी, श्रीमती संगारी व कौशल्या (राड़ा); पांचू व सरदारा (कैरवाड़ा); गणेश, मुरली, नारायण व बदरी (राड़ी); भगवान सहाय पटेल (नाण्डू); सरदारा, हरसहाय, ख्यालीराम व देवाराम जागवाला (लोसल गूजरान); भगवान सहाय मिश्र व श्योसहाय पटेल (लोसल ब्राह्मणान); कन्हैयालाल पटेल व सुगन सिंह (घेवर); हरसहाय पटेल, (नायाळा) तथा लक्ष्मी नारायण शर्मा, भगवान सहाय शर्मा व सुखचन्द गुर्जर (चावा का बास) की यादें मुझे बिना प्रयास स्मरण हैं। इन सभी कामों के शुरुआती दौर में, तालाबों के निर्माण करने में तरुण भारत संघ का किसी न किसी रूप में सक्रिय सहयोग रहा है। पाटन गांव के जगदीश शर्मा (पंडित जी) का जिक्र मैं पहले ही कर चुका हूं। जहाजवाली नदी क्षेत्र की उक्त दिवंगत आत्माओं के पुण्य काम अगली पीढ़ी को भारतीय पानी परम्परा जीवित रखने की प्रेरणा दें। ऐसी मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

गुवाड़ा के सुरस्ती देवी, जयराम, मंगलराम व बांकाळा के भम्बू, उमराव व भोलाराम; देवरी के बाबूलाल, भगवान सहाय, गिर्राज, छोटेलाल, दास, हरीकिशन, मोहरपाल, सम्पत्ती देवी व किशनी; राड़ा के श्रीकिशन, लक्ष्मण, बीरबल, रूपनारायण, अर्जुन, जयराम, जगदीश, दयाराम, हरफूल, बोबड़, नारायण सहाय, प्रभातीलाल, घासी, रामकिशन, उमराव, गोपी, प्रहलाद, कैरवाड़ा के गिर्राज, सियाराम व रामावतार; राड़ी के रामकर्ण, रामप्रसाद व हीरालाल; नाण्डू के रामेश्वर शर्मा 'बड़ा पटेल', शिवदयाल लट्ठमार, मुरलीपुरा के रामदयाल, लीलाधर, श्रीराम व लहरी; लोसल गूजरान के टूण्डाराम, धन्नाराम, रामकिशन, रामफूल, लोसल ब्राह्मणान के अणतराम, मनोहरलाल, किशनलाल, जगदीश वकील व गजानन्द; तालाब के कजोड़ प्रजापत, मनोहर पण्डा, बिशन सहाय शर्मा व गंगालहरी महन्त; धोळा राड़ा के रामजी लाल राजोरिया, रमेश राजोरिया व मदन पटेल; लाड़्या का गुवाड़ा के श्री किशन मास्टर, रामप्रताप, जगदीश व रामस्वरूप; रूपबास के रामावतार सैनी, प्रभातीलाल सैनी व कन्हैया नया बासी; चावा का बास के मुकेश शर्मा, सुभाष शर्मा, गोकुल गुर्जर व रामजी लाल गुर्जर; घेवर के देबीसहाय, प्रहलाद, मूलचन्द गुप्ता, रामावतार गुप्ता, रामजीलाल चौबे, हरीकिशन जांगिड़, मिश्रीलाल बैरवा व कैलाश प्रजापत; भोज्याळा के रामकरण व लीलाराम; राजड़ोली के नानगराम व हरसहाय गुर्जर; नाभाळा के देबी सहाय, छोटेलाल, श्रीराम व रामप्रताप; टहला के हरीश जैमन, रामकृपाल मास्टर व बाला सहाय मास्टर जैसे कई अन्य नाम मेरे जेहन में बस गए हैं। एक नाम जंगलात के अच्छे रेंजर श्री भोजराज सिंह का भी है।

पिछले 25 वर्षों से मुझे व तरुण भारत संघ के मेरे साथियों को इन सभी का बहुत सहयोग व प्रेम मिला है। मल्ला बाबा को भला मैं कैसे भूल सकता हूँ! जहाज पुनर्जीवन उनकी भी कामना थी। आप सभी जहाज की भागीरथ शक्तियां रही हैं। आप सभी लोगों के श्रम व सहयोग के कारण ही जहाजवाली नदी पुनर्जीवित हो सकी। आप सभी लोग तरुण भारत संघ को अपना ही संगठन मानकर आज भी बिना किसी स्वार्थ के सामाजिक कार्य के लिए समय दे रहे हैं। ऐसा विरला समाज हमारे लिए सदैव वंदनीय रहेगा।

श्री जगदीश गुर्जर की लिखी यह पुस्तक जहाज के समाज को समर्पित पुष्प गुच्छ की भांति ही है। इसे जहाज के समाज व पाठकों तक पहुंचाकर तरुण भारत संघ सचमुच! आनंद महसूस कर रहा है।... साथ ही निश्चिंतता भी कि ऐसा समाज अपनी नदी को फिर कभी नहीं मरने देगा। जहाजवाली हमेशा बहती रहेगी। आभार !

राजेन्द्र सिंह
अध्यक्ष, तरुण भारत संघ

निवेदन

मेरी जवानी का बहुत सारा समय जहाजवाली नदी क्षेत्र की तमाम जल संरचनाओं के निर्माण में बीता है। इसी काम में मुझे मेरे जन्म लेने की सार्थकता महसूस होती है। इसी काम के लिए मैं तरुण भारत संघ से जुड़ा। हालांकि मुझे पहले से कोई समझ नहीं थी कि संस्था क्या है ? मैं क्या करूँगा ? क्यों करूँगा ? आदि... आदि। मैं तो सामान्य-सा काम मानकर ही इस काम में जुट गया था। काम करते-करते गांव के लोगों से अनुभव मिलता गया। अलग-अलग गांवों में काम करने पर अलग-अलग समस्याएं आती थीं जिन्हें लोग बड़ी सहजता से सुलझा लेते थे। इसे देखकर भी सीखने का अवसर मिला।

फिर तरुण भारत संघ में देशभर के अनेक विद्वान्, विचारक, बुद्धिजीवी, समाजसेवी, पर्यावरणविद् एवं वैज्ञानिकों आदि से भी समय-समय पर सम्पर्क होता ही था। प्रेरक व मार्गदर्शक विद्वानों की तो कमी कभी रही ही नहीं। बहुत सारे संघर्ष, आंदोलन व राष्ट्र निर्माण के कार्यों में शामिल रहने का भी अवसर मिलता रहा। समाज के काम में अन्तरात्मा से ओत-प्रोत होकर गुवाड़ा से लेकर टहला तक... सभी गांवों में कार्य करते रहने में मेरी आयु का कितना भाग बीत गया ! कभी ध्यान ही नहीं आया। यह सब संयोग ही तो है।

इस कार्य में शामिल रहते हुए लगता है कि लोकतंत्र की भावना के अनुरूप मैं देश की खुशहाली में अपना योगदान दे रहा हूं। मैं अनुभव से कहता हूं। यह एक सिद्धान्त की तरह है। जहां चरवाहा, किसान, पुजारी, व्यापारी व कामगार... सभी एक चौपाल पर बैठकर अपने गांव के हित का रास्ता खोजते हैं... वहां लाभ न हो, ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। मेरी जिन्दगी में कभी ऐसा अवसर नहीं आया; जब समस्या आई हो और समाधान न हुआ हो।

संस्था को अबाध गति से गतिमान रखने वाले श्री राजेन्द्र सिंह जी भाईसाहब के साथ मेरे जीवन के बीते क्षण मेरे मन-मानस में एक चलचित्र की भांति अंकित हैं। भाईसाहब के मार्गदर्शन में ही मैंने अलवर की कई नदियों के जलागम में पानी का काम करने हेतु लोगों को जोड़ने का काम किया है। इससे मेरे जीवन की कुशलता भी बढ़ी है।

मैं हमेशा चाहूंगा कि जहाजवाली नदी की माला बनी रहे। इसके जलागम क्षेत्र में बने तालाब इसके मोती बन इसे समृद्ध करते रहें। हमें हमेशा इनका संरक्षण व संवर्द्धन करना होगा। आवश्यकतानुसार नये-नये जोहड़ों का निर्माण भी करते रहना होगा। जहाजवाली नदी क्षेत्र में मेरे साथ सक्रिय लोगों का एक समूह था। इसमें गोवर्धनजी शर्मा, श्रवणजी शर्मा,

गोपाल सिंह जी, जगदीश पंडित जी, रामदयाल गुर्जर व सतीश शर्मा जी प्रमुख थे। ये ऐसे साथी रहे, जो किसी भी मोर्चे पर अपने लायक काम में कभी पीछे नहीं रहे। प्रातः चार बजे से रात बारह बजे तक काम करते रहने पर भी इन्हें थकान नहीं होती थी। सचमुच! इसमें आनन्द ही आता था। गांव के लोग आज भी हमें बहुत स्नेह देते हैं। मुझे गर्व होता है कि आज भी हमारे समाज में सेवाभाव, पारदर्शिता और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की समृद्धि मौजूद है।

सरकारी योजनाओं का क्रियावन्वयन करने वाले कहते हैं कि समाज सहयोग नहीं करता। यह सच नहीं है। सच यह है कि अच्छे काम के सहयोग में समाज कभी पीछे नहीं रहता। बशर्ते नीति व नीयत में खोट नहीं हो। आज अलवर के समाज के पसीने से ही जहाजवाली नदी सदानीरा बन सकी है। इसलिए इसका सब श्रेय यहां के समाज को ही जाता है। इन सब के पराक्रम को एक दस्तावेज के रूप में लिखकर मैं अगली पीढ़ी को सौंपना चाहता हूँ ; जिससे वे विरासत में मिले इस पुण्य कार्य को आगे बढ़ा सकें।

अग्रज सदृश श्री राजेन्द्र सिंह जी ने प्रेरणा दी। मेरे प्रिय व आदरणीय श्री गोपाल सिंह जी ने बार-बार पकड़कर मुझसे यह पुस्तक लिखवाई। जहां मैं रुका, वहां लिखने में सहयोग व सलाह दी। सामग्री संकलन में जहाजवाली नदी क्षेत्र के गांवों में बसे विद्वज्जनों के साथ-साथ सर्वश्री श्रवण शर्मा, रामदयाल गुर्जर, भगवान सहाय मीणा, महादेव शर्मा, देवयानी कुलकर्णी और विनोद कुमार का विशेष सहयोग रहा है। इसके अलावा मैं श्री अरुण तिवारी जी का भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को क्रमबद्ध व विषयानुसार लिखने हेतु मार्गदर्शन किया।

मैं लेखक नहीं हूँ। मैंने पहली बार कोई पुस्तक लिखी है। इसमें मैं कितना सफल रहा, यह तो आप ही तय करेंगे। आप सभी की प्रतिक्रिया... टिप्पणियों की प्रतीक्षा रहेगी।

जगदीश गुर्जर
गांव राड़ा (नाण्डू), राजगढ़
अलवर (राजस्थान)

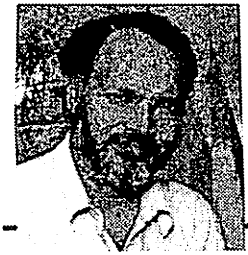

आह्वान

यह बात भारतीय परम्पराओं के अनुरूप ही है कि गांव के लोग अपनी व्यवस्था स्वयं सम्भालें। यह कथन पूर्णतः अनुभव पर आधारित है। अतीत में गांवों की अपनी न्याय व सुरक्षा व्यवस्था थी। आपसी सामंजस्य व मेल-मिलाप वाला ऐसा सामाजिक ढांचा था कि गांव के नागरिकों की मूल आवश्यकताएं आपस में ही पूर्ण हो जाती थीं। एक ही गांव में किसान, पुरोहित, व्यापारी, लुहार, कुम्हार, नाई, बुनकर, चर्मकार और दर्जी सभी आसानी से मिल जाते थे। भूमिधर काश्तकार होते थे। काश्तकारों के बाकी कामों को अपनी काश्तकारी मानकर कारीगर वर्ग अपना काम करता था। भूमिहीन होते हुए भी कारीगर वर्ग भूमि-खेती-बागवानी के सभी आनंद साधिकार पाता था। इसमें किसी की मेहरबानी नहीं; स्वयं हासिल हकदारी थी। समाज एक-दूसरे की जरूरतों की पूर्ति के जरिए एक-दूसरे से बंधा था। यह बंधन... आपसी प्रेम, आशा व सद्भाव का बंधन था।

अब क्या है? आज गांवों की हालत बहुत खस्ता है। सारे देश की अधिसंख्य जनता गांवों में बसी है। बावजूद इसके गांवों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शहर की ओर ताकना पड़ता है। मुनाफाखोर भी चाहते हैं कि ग्रामीण जन अधिक से अधिक शहरों पर ही आश्रित रहें जिससे कि उनकी उपभोक्ता वस्तुओं को बाजार मिले और मुनाफ़ा बढ़े। 'रूरल मार्केटिंग' - आज विपणन जगत में बड़ा आकर्षित करने वाला नारा व लक्ष्य बन गया है।

आज गांवों के स्वावलम्बन पर बहस होनी चाहिए। लेकिन बहस होती है, गांवों को शहर बनाने वाली योजनाओं के हक में। गांवों के उत्थान हेतु ऐसी योजनाएं बनाना आवश्यक है, जिनसे गांव वाले अपनी व्यवस्था को स्वयं सम्भाल सकें। सत्ता और न्याय का विकेन्द्रीकरण हो। ताकि ग्रामीण जनों को भी उनके उत्तरदायित्व का बोध हो। सरकारें सहयोग व प्रोत्साहन देने वाली भूमिका में हों। लेकिन सरकारें ऐसा चाहती कहाँ हैं? कब और कैसे चाहेंगी? यह चुनौती प्रश्न है। वे तो हर काम पर अपना कब्जा चाहती हैं। वे चाहती हैं कि सब जगह उन्हीं का डंडा चले। लोकतंत्र में भी तानाशाही बनी रहे। भ्रष्टाचार भी यही चाहता है।

दरअसल सरकारी नीतियां तथाकथित विकास की तृष्णा को बढ़ाने वाली हैं। योजनायें ऐसी हैं, जिनमें प्रकृति का इस हद तक दोहन होता है कि प्रकृति चीं बोल जाए। अकाल, भुखमरी, बेरोजगारी, प्राकृतिक असन्तुलन आदि संकट आता है, तो सरकार लूट का बाजार खोल देती है। राहत के नाम पर भ्रष्टाचार बंटता है। नतीजा ऋणात्मक रहता है। विरोधाभासी स्थिति

यह है कि व्यवस्था के संचालक यह बराबर कहते सुने जाते हैं कि देश स्वावलम्बी बने। जनता अपने काम स्वयं करे। लेकिन जब जनता काम को अपने हाथ में ले लेती है, तो सरकारें इन्हें सहन नहीं कर पाती। उन्हें अनधिकृत कह कर उनकी कमर तोड़ने की साजिश शुरू कर देती हैं। गांव में ऐसी प्रेरणा देने वालों को कई बार नक्सलवादी आदि कहकर भी उन्हें झूठे मुकद्दमों में फंसा दिया जाता है। ऐसे में जनता ठीक से कुछ समझ ही नहीं पाती कि सरकार की नीतियां क्या हैं ? वह चाहती क्या है? काम कैसे किया जाये ?

आज विकास के नाम पर विनाश का चक्र तेजी से चल रहा है। हमारी विकास योजनाओं से अमीरों की अमीरी और गरीबों की गरीबी का ही विकास हो रहा है। वह भी बेशकीमती प्राकृतिक संसाधनों व जनस्वावलम्बन की कीमत पर!

वास्तव में इस तथाकथित विकास की तृष्णा में प्रकृति तथा मानवता का ह्रास हो रहा है। यह विकास नहीं... आर्थिक विकास की ऐसी दौड़ है, जो जीत को ही नष्ट करने में जीत मानती है। यह कालिदासी कार्य है- जिस पर बैठे, उसी आधार को काटे। जब तक इसे रोका नहीं जायेगा, तब तक समग्र विकास की गंगा गांव के अन्तिम व्यक्ति तक नहीं पहुंच पायेगी। जब तक नीति-निर्धारण से लेकर क्रियान्वयन तक गांव के अन्तिम व्यक्ति की भागीदारी नहीं होगी और उसे जागृत कर उसकी इच्छानुसार काम करने का अवसर नहीं दिया जायेगा, तब तक न लोक शक्ति सुदृढ़ होगी और न ही स्वावलम्बन का रास्ता निकलेगा। जब ऐसा हो जायेगा, तभी गांव अपने विकास की गति तथा दिशा तय कर पायेंगे तथा स्वयं को स्वावलम्बी और स्वाभिमानी अनुभव करेंगे। तब विकास का असली चक्र स्वयं चल उठेगा।

जहाजवाली नदी क्षेत्र में ऐसी बहुत सारी प्राचीन कहावतें प्रचलित हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि न्याय प्रणाली से लेकर दैनिक उपयोग की वस्तुओं तक के लिए नदी क्षेत्र के लोगों को बाहर नहीं जाना पड़ता था। जहाज में वर्तमान में प्रचलित नीचली थाँईं व उपरली थाँईं से जाहिर होता है कि वहीं पर मामले का निस्तारण होता था। यही उनके ग्राम न्यायालय थे। सरकारी व्यवस्था यदि अपनी कथनी-करनी में सामंजस्य रखे, तो वर्तमान व्यवस्था स्वतः शोषणकारी आचरण से मुक्त होने लगेगी। विकास की मृगतृष्णा भी विकराल न होकर शांत हो जाएगी। समाज अपना रास्ता खुद तय कर लेगा। जहाजवाली के गांव इसी रास्ते पर चल निकले हैं। गंगा जल बिरादरी जहाज के पुनर्जीवन में गंगा पुनर्जीवन का रास्ता देखती है। भारत की तरक्की का भी यही रास्ता है। इसी से भारत के आसमान में स्वावलंबन का सूरज उगेगा। इसी से भारत के देव जागेंगे और देवउठनी ग्यारस शुभ होगी।

आइए! हम भी जहाज का समाज बनें।

अरुण तिवारी
संयोजक, गंगा जलबिरादरी

वंदना

ओऽम् जय जहाजवाली माता, मैया जय जहाजवाली माता।
जो नर तुमको ध्याता, निर्मल जल पाता।।

जजलि मुनि शरणस्थली, जो वैद्यक के ज्ञाता।
वेदांग-सार-तंत्र के, जो थे निर्माता।।

देवरी से चलकर तू, मंगलांसर आती।
वन्य जीव पशु पक्षी, कृषि को खूब भाती।।

सारे जोहड़ भर तू, धरती सरस करे।
है अन्न जल तुझ ही से, सब को समृद्ध करे।।

कलकल बहती रहती, सब का मन मोहती।
स्नान ध्यान कराकर, तू सबके अघ धोती।।

नारी नीर नारायण, तू अमृतधारा।
दुःखहारक फलदायक, तू मैया ओंकारा।।

तन मन धन सब अर्पण, चरणन में तेरे।
शरण सभी हम तेरी, शुभ जगदीश करे।।

ओऽम् जय जहाजवाली माता, मैया जय जहाजवाली माता।
जो नर तुमको ध्याता, स्वयं निर्मल हो जाता।।

(नदी को पोषक जानकर इसे मां मानना और इसकी वंदना करना..भारतीय समाज के प्रेम, आस्था व दायित्व को दर्शाता है। जहाज का समाज इसके विपरीत नहीं। उक्त वंदना इसी आस्था व दायित्व की अभिव्यक्ति है।)

जहाज का प्रवाह

देवरी से मंगलांसर तक

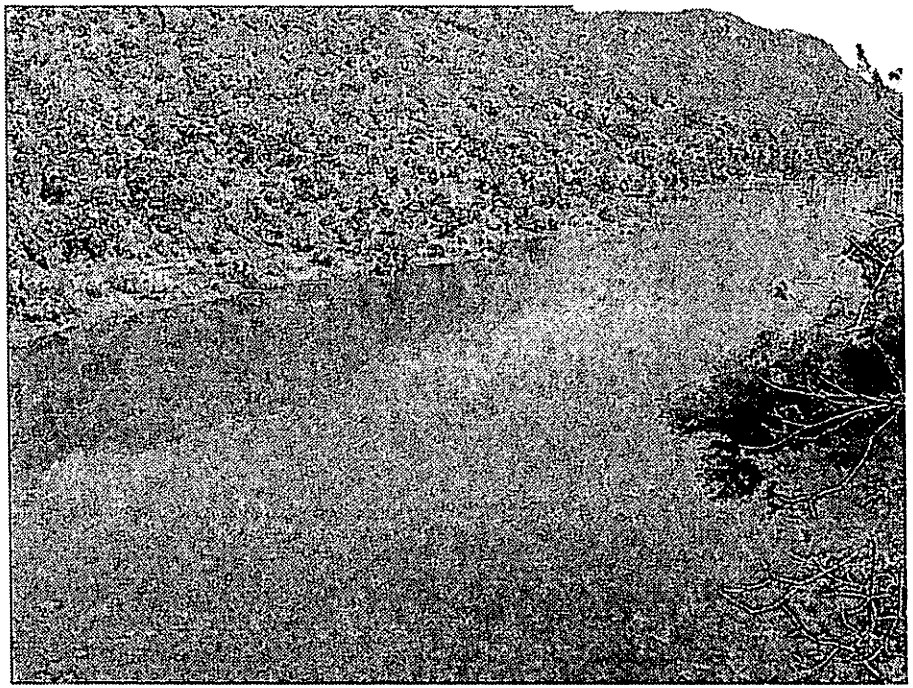

जहाजवाली नदी के जलागम क्षेत्र का आरम्भ राजस्थान के पूर्वोत्तर भाग में स्थित अलवर जिले की तहसील राजगढ़ से होता है। यहां देवरी व गुवाड़ा जैसे गांवों के जंगल इसके उद्गम को समृद्ध करते हैं। यह स्थान टहला कस्बे से 12 किलोमीटर पूर्वोत्तर में स्थित है। पूर्व से पश्चिम गुवाड़ा, बांकाळा और देवरी गांवों को पार कर जहाजवाली नदी जहाज नामक तीर्थस्थान के ऊपर तक आती है इसीलिए इसे जहाजवाली नदी कहते हैं। यह धारा आगे दक्षिण की तरफ घूमकर नीचे गिरती है। उस स्थान को दहड़ा कहते हैं। 'दह' ऐसे स्थान को कहते है, जहां हमेशा जल बना रहे। इसी गुण के कारण इस स्थान का नाम कभी 'दहड़ा' पड़ा होगा। दहड़ा से थोड़ा नीचे जहाज का मन्दिर भी है और झरना भी। इसी झरने से थोड़ा पहले एक और धारा पश्चिम से आकर जहाजवाली नदी में मिल जाती है। एक अन्य प्रमुख धारा राड़ा के जंगलों से कई

उपधाराओं को समेटती हुई राड़ा गांव के पूर्व स्थित नाण्डू गांव के जंगलों में आकर मिल जाती है। एक धारा घेवर व नायाला के उत्तर के जंगल से दक्षिण आकर मुरलीपुरा के पास जहाजवाली की मुख्य धारा में मिलती है। एक अन्य धारा लोसल गूजरान के पहाड़ों से बहती हुई चावा का बास व घेवर के बीच में आकर मुख्य नदी में मिल जाती है। कुछ नाले लोसल ब्राह्मणान और तालाब के पूर्वी जंगल से चलकर एकाकार होते हुए फिर टहला के पास मंगलांसर बांध में आकर मिल जाते हैं। इन्हीं धाराओं में एक और उपधारा तालाब गांव के दक्षिण से उत्तर की ओर आकर इसी गांव के तालाब को भरती है। तालाब के भर जाने के बाद यह उपधारा उक्त नालों में मिलकर जहाज की मुख्य धारा में मिल जाती है। रूपबास व राजडोली गांवों के उत्तर से दो धाराएं दक्षिण की ओर आकर टहला के खेतों में बने गूयल्या बांध में मिलती हैं। इस बांध का पानी अन्त में टहला के मंगलांसर बांध में आकर मिल जाता है।

मंगलांसर बांध के भर जाने के बाद इसका अतिरिक्त पानी मानसरोवर बांध के थोड़ा नीचे भगाणी नदी को समृद्ध करता है। इस संगम के नीचे भगाणी का नाम 'तिलदह' हो जाता है। तिलदह नदी.... तिलदह नामक तीर्थस्थान से गुजरती हुई आगे रेडिया के बांध में और फिर थोड़ी ही दूरी पर सरसा व अरवरी की संयुक्त धारा में मिल जाती है। इस त्रिवेणी संगम से आगे इन संयुक्त नदियों का एक ही नाम ''साँवाँ नदी'' हो जाता है। 'साँवाँ नदी' बांदीकुई से आगे बैजूपाड़ा में जाकर बाणगंगा में मिल जाती हैं। बाणगंगा को उतंगन (उटंगन) नदी के नाम से भी जाना जाता है। यूं बाणगंगा नाम ही अधिक प्रसिद्ध है। बाणगंगा उतंगन के नाम से आगे जाकर फतेहाबाद (आगरा) के निकट यमुना नदी में मिल जाती है। यमुना नदी प्रयाग (इलाहाबाद) में जाकर राष्ट्रीय नदी गंगा में मिल जाती है। गंगा आगे प. बंगाल में गंगासागर में मिलकर सागरस्वरूपा हो जाती है।

अलवरवासी कह सकते हैं कि उनकी जहाजवाली नदी गंगा को समृद्ध करती है। गंगावासी भले ही गंगा को शोषित व प्रदूषित बना रहे हों, लेकिन राजस्थान कम वर्षा व पानी के बावजूद बाण, बनास, चंबल आदि के जरिए गंगा को समृद्ध ही करता है।

अलवरवासी कह सकते हैं कि उनकी जहाजवाली नदी गंगा को समृद्ध करती है।

जहाजवाली नदी सरिस्का के बफर जोन में पड़ने वाली दूसरी महत्त्वपूर्ण नदी है। इस नदी का आधे से अधिक हिस्सा सरिस्का के कोर क्षेत्र में पड़ता है। सरकार ने जब सरिस्का को नेशनल पार्क घोषित किया था, तभी से इस क्षेत्र में जंगल और जंगली जानवरों के अलावा हर बसावट को नाजायज करार दिया गया। असलियत में इस तरह के नियम-कायदे आदमी और संवेदना के खिलाफ हैं। सरिस्का जोन में पड़ने वाले गांव के गांव इसी वजह से उपेक्षित हैं।

जहाजवाली नदी के जलग्रहण क्षेत्र में तीन गांव ऐसे आते हैं, जो सरिस्का के मुख्य कोर क्षेत्र में पड़ते हैं। गुवाड़ा, बांकाळा और देवरी। 1979 में यहां बाघ परियोजना की शुरुआत हुई। सरिस्का के 866 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को बफर और कोर... दो क्षेत्रों में बांटा गया। 498 वर्ग किलोमीटर कोर क्षेत्र में आया और 368 वर्ग किलोमीटर बफर क्षेत्र में आया। कोर क्षेत्र घोषित होने वाला इलाका 'रिजर्व फॉरेस्ट' कहलाया। कोर क्षेत्र को तीन भागों में बाँटा गया। पहला- 'मुख्य कोर क्षेत्र' और दूसरा व तीसरा- 'सेटेलाइट कोर क्षेत्र'। मुख्य कोर क्षेत्र 'राष्ट्रीय अभयारण्य' कहलाया। मुख्य कोर क्षेत्र में करीब दस गांव-गुवाड़े आये। जहाजवाली नदी के जलग्रहण क्षेत्र में आने वाले गुवाड़ा, बांकाळा और देवरी गांव भी इनमें शामिल हैं। जहाजवाली नदी का ज्यादातर जलागम क्षेत्र सरिस्का के कोर में ही है। अतः जंगल और जहाज का गहरा रिश्ता है। यहां की दोमट मिट्टी भी जंगल के अनुकूल है।

यूँ दुनिया के नक्शे पर देखें, तो जहाजवाली नदी जलागम क्षेत्र 27 डिग्री, 11 मिनट, 39 सेकण्ड उत्तरी अक्षांश से 27 डिग्री, 18 मिनट, 21 सेकण्ड उत्तरी अक्षांश तथा 76 डिग्री, 24 मिनट, 15 सेकण्ड पूर्वी देशांतर से 76 डिग्री, 31 मिनट, 20 सेकण्ड पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका जलागम क्षेत्र 89 वर्ग किलोमीटर है। नदी की लम्बाई लगभग 20 किलोमीटर है। लम्बाई की दृष्टि से जहाजवाली छोटी नदी है, लेकिन सरिस्का की दृष्टि से इसका महत्व अमूल्य है। जहाजवाली नदी जलागम क्षेत्र में सन् 1985 से मार्च, 2009 तक तरुण भारत संघ द्वारा जन सहभागिता से कुल 122 जल-संरचनाओं का निर्माण हुआ है। इन्हीं संरचनाओं ने जहाजवाली नदी का भूगोल पानीदार बनाया है। क्या पुस्तक लिखने के लिए यह एक वजह काफी नहीं है ?

लम्बाई की दृष्टि से जहाजवाली छोटी नदी है,
लेकिन सरिस्का की दृष्टि से इसका महत्व अमूल्य है।

जहाज का जलागम

उजड़ते-बसते तट

जहाजवाली नदी के जलागम में जहाज नामक स्थान की खास महत्ता है। इस स्थान पर एक अखण्ड झरना है। यह झरना अमृतधारा की भांति है। स्वच्छ और निर्मल प्रवाह का स्रोत! यहाँ पर हनुमान जी का एक मन्दिर है।

नामकरण- कहते हैं कि पौराणिक काल में यहाँ जाजलि ऋषि ने तपस्या की थी। जाजलि ऋषि बड़े विद्वान और वेद-वेदांगों के ज्ञाता तो थे ही, वह आयुर्वेद के सोलह प्रमुख विशेषज्ञों में से भी एक थे।

धन्वन्तरिर्दिवोदासः काशिराजोऽश्विनी सुतौ। नकुलः सहदेवार्की च्यवनों जनको बुधः।।
जाबलो जाजलिः पैलः करभोऽगस्त्य एवं चऽएते वेदा वेदज्ञाः षोडश व्याधिनाशकाः।।

अर्थात् धन्वन्तरि, दिवोदास, काशिराज, दोनों अश्विनी कुमार, नकुल, सहदेव, सूर्यपुत्र यम, च्यवन, जनक, बुध, जाबाल, जाजलि, पैल, करभ और अगस्त्य-ये सोलह विद्वान् वेद-वेदांगों के ज्ञाता तथा रोगों के नाशक वैद्य हैं।

(स्रोतः ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्मखण्ड, अध्याय 16, श्लोक)

जाजलि मुनि ने आयुर्वेद संहिता के अन्तर्गत स्वतंत्र रूप से 'वेदाङ्ग सार तंत्र' की रचना भी की थी। बहुत संभव है कि इस तंत्र की रचना वर्तमान 'जहाज' नामक स्थान पर ही की गई हो। यह विस्तृत जंगल आयुर्वेदिक औषधियों के लिए सदैव प्रसिद्ध रहा है। जाजलि ऋषि के नाम पर ही इस स्थान का नाम अपभ्रंश होते-होते जाजलि से जाजली, जाजल, जाज, ज्हाज और अंत में जहाज हो गया। जहाज के नामकरण की यही संदर्भ कथा मौजूद है।

थाँईं का डंका- जहाज के वर्तमान कुण्ड व हनुमान जी के मंदिर के पश्चिमोत्तर में ऊपर दो थाँईं हैं। पहली बड़ी थाँई और दूसरी छोटी थाँईं के नाम से जानी जाती हैं। कहते हैं कि लगभग 300 वर्ष पूर्व तक यहां सामाजिक पंचायतों का मजबूत ढाँचा मौजूद था। तब दोनों थांईं बैठक की केंद्र थीं। किसी भी सूचना के लिए बड़ी थाँईं पर ढोल बजता था। ढोल की आवाज सुनकर गांवों के लोग यहां एकत्रित हो जाते थे।

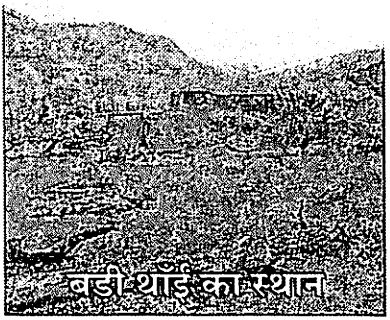

300 वर्ष पूर्व तक यहां सामाजिक पंचायतों का मजबूत ढाँचा मौजूद था। छोटी थाँईं पर छोटी और बड़ी थाँईं पर बड़ी पंचायत होती थी।

छोटी थाँईं पर छोटी पंचायत और बड़ी थाँईं पर बड़ी पंचायत होती थी। बड़ी पंचायत तभी होती थी, जब किसी विषय पर अन्तिम निर्णय करना होता था। समाज की कितनी अच्छी व्यवस्था थी! धीरे-धीरे यह परम्परा खत्म हो गई। इसीलिए थाँईं की ज़गह का भी उपयोग नहीं रहा। थाँईं के स्थान पर अभी कुछ वर्षो पूर्व एक महात्मा जी की कुटिया थी। उनके चले जाने के बाद से अब थांईं की जगह वन-विभाग के लोगों को भा गई है। अब उन्हीं का कब्जा है।

धूणी रमाते तट- जाजलि ऋषि के बाद यहाँ समय-समय पर अनेक संत-महात्माओं के आने-जाने के किस्से आप गांव वालों से सुन सकते हैं। यह स्थान धूणी रमाने वालों को हमेशा ही प्रिय रहा। बुजुर्गो के अनुसार 70-80 साल पहले यहाँ एक मुस्लिम फकीर आये थे। उनके बाद यहाँ एक हिन्दू बाबाजी आये। उन्हें लोग "आड़-बंध वाले बाबा जी" के नाम से जानते थे। वे घूमते रहते थे। वह कभी-कभी ही यहाँ पर आते थे। उन्हीं के समय में घम्मननाथ नामक एक बाबा भी यहाँ आये। इनके बाद बालकनाथ बाबाजी आये। उनके पास कभी-कभी कल्लूदास बाबाजी आते थे। फिर जगन्नाथदास जी आये। उनके पास जवाहरदास जी भी रहते थे। बाबा जगन्नाथदास जी के जाने के बाद सन् 1985-86 के लगभग यहाँ पर मल्लादास बाबाजी आये। इनके समय में इस स्थान पर काफी चहल-पहल रहती थी। मल्ला बाबा अलीपुर-हिंगोटा के रहने वाले थे। कहते हैं कि मल्ला बाबा जी प्रतिदिन जानवरों व पक्षियों को लगभग दो-ढाई मन अनाज खिलाते थे। यहाँ आने वाले सैकड़ों भक्तों-श्रद्धालुओं को प्रतिदिन दाल-बाटी का प्रसाद बाँटा जाता था। यह भी कहते हैं कि उनके आश्रम के नीचे बना गोदाम अनाज से भरा रहता था। इस कार्य में चावा का बास के सरपंच लक्ष्मीनारायण शर्मा (मास्टर जी) का बड़ा योगदान रहता था। वह मल्ला बाबा के प्रिय भक्तों में से एक थे।

उल्लेखनीय है कि जहाजवाला बांध के लिए मल्ला बाबा ने ही श्रमदान के रूप में 50 कट्टे सीमेंट व बीस हजार रुपये नकद का सहयोग दिया था। इसे दहड़ा वाला बांध भी

कहते हैं। यही नहीं, गांवों के लोगों का सहयोग भी मल्ला बाबा की प्रेरणा से ही मिल पाया था। वर्ष 2000 में मल्ला बाबा के स्वर्ग सिधार जाने के बाद उनके स्थान पर उनके शिष्य टेड्यादास जी बैठे। वह वर्तमान में ऊपर वाले आश्रम में विराजते हैं। नीचे वाले पुराने स्थान पर अब छोटादास जी महाराज का निवास है।

यूं इस स्थान पर प्राचीन काल से ही एक झरना बहता रहा है। वही आकर्षण का केन्द्र रहा होगा। लेकिन बीच के दौर में जंगल कम हुए। लगातार अकाल पड़ा। मानव-हस्तक्षेप के कारण भी वर्ष 1984-85 से इस झरने का बहना कम हो गया। इसी ने लोगों का ध्यान खींचा। इसी के लिए गांव, मल्ला बाबा व तरुण भारत संघ के संयुक्त सहयोग से जहाजवाला बांध बना। अब यह पुनः बहना शुरू हो गया है। असलियत में यही झरना है जो कि आज जहाजवाली नदी को सदानीरा बनाये हुए है।

ऊमरी देवरी : सारी दुनिया यहीं समाई- विश्वास नहीं होता लेकिन कहते हैं कि आज का देवरी प्राचीन काल में बहुत बड़ा नगर था। इसकी उत्तरी पहाड़ी के उत्तर में बसे गांव ऊमरी के बारे में भी यही कहते हैं। आस-पास के लोग सभी आवश्यक सामान के लिए ऊमरी-देवरी आते थे। यह माना जाता है कि इन दोनों गांवों के वैवाहिक सम्बन्ध आपस में ही हो जाते थे। शायद तभी एक कहावत यहां प्रचलित है :

ऊमरी की बेटी, देवरी में ब्याही,
सासरै गई न बहू कहाई।
बेटी कहै बाप सूँ बाबुल,
सारी दुनिया यहीं समाई ।।

पता नहीं, ऊमरी-देवरी में बेटी ब्याह की कहावत पहले की है या बाद की। पर सच है कि ऊमरी को हजारों साल पहले उम्मरगढ़ के नाम से जाना जाता था। कालांतर में उम्मरगढ किसी कारण नष्ट हो गया। ऐसा ही देवरी नगर के साथ भी हुआ। समय बीता। नगर की जगह विशाल जंगल आबाद हो गया। कालांतर में ये स्थान पुनः धीरे-धीरे बसे। देवरी गांव में भाभला गोत्र के मीणा आकर बस गये। पर जाने क्यों बाद में उनकी संख्या धीरे-धीरे कम होती चली गई। सन् 1933 में इस गोत्र का एकमात्र सदस्य दल्ला पटेल ही बचा था। वह प्रभात पटेल को अलवर से गोद लेकर यहाँ आया। प्रभात पटेल अलवर के छुट्टनलाल कप्तान के साथ रियासती फौज में कैंटीन आदि की व्यवस्था सम्भालते थे।

भाभला छावड़ी भैंभाई- किंवदंती है कि सन् 1594 में देवरी गांव में भाभला गोत्र के मीणाओं की बस्ती थी। उसी दौर में लूणपुर की जोहड़ी (वर्तमान में धमरेड़ गांव)

नामक गांव से छावड़ी गोत्र का गुर्जर यहां आया। जेठ-आषाढ़ का महीना था। लूणपुर व देवरी की सीमा पर वह अपनी गायें चराने आया था। उसके पास बहुत सारी गायें थीं। उनमें एक बिणजार (सांड) भी था। भाभला गोत्र का एक मीणा अपने खेत में हल चला रहा था। उधर छावड़ी गोत्र के गुर्जर की गायें प्यासी थीं। गायें प्यास से बेहाल होकर देवरी के जुवारा वाला जोहड़ की तरफ दौड़ पड़ी। वह गुर्जर बार-बार उन्हें रोक रहा था। वह प्यासी गायों की मजबूरी को भी समझता था और अपने बिणजार की प्रवृत्ति को भी जानता था। वह जानता था कि यदि गायें नीचे उतरीं, तो उसका बिणजार भी नीचे उतरकर हल में चल रहे बैलों पर हमला कर सकता था। उसकी विवशता व पानी के लिए बेचैनी को देख हल चला रहे मीणा ने कहा- ''गायों को नीचे ले आओ और जुवारा वाले जोहड़ से उन्हें पानी पिला दो।'' इस पर पशुपालक गुर्जर ने कहा -मेरा बिणजार मरखना है। वह आपके बैलों को मार सकता है। इसीलिए मैं वहां नहीं आ रहा। प्रत्युत्तर में किसान बोला -भाई ! बिणजार और बैल ही तो लड़ेंगे, हम तो नहीं लड़ेंगे। तुम गायों को ले आओ और उन्हें पानी पिला लो। बिणजार के डर से गायों को प्यासा क्यों मार रहे हो ? तब वह गुर्जर गायों को नीचे उतारकर जुवारा वाले जोहड़ पर पानी पिलाने ले आया। उसका नीचे उतरना था कि पास में ही हल में चल रहे बैलों पर बिणजार ने हमला बोल दिया। देखते ही देखते बिणजार ने हल में जुते एक बैल को जान से मार दिया। बैल के मर जाने से पशुपालक गुर्जर दुःखी हुआ। उसने अपने एक तगड़े से बछड़े को नाथकर उस किसान मीणा को दे दिया। भाभला मीणा छावड़ी गोत्र के गुर्जर के इस बर्ताव से बहुत प्रभावित हुआ। उस मीणा ने उस गुर्जर को 'भैंभाई' बना लिया।

भैंभाई वे कहलाते हैं जो अपनी दोनों की सम्पूर्ण सम्पत्ति को एक जगह करके सगे भाई की तरह आपस में बराबर बांट लेते हैं। गुवाड़ा गांव के नामकरण के पीछे यही किंवदन्ती है।

भैंभाई वे कहलाते हैं जो अपनी दोनों की सम्पूर्ण सम्पत्ति को एक जगह करके सगे भाई की तरह आपस में बराबर बांट लेते हैं। भाभला गोत्र के मीणा किसान ने छावड़ी गोत्र के गुर्जर को अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति में बराबर का हिस्सेदार बना लिया। इतना ही नहीं, उसे गायों समेत वहीं बसा लिया।

गुवाड़ा गांव के नामकरण के पीछे यही किंवदन्ती है। जहां छावड़ी गोत्र का वह गुर्जर बसा, वह जगह 'गुवाड़ा' कहलाई। इस गुवाड़े में बाद में चेची, देवतवाल, लांगड़ी,

कसाणा व दड़गस गोत्र के गुर्जर भी आकर बस गये। इसी गुवाड़ा में से चेची गोत्र के गुर्जरों ने सन् 1950 में बांकाळा कुआं व वहां की जमीन खरीद ली। वहीं रहने लगे। जहां वे बसे, वह गांव 'बांकाळा' कहलाया।

ऐसा ही देवरी में हुआ। देवरी में भाभला गोत्र के मीणाओं के बाद ब्याडवाल, उसार्रा और कंवाल्या गोत्र के मीणा भी धीरे-धीरे आकर बस गये। गुवाड़ा के भगवान सहाय गुर्जर बताते हैं कि किसी जमाने में उक्त इन तीनों गांवों में मीणा व गुर्जरों के भानजों के ही लगभग 360 हल चला करते थे। यह गांव काफी बड़ा व कृषि सम्पन्न गांव था। बांध बनाकर वर्षा के पानी को रोकने की पारम्परिक व्यवस्था यहां काफी पहले से थी। हालांकि बाद में अधिकांश का तो अस्तित्व ही खत्म हो गया। पुराने जोहड़ों में से मात्र 'जुवारा वाला जोहड़' व 'लुहारी वाला जोहड़' आदि ही बचे थे। इसी बीच तरुण भारत संघ ने दस्तक दी। अब इन तीनों गांवों में 25 जोहड़-बांध बन गये हैं। इनमें से चार जोहड़ों का पानी रूपारेल नदी में, एक जोहड़ का पानी पलासान नदी में और 20 जोहड़ों का पानी जहाजवाली नदी को सीधे समृद्ध करता है।

देवरी का मन्दिर- देवरी में एक प्राचीन मंदिर है। इसकी पूजा आदि व्यवस्था के लिए जमीन भी है। कहते हैं कि अलवर के महाराजा बख्तावर सिंह जी ने इस मंदिर का निर्माण कराया था। किसी समय इस मंदिर में डाँगरवाड़ा के एक सरल चित्त ब्राह्मण पुजारी रहते थे। उन्हें लेकर एक दिलचस्प प्रसंग यहां चर्चित है।

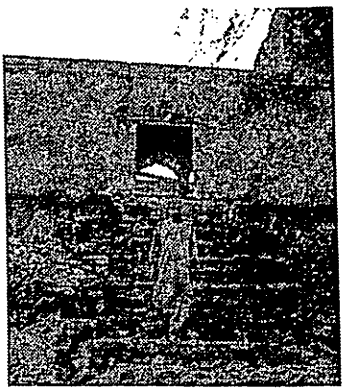

पुजारी जी पढ़े-लिखे ज्यादा नहीं थे, पर बुद्धिमान बहुत थे। उनके पास पंचांग आदि की व्यवस्था तो नहीं थी, लेकिन उन्होंने भारतीय तिथियों और वारों को जानने के लिए एक व्यवस्था बना रखी थी। उनके पास पन्द्रह पंख मोर के और सात पंख मोरनी के थे। उन्हें वह मंदिर के अंदर किसी जगह पर रखते थे। पड़वा को मोर का एक पंख, दूज को दो पंख, तीज को तीन पंख और इसी क्रम में पूर्णिमा को पन्द्रह पंख किसी नियत स्थान पर रखते जाते थे। उन्हें गिनकर ही वे गांव वालों को तिथि बता देते थे। वार के लिए मोरनी के सात पंख थे। वे उन्हें क्रम से रखकर सोमवार, मंगलवार, बुधवार आदि के बारे में जानकारी कर लेते थे। एक बार आंधी आने से अथवा किसी के हस्तक्षेप से

सभी पंख आपस में मिल गए। उसी दिन किसी ने उनसे तिथि और वार की जानकारी लेनी चाही। वह रोज की तरह मंदिर के अन्दर गये। उन्होंने वहां सभी पंखों को मिले हुए पाया। बहुत देर बाद वह बाहर निकले! सोचते हुए यूं ही बोले- आज तो 'घमरोल तिथि' और 'घसलवार' है। आगंतुक ने उनसे पूछा कि पंडित जी! घमरोल तिथि और घसलवार क्या होता है ? पंडित जी क्या जवाब देते! सच्चाई बता दी- ''क्या बताऊं ? आज तो तिथि और वार उड़कर सब एक जगह हो गये हैं। इसी को 'घमरोल तिथि' और 'घसलवार' कहते हैं।'' वहां मौजूद लोगों ने जब वस्तुस्थिति समझी, तो सभी हँसने लगे। यह प्रसंग याद कर आज भी देवरी के लोग मुस्कुरा उठते हैं।

रूपनाथ जी का मंदिर- बांकाळा गांव के सामने दक्षिणी पहाड़ी पर एक प्राचीन मंदिर है। रूपनाथ जी का मंदिर! माना जाता है कि रूपनाथ जी बगड़ावतों के गुरु थे। बगड़ावत लगभग एक हजार वर्ष पूर्व हुए थे। रूपनाथ जी की यह पहाड़ी देशभर के श्रद्धालुओं में ''बांका डूंगरा'' के नाम से जानी जाती है क्योंकि डूंगर इसी जगह पर आकर बांका हो गया है। 'डूंगर' यानी पहाड़ और 'बांका' यानी टेढ़ा। इसी कारण नीचे उत्तर में एक कुएं का भी नाम बांकाळा कुआं है। इसके पास बस जाने के कारण निकट गांव का नाम भी बांकाळा पड़ गया।

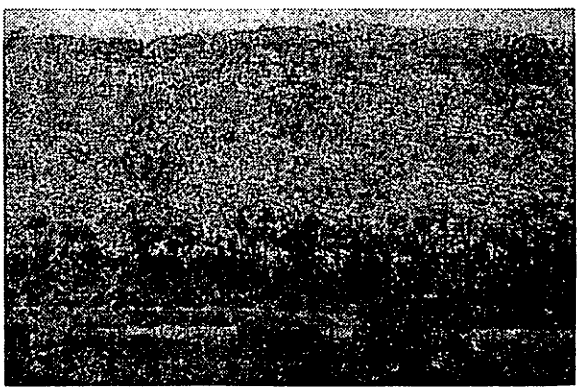

रूपनाथ जी का मंदिर पूरे भारत में केवल यहीं पर है। स्थानीय सभी जातियों के लोगों के अलावा पारीक, पुरोहित, नायक और रैबारी लोग यहां ज्यादा आते हैं। राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और जम्मू व कश्मीर तक से लोग यहां आते हैं। यहां पर पहाड़ के ऊपर ही तरुण भारत संघ व स्थानीय लोगों ने पानी के टांके और जोहड़ का निर्माण किया है।

नाण्डी से नाण्डू- देवरी गांव के दक्षिण में पहाड़ी को पार करते ही राड़ा गांव आता है। राड़ा गांव, नाण्डू गांव की ही एक ढाणी है। नाण्डू गांव किसी जमाने में बड़गुर्जर राजपूतों का गांव था। इस गांव के पूर्वोत्तर में थोड़ी ही दूर पर गोवर्धनपुरा नाम का एक

गांव कभी था। गोवर्धनपुरा वर्तमान में गैर आबाद है। गोवर्धनपुरा में देवनारायण जी की एक पाट मिली है। 'पाट'... पूजा का स्थान होता है। इससे यह भी लगता है कि यहां पर बड़गुर्जरों के साथ ही गुर्जर भी रहे होंगे। उल्लेखनीय है कि देवनारायण जी के मंदिरों की स्थापना अक्सर गुर्जर बाहुल्य क्षेत्रों में ही होती थी। बड़गुर्जरों ने पुरोहिताई के लिए डाँगरवाड़ा के ब्राह्मणों को बुलाया था। डाँगरवाड़ा से आये ब्राह्मणों को यहां की जमीन का पूरा रकबा मिल गया था। यहां के बड़गुर्जर राजपूत कैसे नष्ट हुए ?... या कैसे... कहां गये ? इसका अभी पता नहीं है। खोज करने की जरूरत है।

यहां पर घोड़ों के पुराने ठाण से देवी की एक प्रतिमा मिली है। मान्यता है कि यह देवी गांव के पशुधन आदि की सुरक्षा करती थी। किस्सा है कि बड़गुर्जरों के काल में एक बार किसी की भैंसों को चोर ले गये। देवी ने आभास कराया-आपकी भैंसें इस समय 'सीम के नले' में हैं। यह जानकारी मिलने पर तुरन्त कुछ लोग वहां गये। भैंसें मिल गईं।

गांव में एक पुरानी बावड़ी है जो अब मलबे आदि से भरती जा रही है। बावड़ी में तीन कमरे हैं। राड़ी गांव के पूर्वोत्तर में 'पुराना नाण्डू की जोहड़ी' नाम से एक जोहड़ी है। इसके उत्तर में पुराना नाण्डू की बसावट के अवशेष आज भी दिखाई देते हैं। प्रारम्भ में जब बड़गुर्जर यहां आये थे, तब किसी ने इस जोहड़ी को 'नाण्डी' नाम से संबोधित किया था। इसी नाण्डी के पास बस जाने के कारण इस गांव का नाम पहले नाण्डी हुआ और अपभ्रंश होते-होते अब नाण्डू हो गया है। नाण्डू क्षेत्र में छह धार्मिक स्थान हैं। जहाज में हनुमान जी का मंदिर, बांसरोल में भोमिया बाबा का स्थान, सोना में सिद्ध बाबा, नाण्डू के ऊपर देवी जी का मंदिर तथा दो मंदिर ठाकुर जी के हैं। ठाकुर जी का एक मन्दिर बणियों का बनाया हुआ है। इसमें अब मूर्ति नहीं है। दूसरे मंदिर में ठाकुर जी (सीताराम जी) की मूर्ति विद्यमान है। इस मंदिर के नाम वर्तमान में नौ बीघा जमीन है।

नाण्डू गांव के अन्तर्गत ही एक ढाणी 'राड़ी' है। किसी समय यहां पर मोडा नाम से प्रख्यात ब्राह्मणों के ऊंट बैठते थे। इसीलिए यह 'मोडान की राड़ी' भी कहलाती है। नाण्डू गांव के अन्तर्गत ही दूसरी ढाणी 'कैरवाड़ा' है। इसमें दूसरे गांवों से आकर कुछ गुर्जर बस गए। जाहिर है कि इस इलाके में एक गांव से दूसरे गांव, दूसरे गांव से तीसरे गांव बसने का सिलसिला आम रहा है।

वर्तमान में नाण्डू गांव के हर परिवार के पास लगभग छः-सात भैंसें हैं। पहले भैंसें ज्यादा थीं। यूं यदि बहुत पहले की बात करें, तो उस समय गायें ही ज्यादा होती थीं। 40 वर्ष पूर्व नाण्डू के लक्ष्मण जी शर्मा के यहां प्रतिदिन एक पीपा घी निकलता था।

लक्ष्मण शर्मा बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे। अलवर महाराज जयसिंह जी जब भी यहां आते थे, तो इनके यहां अवश्य आते थे। नाण्डू को आज भी अतिथि सत्कार तथा घी-दूध के लिए विशेष रूप से जाना जाता है।

तालाब गांव: कुँवर बाई की नींव पर- जनश्रुति के अनुसार तालाब गांव लगभग 1300 वर्ष पूर्व वर्तमान जगह पर बसा था। इससे पहले यह गांव इसी गांव के तालाब के दक्षिण में 'रामबास रम्माणा' के नाम से बसा हुआ था। वहां का राजा 'मैण' था। वह बड़गूर्जर राजपूत था। यह काल आज से लगभग 1700 वर्ष पूर्व का माना जाता है। राजा के एक बेटा और एक बेटी थी। राजा मैण की तमन्ना थी कि वह एक तालाब अपने गांव रामबास रम्माणा के उत्तर में और एक तालाब पश्चिम में बनाये। दोनों तालाब बने भी, पर वे दोनों ही टूट गये। दोबारा बनाने पर भी फिर टूट गये। इस प्रकार उस ने सात बार तालाब बनाये, पर सातों बार वे टूट गये। राजा बहुत निराश हुआ। तब किसी ज्योतिषी या तान्त्रिक ने कहा - राजा ! आप उत्तर दिशा वाले तालाब पर अपने बेटे की बलि दें और पश्चिम वाले तालाब पर अपनी बेटी की बलि दें, तो ये तालाब टूटने से बच सकते हैं। कहते हैं कि राजा ने रामबास रम्माणा के उत्तर में बनाये जा रहे तालाब में अपने बेटे की बलि तो दे दी, पर पश्चिम वाले तालाब में वह अपनी बेटी की बलि नहीं दे सका। इसलिए रामबास रम्माणा के उत्तर की तरफ वाला तालाब तो बच गया, पर पश्चिम का तालाब टूट गया। जिस तालाब में राजा ने अपने कुँवर (बेटे) की बलि दी थी, वह तालाब 'कुँवर जी का तालाब' कहलाता है। उस कुँवर को लोग आज 'जल श्री भोमिया जी' के नाम से पूजते हैं। रामबास रम्माणा के लोग इसी तालाब के उत्तरी किनारे पर बस गये। यह बस्ती ही आज 'तालाब' गांव के नाम से जानी जाती है। जिस तालाब में राजा को अपनी बेटी की बलि देनी थी, उसे लोग आज 'बाई जी का तालाब' के नाम से जानते हैं। यह तालाब आज भी टूटा हुआ ही है। 'कुँवर जी का तालाब' हमेशा पानी से भरा रहता है। ऐसी कई कहानियों व किंवदंतियों में उजड़ता-बसता रहा है जहाजवाली नदी जलागम का **अतीत!**

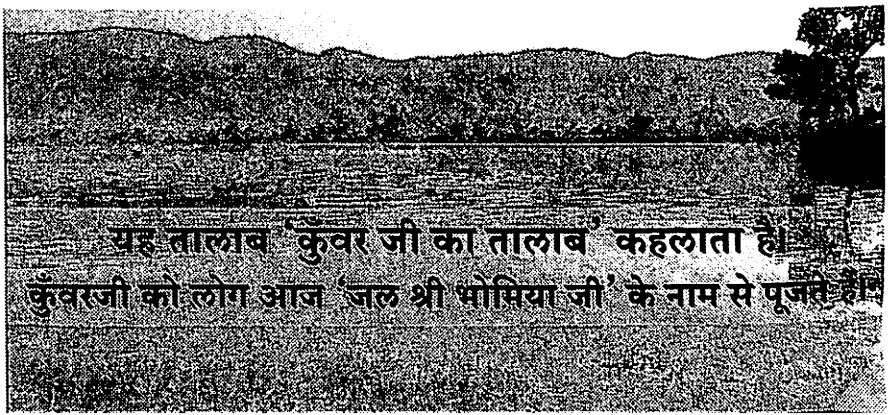

यह तालाब 'कुँवर जी का तालाब' कहलाता है।
कुँवरजी को लोग आज 'जल श्री भोमिया जी' के नाम से पूजते हैं।

कैसे सूखी नदी ?

अपने प्रवाह क्षेत्र के उजड़ने- बसने के अतीत की भाँति जहाजवाली नदी की जिन्दगी में भी कभी उजाड़ व सूखा आया था। आपके मन में सवाल उठ सकता है कि आखिर एक शानदार झरने के बावजूद कैसे सूखी जहाजवाली नदी ? तरुण भारत संघ जब अलवर में काम करने आया था... तो सूखे कुओं, नदियों व जोहड़ों को देखकर उसके मन में भी यही सवाल उठा था। इस सवाल का जवाब कभी बाबा मांगू पटेल, कभी धन्ना गुर्जर... तो कभी परता गुर्जर जैसे अनुभवी लोगों ने दिया। प्रस्तुत कथन जहाजवाली नदी जलागम क्षेत्र के ही एक गांव घेवर के रामजीलाल चौबे का है।

चौबे जी कहते हैं कि पहले जंगल में पेड़ों के बीच में मिट्टी और पत्थरों के प्राकृतिक टक बने हुए थे। अच्छा जंगल था। बरसात का पानी पेड़ों में रिसता था। ये पेड़ और छोटी-छोटी वनस्पतियां नदी में धीरे-धीरे पानी छोड़ते थे। इससे मिट्टी कटती नहीं थी। झरने बहते रहते थे। याद रहे कि बहते हुए झरनों के पानी से ही ऐसी नदी बनती है और उसका प्रवाह बना रहता है। पहले लोगों में पेड़ बचाने की परम्परा थी। लोग पेड़ नहीं काटते थे। हर एक गोत्र का एक पेड़ होता था। इसे धराड़ी कहते हैं। धराड़ी यानी धरोहर। हर आदमी अपने गोत्र के धराड़ी वाले पेड़ को जान देकर भी बचाता था।

अंग्रेजों के जमाने से यह परम्परा टूटनी शुरू हुई। जंगल समाज के हाथ से निकल कर जंगलात का हो गया। जंगलात यानी वन विभाग ने ऐसे कानून बनाए, ताकि जंगल सरकार के कब्जे में आ जाए। इस तरह जंगल व जंगलवासियों के बीच में कानून रोड़ा बन गए। जंगलवासियों के लिए जंगल पराये हो गए। जंगल पराया होते ही अतृप्त मन में लालच आया। साथ ही आई बेईमानी। बेईमानी ने धीरे-धीरे जंगल काटे। घास सूख गयी। मिट्टी का कटाव बढ़ गया। वनस्पति रहित जगह पर अधिक बरसात होने से मिट्टी कटने लगी। पानी भी धरती के पेट में न बैठकर धरती के ऊपर दौड़ लगाने लगा। फिर पानी कैसे रिसे ? झरने कैसे बनें ? धरती का पेट कैसे भरे? धरती भूखी रहने लगी। नतीजन झरने बहने बन्द हो गए। ऊपर झरने सूखे और नीचे धरती। तब नदी को तो सूखना ही था। धीरे-धीरे नदी भी सूख गई। आप देशभर में कई किस्से सुन सकते हैं- "अरे बाबा के जमाने में तो फलां नदी खूब बहती थी। दहाड़ मारती थी। पर आज नदी नहीं, नाला बन गई है।" ऐसे ही एक दिन जहाजवाली भी सूख गई थी।

ऐसे ही सूखती हैं नदियां! इन्हें इन्सान ही सुखाता है।

भारत के गंवई ज्ञान ने तरुण भारत संघ को इतना तो सिखा ही दिया था कि जंगलों को बचाए बगैर जहाजवाली नदी जी नहीं सकती। लेकिन तरुण भारत संघ यह कभी नहीं जानता था कि पीने और खेतों के लिए छोटे-छोटे कटोरों में रोक व बचाकर रखा पानी, रोपे गए पौधे व बिखेरे गए बीज एक दिन पूरी नदी को ही जिन्दा कर देंगे। जहाजवाली नदी के इलाके में भी तरुण भारत संघ पानी का काम करने ही आया था, लेकिन यहां आते ही पहले न तो जंगल संवर्द्धन का काम हुआ और न पानी सँजोने का। यहां तो जंगलात और जंगलवासियों के बीच एक दूसरी ही जंग छिड़ी थी।... जंगल पर हकदारी की जंग! इसीलिए जहाजवाली नदी क्षेत्र में संघर्ष पहले हुआ, रचना बाद में। इसीलिए जहाजवाली नदी के पुनर्जीवन का चित्र रखते वक्त हम आपको संघर्ष से पहले रूबरू करा रहे हैं... और रचना से बाद में। यूं भी यहां संघर्ष ने एकजुटता के लिए जरूरी माहौल बनाने का अच्छा ही काम किया।

यूं जी जहाजवाली

संघर्ष से शुरुआत

य ह सच है कि 1985 में जब तरुण भारत संघ इस इलाके में आया, तब तक जंगल जंगलात के हो चुके थे और जंगलात की नजर में जंगलवासी नाजायज। लेकिन यह भी सच है कि सरिस्का 'अभयारण्य क्षेत्र' बाद में घोषित हुआ और इसके भीतर बसी इंसानी बसावट सदियों पुरानी है। इसे भी झुठलाना मुश्किल है कि जंगल को जंगलात से ज्यादा जंगलवासी प्यार करते हैं। लोग भले ही इन्हें जंगली कहते हों, लेकिन जंगल को जंगलात से ज्यादा जंगलवासियों ने ही संजोया। बावजूद इसके यदि जंगलवासियों को जंगल से दूर करने की कोशिश हो रही है, तो यह सही है या गलत? आप तय करें।

हम तो यही जानते हैं कि जंगल जंगलवासियों की जन्मभूमि है। इन्हें अपनी जन्मभूमि से अत्यंत प्यार है। जन्मभूमि के प्रति इनके अनन्त प्रेम को देखकर ही एक बार अलवर के महाराजा मंगल सिंह को भी सरिस्का क्षेत्र में बसे 27 गांवों को उठा देने का अपना आदेश स्वयं ही रद्द करना पड़ा था। यह ब्रितानी जमाने की बात है।

सचमुच! यह विरोधाभास ही है कि राजशाही ने इनके जंगल प्रेम को समझा... मान रखा, लेकिन लोकशाही ने बेसमझी की, अभद्रता दिखाई और अत्याचार किया। वन विभाग के कर्मचारी उस दौर में जंगल से बाहर के गांवों में इनके आने-जाने पर रोक लगाते थे। इनकी रसद रोक देते थे। पशुओं की चराई तथा उनके लिए चारा या सूखे पत्ते लाने पर भी रोक लगाने का अधिकार जंगलात के पास था। ग्रामवासियों पर एहसान जताते हुए वनकर्मी कभी-कभी नाममात्र की छूट देकर रिश्वत वसूलते थे। ये रिश्वत रुपए-पैसे के अलावा दूध, मावा व घी के रूप में होती थी। गांव वाले भी

यह विरोधाभास ही है कि राजशाही ने इनके जंगल प्रेम को समझा... मान रखा, लेकिन लोकशाही ने बेसमझी की, अभद्रता दिखाई और अत्याचार किया।

जैसे इस रिश्वत के आदी हो चुके थे। जबकि इसके बदले में उन्हें पूरी छूट कभी नहीं दी जाती थी। हां! कभी-कभी थोड़ी सी ढील दी जाती थी। जब कभी ढील की रस्सी ज्यादा कस दी जाती, गांव कसक उठता; पर शान्त रहता। मवेशी चराने के लिए भी परमिट लेना पड़ता था। अनपढ़ समाज यह सब क्या जानता था। खानें पानी पी गईं थीं। सो, खेती थी नहीं।

रिश्वत लेकर
कभी-कभी थोड़ी सी ढील
दी जाती थी। जब कभी ढील
की रस्सी ज्यादा कस दी जाती,
गांव कसक उठता;
पर शान्त रहता।

बाहर अनाज लाने गई औरतें किसी तरह से अपनी आबरू का मान रख पाती थी। जंगलात ने नाहर सती के पास रास्ते में दीवार बनाकर रास्ता रोकने की भी कोशिश की थी। घरों पर पत्थर तक बरसाए।

इन्हीं दिनों तरुण भारत संघ स्थानीय गांवों में शिक्षा व स्वास्थ्य के कामों के साथ-साथ पदयात्राएं कर गांवों की तत्कालीन समस्याओं की खोज करने में जुटा था। 'देवरी की संघर्ष गाथा' पुस्तक में जिक्र है कि दिसम्बर 1985 में एक दिन श्री राजेन्द्र सिंह कुछ साथियों के साथ भीकमपुरा से प्रातः 5 बजे पैदल ही रवाना होकर गोपालपुरा, माण्डलवास, मथुरावट, करांट, कालीघाटी व ऊमरी होते हुए 55 किलोमीटर दूर गांव देवरी पहुंचे। सभी साथी जोशीले व जवान थे और लक्ष्य को लेकर संकल्पबद्ध भी। तभी शायद अनजान क्षेत्र में इतनी लम्बी यात्रा करने के बावजूद उस समय उन्हें आनन्द ही आया था। हां! उन्हें प्यास जरूर लग आई थी। तब बोतलों में पानी भरकर ले चलने का चलन नहीं था। रास्ते के जोहड़-बांधों में कहीं भी पानी नहीं दिखाई दिया। हरसावल का झरना भी उस समय सूखा हुआ था। देवरी पहुंचकर प्रभात पटेल की प्यार भरी बातों ने रास्ते में लगी प्यास के एहसास को कम कर दिया था। उन्होंने पानी पिलाया। भोजन कराया। गांव के अन्य लोगों को भी प्रभात पटेल ने अपने घर बुला लिया। आपस में बातचीत होने लगी। गांव के लोगों ने अपनी दुःखभरी दास्तान सुनाई। बोले- राम से हम प्रार्थना करेंगे, तो शायद सुन ले, पर राज पर हमारी प्रार्थना का कोई असर नहीं हो रहा। खुलासा करते हुए उन्होंने बताया- हमारे यहां न तो बरसात हो रही है, न पशुओं के पीने के लिए पानी ही है। जंगल में भी न चारा है, न पानी। जानवर भूखे-प्यासे मर रहे हैं। इसलिए हमें गांव छोड़ कर नीचे के गांवों में पलायन करना पड़ रहा है। पानी नहीं, तो फसल कहां से हो ? खाने के लिए अनाज भी बाहर से लाना पड़ता है। इन समस्याओं के अलावा सबसे बड़ी समस्या जंगलात बना हुआ है। वन कर्मचारी सामान लेकर आने-जाने पर भी रोक लगाते हैं।

चौथ भी वसूलते हैं। उनके आदेश को शिरोधार्य करने के अलावा हमारे पास और कोई चारा नहीं बचा है। क्या करें ?

यह कहकर गांववालों ने श्री राजेन्द्र सिंह जी पर एक आशा भरी नजर डाली। श्री राजेन्द्र सिंह उनकी पीड़ा सुनकर बहुत दुःखी हुए। उन्हें आश्वासन दिया कि सभी मिलकर जल्द ही समस्या का हल निकाल लेंगे।

इसके बाद श्री राजेन्द्र सिंह उस क्षेत्र में आते-जाते रहे। उन्हीं के निर्देश पर तरुण भारत संघ ने जहाज के जंगलों में जंगलात के जुल्म को चुनौती के रूप में लिया। उन्होंने स्थानीय लोगों को ज्यादा से ज्यादा जोड़ने का प्रयास किया। इसी शृंखला में एक अक्टूबर, 1987 को संस्था में एक साथ 20-25 कार्यकर्ता जोड़े गये। कुछ कार्यकर्ता पहले से ही कार्यरत थे। 1987 के अंत में ऐसे नये, लेकिन सामाजिक क्षेत्र का विशेष अनुभव रखने वाले कार्यकर्ता श्री गोवर्धन शर्मा को श्री राजेन्द्र सिंह जी ने जहाजवाली नदी क्षेत्र और सरिस्का क्षेत्र की समस्याओं से निपटने के लिए नियुक्त किया। इसी दौर में प्रसिद्ध गांधीवादी स्व.श्री लोकेन्द्र भाई ने भी यहां अपनी ढपली और गीतों से जन चेतना जगाने का अभियान छेड़ा था।

तरुण भारत संघ ने जहाज के जंगलों में जंगलात के जुल्म को चुनौती के रूप में लिया।

जहाजवाली नदी क्षेत्र में गोवर्धन जी के पहली बार आने की बात को याद करके बांकाला (देवरी) के भम्बू गुर्जर बताते हैं कि उस वक्त वह कुएं से पानी निकालने हेतु लाव तैयार कर रहे थे। दिन ढल रहा था। लाव तैयार हो चुकी थी। उसी वक्त बगल में थैला लटकाए... सिर पर टोपा पहने राजेन्द्र सिंह जी व गोवर्धन जी आ धमके। उन्होंने लाव तैयार करते भम्बू गुर्जर, प्रभातीलाल पटेल, बाबूलाल मीणा और रामधन मीणा को अपनी पहचान बताई। कोड़ै... काँय छै की स्थानीय बोली बोलते हुए राजेन्द्र सिंह जी ने जल-जंगल संरक्षण के लिए लोगों को तैयार करने का प्रयास किया। काफी बातचीत हुई। फिर भी उपस्थित लोग पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हुए। आखिर में यह तय हुआ कि तीनों गांवों की सामूहिक बैठक बांकाळा में करेंगे। सूर्यास्त के समय राजेन्द्र सिंह जी को बांकाळा-गुवाड़ा भेज दिया। भम्बू गुर्जर की तिबारी में बैठक जमीं। राजेन्द्र सिंह जी को बड़े प्रेम से रात्रि भोजन कराया। बाबूलाल मीणा और भम्बू गुर्जर ने अगले दिन तीनों गांवों के लोगों को इकट्ठा किया।

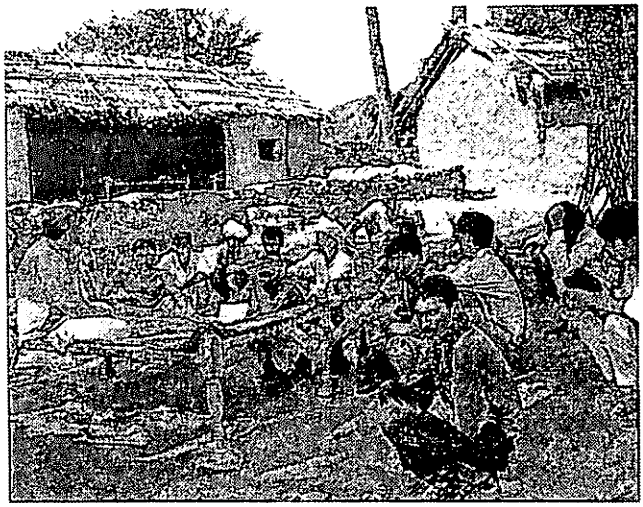

राजेन्द्र जी ने कहा कि पेड़ तो नहीं काटने चाहिए। लोगों को शक हुआ कि यह भी कोई गांव उठाने वाले लोगों में से ही है।

राजेन्द्र सिंह जी ने गांव के लोगों को गांव में आने का अपना उद्देश्य बताया। गांव का हाल़चाल पूछा। राजेन्द्र सिंह जी जब गांव की बदहाली का कारण पूछने लगे, तो गांव ने फिर वही पुरानी कहानी दोहरा दी-न चारा है, न पानी... न अनाज; ऊपर से जंगलात के जुल्म और रिश्वत। ''रिश्वत क्यों देते हैं? जवाब आया-पेड़ काटने के लिए। राजेन्द्र सिंह जी ने कहा कि पेड़ तो नहीं काटने चाहिए। लोगों को शक हुआ कि यह भी कोई गांव उठाने वाले लोगों में से ही है। बैठक में उपस्थित लोगों ने गोपनीयता बरतते हुए राजेन्द्र सिंह जी के पास भम्बू की तिबारी में कुछ लोग छोड़े और बाकी सब खास-खास लोग स्वर्गीय श्री कल्याण गुर्जर की तिबारी में पहुंच गये। कैलाश गुर्जर के कहे अनुसार वहां लोग बातें करने लगे- यह भी कोई वन विभाग का ही आदमी है। हमारे गांव को हटाने की साजिश रच रहा है। इसलिए पूरी जानकारी हासिल करना जरूरी है। फिर भी ऐसे भगाना ठीक नहीं। उन्होंने यह तय किया कि गांव के लोग एक बार भीकमपुरा आयेंगे। बैठक में भम्बू गुर्जर का भीकमपुरा जाना तय हुआ। राजेन्द्र सिंह ने रात्रि में भम्बू गुर्जर की तिबारी में ही विश्राम किया। राजेन्द्र जी व गोवर्धन जी प्रातः उठकर देवरी, बांकाळा, गुवाड़ा गांव में भ्रमण करने गये। एक-दो दिन भ्रमण करने के बाद राजेन्द्र सिंह जी व गोवर्धन जी भीकमपुरा के लिए रवाना हो गये।

यूं मिला रास्ता-राजेन्द्र सिंह जी और गोवर्धन जी के चले जाने के बाद बांकाळा के भम्बू गुर्जर क्रास्का के अपने रिश्तेदार गणपत गुर्जर को साथ लेकर तरुण भारत संघ की कार्यप्रणाली को देखने-समझने... एक तरह से जाँच करने पहुँचे। भम्बू गुर्जर ने काफी गहराई से बातचीत की। अपने तरीके से जांच-पड़ताल की। तरुण भारत संघ के प्रति

तरुण भारत संघ के प्रति जो शंकाएं थीं, वे दूर हुईं। सबने मिलकर तय किया कि जंगल में हो रहे कटान व जंगलात कर्मचारियों की रिश्वतखोरी से निपटने के लिए गांव व संस्था... सब मिलकर आंदोलन चलाएंगे।

जो शंकाएं थीं, वे दूर हुईं। अच्छा हुआ। उन्हें विश्वास हो गया कि तरुण भारत संघ व इसके कार्यकर्ता वास्तव में सेवा-भावना से ही काम करते हैं। इनमें किसी प्रकार की स्वार्थ-भावना नहीं है। इस तरह पूरा विश्वास हो जाने के बाद भम्बू गुर्जर ने श्री राजेन्द्र सिंह जी व अन्य कार्यकर्ताओं से पुनः बातचीत की। सबने मिलकर तय किया कि सरिस्का के जंगल में हो रहे कटान व जंगलात कर्मचारियों द्वारा ग्रामवासियों से ली जाने वाली रिश्वतखोरी से निपटने के लिए गांव व संस्था... सब मिलकर आंदोलन चलाएंगे। इस आंदोलन को ठीक से चलाने के लिए गोवर्धन जी को देवरी गांव में भेजेंगे। वे वहां रहकर छोटे बच्चों के लिए स्कूल भी चलाएंगे और आंदोलन को भी सक्रिय करेंगे। यह तय हो जाने के बाद निर्धारित तारीख पर गोवर्धन जी वहां पहुंच गये।

पहले आत्मानुशासन, फिर संघर्ष : पहले देवरी-गुवाड़ा गांवों में छोटी-छोटी बैठकों का दौर चला। पहले गावों का अनुशासन जरूरी था। गांव अपना अनुशासन खुद करने के लिए तैयार हो गए। तय किया गया कि अब कोई भी ग्रामवासी गांव के जंगल से पेड़ नहीं काटेगा। सब समझ गए कि जंगल कटने के कारण गाय, भैंस, बकरी, ऊंट आदि पशुओं को चारे का अभाव हो रहा है। जंगल जाने से ही पानी जा रहा है। अच्छा-खासा समृद्ध इलाका इसी कारण बेरोजगारी व गरीबी की ओर बढ़ रहा है। गरीबी, बेकारी और बेरोजगारी से बचने के लिए जरूरी है कि जंगल का संरक्षण हो। यूं भी जंगल नष्ट होगा, तो तोहमत जंगलात से ज्यादा जंगलावासियों के माथे ही थोपी जाएगी। बदनामी होगी, सो अलग! यह निर्णय गांव में काफी लम्बी आपसी बहस व संवाद के बाद तय हो पाया। बहस में बार-बार यह बात उठती रही कि सारा जंगल तो वन विभाग का है। विभाग चाहे, तो जंगल कटा सकता है और चाहे तो संरक्षण कर सकता है। गोवर्धन जी ने गांववालों को समझाया कि वन विभाग जंगल का मालिक नहीं होता। वह जनता का नौकर होता है। उसकी जिम्मेदारी होती है कि वह जंगल को बचाए। जंगल का असली मालिक तो गांव ही है। पूरी बात समझ में आने के बाद सर्वसम्मति से हरा जंगल नहीं काटने का निर्णय हुआ। इसी के साथ गांव की व्यवस्था संबंधी एक ढाँचा भी तय हुआ।

तय हुआ कि तीनों गांवों को मिलाकर एक ग्रामसभा बनेगी। इसमें गांव के हर व्यक्ति का आना अपेक्षित है। हर घर से कम से कम एक वयस्क सदस्य का उपस्थित होना तो अनिवार्य ही है। ग्रामसभा ने हाथ खड़े करके तय किया कि अब गांव वाले न तो खुद हरा जंगल काटेंगे और न ही कटने देंगे। जंगल में यदि किसी व्यक्ति को पेड़ काटते हुए गांव का कोई भी व्यक्ति देखेगा, तो वह उसी शाम ग्रामसभा में आकर बतायेगा। गांव के पशुपालक दिन भर जंगल में ही रहते हैं, इसलिए जंगल काटने वाला व्यक्ति उनसे छिप नहीं सकता। सूचना मिलते ही ग्रामसभा तुरन्त इकट्ठी होगी। वह अपने निर्णय के अनुसार अपराधी पर जुर्माना करेगी। जुर्माना नहीं देने की स्थिति में ग्रामसभा अहिंसात्मक तरीके से अपराधी के खिलाफ सत्याग्रह करेगी। यदि वह फिर भी नहीं मानता है, तो ग्रामसभा जंगल विरोधी व्यक्ति से अपना नाता-रिश्ता तोड़ लेगी। एक तरह से उसका सामाजिक रूप से बहिष्कार कर दिया जायेगा। इसमें कोई समझौता नहीं होगा। हां! ग्रामसभा ने गांव की जरूरत के लिए जंगल से सूखी लकड़ी, सूखी घास, गाय-भैंस-बकरी के लिए सूखी पत्तियां, चराई व छान-छप्पर के लिए आवश्यक सूखी सामग्री जंगल से जुटाने की छूट अवश्य दी।

गांव अपने निर्णय पर खुश था। उसकी ऊर्जा व आत्मज्ञान जैसे वापस लौट आया था। गांववालों ने गोवर्धन जी को रहने के लिए ठाकुर जी का मन्दिर सौंप दिया। गोवर्धन जी 'मास्टर जी' बन गए। गांव के बच्चों को पढ़ाते-पढ़ाते वह संगठन का काम भी करते रहे। रचना और सत्याग्रह दोनों की तैयारी साथ-साथ परवान चढ़ने लगी। रणनीति के तौर पर गांवों को प्रेरित किया कि यदि कोई वनकर्मी रिश्वत मांगे, तो उससे रसीद मांगो। 'रसीद नहीं, तो रिश्वत नहीं' का टोटका चल निकला। दूसरा नारा था- जंगलात से जंगल को बचाओ। गोवर्धन जी का प्रयास सफल रहा। उन्हीं दिनों गोवर्धन जी के पास लक्ष्मण सिंह जी व गोपाल दत्त जी का भी आवागमन बढ़ा। तरुण भारत संघ के ये तीनों साथी मिलकर गांव के संगठन को मज़बूत करने का काम करते रहे। इन्होंने नये कार्यकर्ताओं की खोज की। इसी से आगे के संघर्ष में सफलता की पृष्ठभूमि तैयार हो गई।

ग्रामसभा ने हाथ खड़े करके तय किया कि अब गांव वाले न तो खुद हरा जंगल काटेंगे और न ही कटने देंगे।... रणनीति के तौर पर गांवों को प्रेरित किया कि यदि कोई वनकर्मी रिश्वत मांगे, तो उससे रसीद मांगो। 'रसीद नहीं, तो रिश्वत नहीं' का टोटका चल निकला।

बौखलाया जंगलात : देवरी गांव पहुंच कर गोवर्धन जी ने वहां के तीनों गांवों की बैठक बुलाई।

खूब चर्चा हुई। उन्होंने तीनों गांवों को संगठित कर उनकी एक ग्रामसभा बनाई। ग्रामसभा में जंगल को बचाने के लिए कुछ गंवई दस्तूर बनाये गए। जंगलात वालों के षड्यन्त्र से सावधान होकर काम करने का संकल्प हुआ। इधर बैठक में जंगलात वालों की साजिश से निपटने के लिए रणनीति बनी, तो उधर जंगलात विभाग के कर्मचारियों में हड़कम्प मच गया। बौखलाहट में उन्होंने गांव के संगठन को कमजोर करने लिये बांकाळा-गुवाड़ा को अपनी साजिश का निशाना बनाया। वे रात को भम्बूराम, शोभाराम व सुरजा गुर्जर के घर पत्थर बरसाने लगे। गांव के लोग सावधान हो गये। वे इन सब करतूतों से घबराए नहीं। रातभर गश्त लगाते रहे। गोवर्धन जी, लक्ष्मण सिंह जी व गोपालदत्त जी जैसे कार्यकर्ता भी डटे रहे। जंगलात की करतूत देखने वास्ते तरुण भारत संघ के महामंत्री श्री राजेन्द्र सिंह जी ने भी कई रातें वहीं बिताईं। बरसते पत्थरों से किसी का बाल भी बांका न होते देख बौखलाए जंगलात वालों ने 43 ग्रामीणों के खिलाफ झूठे मुकदमे लगा दिये। गोवर्धन जी को भी झूठे मुकदमे फँसा दिया गया।

बौखलाहट में उन्होंने गांव के संगठन को कमजोर करने लिये बांकाळा-गुवाड़ा को अपनी साजिश का निशाना बनाया। 43 ग्रामीणों के ख़िलाफ झूठे मुकदमे लगा दिये।

जंगलात वालों ने एक नया दांव खेला। जरख केस में पहले दर्ज धमरेड़ के जयराम गुर्जर व गिर्राज जांगिड़ की जगह इन्हें पेश करके फंसा दिया।

किस्सा रोमाचंक है। अज्ञात कारणों से मरा हुआ एक जरख धमरेड़ गांव के जयराम गुर्जर व गिर्राज जांगिड़ को एक दिन गांव की गौर में पड़ा मिल गया। उन्होंने वन विभाग की वन चौकी को इसकी सूचना दे दी। वन चौकी के गार्डों ने दोषी व्यक्तियों को खोजने की बजाय सूचना देने आए दोनों लोगों को दोषी ही ठहरा दिया। उन्हें दण्ड भुगतना पड़ा। कई सौ रुपये खर्च करने पर वनकर्मियों ने उनका पीछा छोड़ा। इस हकीकत से कई वन अधिकारी व कर्मचारी भली-भांति अवगत थे।

जब तरुण भारत संघ व ग्रामीणों द्वारा जंगल संरक्षण के लिए प्रयास और तेज हुए तो जंगलात वालों ने एक नया दांव खेला। यह किस्सा और आगे बढ़ा। जरख केस में

पहले दर्ज धमरेड़ के व्यक्तियों के नाम के दूसरे दो व्यक्ति खोज निकाले। एक दूसरे गांव गुवाड़ा में परताराम का भतीजा जयराम गुर्जर व देवरी प्रभात पटेल का बेटा गिर्राज मीणा। धमरेड़ के जयराम गुर्जर व गिर्राज जांगिड़ की जगह इन्हें पेश करके फंसा दिया। कई बार पेशी लगने के बाद भोजराज सिंह जी रेंजर के सहयोग से उन्हें बड़ी मुश्किल से छुटकारा मिला।

दूसरा किस्सा और भी शर्मसार करने वाला है। देवरी गांव के लोगों के खिलाफ दर्ज मुकदमों की पैरवी कर रहे वकीलों को नकल देने गोवर्धन जी व गांव के कुछ लोग एक दिन राजगढ़ तहसील पहुंचे। राजगढ़ में गोवर्धन जी व कुछ ग्रामीणों को अकेले देखकर वनकर्मियों ने उन्हें झटपट पकड़कर जेल भेजने की योजना बना डाली। गोवर्धन जी कुछ बाबुओं के पास मुकदमों की जानकारी कर रहे थे। अपने आगे-पीछे लगे वनकर्मियों को देखकर उन्हें शक हुआ। वनकर्मियों ने अनजाने ही गोपनीयता तोड़ते हुए आजू-बाजू के कई लोगों से यह कह दिया था - ''देवरी गुवाड़ा के कई लोग व गोवर्धन शर्मा हमारे मुलजिम हैं। इन्हें हम गिरफ़्तार करेंगे।'' गोवर्धन जी ने देवरी गांव के लोगों को वनकर्मियों से बचकर भाग निकलने का इशारा कर दिया। तभी संयोग से चावा का बास के उनके परिचित मुकेश शर्मा कोर्ट-परिसर में मिल गये। गोवर्धन जी ने अपने पर होने वाली सम्भावित घटना से मुकेश शर्मा को अवगत कराया। टहला छींड के मुकेश शर्मा संघर्षशील व कमजोर वर्ग की सेवा करने वाले नौजवान व्यक्ति हैं। गोवर्धन जी के कार्य की प्रशंसा उन्होंने पहले से ही सुन रखी थी। गोवर्धन जी को वन विभाग की आफत से निकालने के लिए उन्होंने उन्हें वहीं कोर्ट-परिसर में अपने पहचान वाले एक बाबू के पास बैठा दिया। उन्होंने बाहर घूम रहे वनकर्मियों को समझाने की भी कोशिश की। उनके बाज नहीं आने पर मुकेश शर्मा ने चुपके से अपनी पहचान के एक जीप वाले को

राजगढ़ में गोवर्धन जी व कुछ ग्रामीणों को अकेले देखकर वनकर्मियों ने उन्हें झटपट पकड़कर जेल भेजने की योजना बना डाली।

टहला छींड के मुकेश शर्मा संघर्षशील व कमजोर वर्ग की सेवा करने वाले नौजवान व्यक्ति हैं। एक जीप वाले की मदद से वह गोवर्धन जी को सुरक्षित निकाल ले गये।

बुलाकर यह सब हाल सुनाया। उससे जीप को कोर्ट-परिसर में बैठे गोवर्धन के करीब सटाने को कहा। जीप वाले ने वैसा ही किया। जीप आ जाने पर मुकेश शर्मा ने गोवर्धन शर्मा को इशारा किया। गोवर्धन जी जीप में बैठ गये। मुकेश शर्मा उन्हें राजगढ़ से कई किलोमीटर दूर चीतोस गांव में छोड़ आये। गोवर्धन वहां से आगे बढ़ गए।

उधर देवरी गांव में गोवर्धन जी की गिरफ़्तारी की साजिश की सूचना पहुंच चुकी थी। गांव के लुगाई-मोट्यार सब गोवर्धन जी के सहयोग के लिए राजगढ़ की तरफ रवाना हो गए थे। उन्हें रास्ते में सूचना मिली कि गोवर्धन जी वनकर्मियों के चंगुल से निकल गये हैं। फिर भी ग्रामवासी आगे बढ़कर कई किलोमीटर पैदल ही तालाब गांव पहुंच गए। वहां जब गोवर्धन जी को सकुशल पाया और अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देख लिया, तभी लोगों की जान में जान आई। गांव के लोग तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं को सचमुच! ही बहुत प्यार करते थे। फिर वे गोवर्धन जी को साथ लेकर वापस देवरी लौट गए। तुरन्त ग्रामसभा की बैठक बुलाई गई। बैठक में गांव वालों ने तय किया कि अब वे किसी भी परिवार में किसी भी वनकर्मी को नहीं बैठने देंगे। वनकर्मी जिसके भी घर बैठा मिलेगा, उसके ऊपर ग्रामसभा जुर्माना करेगी। यह एक तरह से जंगलात का सामाजिक बहिष्कार था। लोगों ने वनकर्मियों को पीने का पानी तक देने से इन्कार कर दिया। इससे जंगलात वालों में और ज्यादा आक्रोश बढ़ गया। लेकिन इस आक्रोश ने लोगों को एकजुट ही किया।

गांव के लोग तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं को सचमुच! ही बहुत प्यार करते थे। गांव वालों ने तय किया कि अब वे किसी भी परिवार में किसी भी वनकर्मी को नहीं बैठने देंगे।

जुटी ताकत - देवरी के संघर्ष में गोवर्धन जी के साथ लापोड़िया के लक्ष्मण सिंह जी का भी विशेष योगदान रहा। लक्ष्मण सिंह जी का समझाने का तरीका बड़ा अद्भुत था। लोग उनकी भाषा और बातचीत से बहुत प्रभावित होते थे। उन्होंने राड़ा की गांडरवाली जोहड़ी, बळा गोवर्धनपुरा की जोहड़ी और खैराळी की ढाब में ग्रामवासियों के साथ कई दिन तक पूर्ण श्रमदान करके उन्हें श्रमदान की व्यावहारिक अवधारणा समझाई थी। श्रमदान का महत्त्व समझ में आने के कारण ही इस क्षेत्र में पानी का काम इतना सहज हो सका था। इनके श्रम व व्यवहार को गांव के लोग आज भी बड़ी श्रद्धा से याद रखे हुए हैं। इनके साथ बामनवास के गोपालदत्त जी ने भी प्रारम्भिक दौर में बड़ी मेहनत व लगन से काम किया। गोपाल जी गांव की

आन्तरिक संरचना को समझ कर उसी अनुरूप संगठनात्मक कार्य करते थे। इससे बड़ी ताकत जुट गई।

मुझे याद है कि प्रसिद्ध सर्वोदयी विचारक श्री सिद्धराज जी ढड्ढा को लेकर तरुण भारत संघ के महामंत्री श्री राजेन्द्र सिंह जी 11 मई, 1988 को देवरी में जंगलात-विभाग की जंगल विरोधी मुहिम को देखने-समझने के लिए पहुंचे थे। श्री सिद्धराज ढड्ढा बुजुर्ग आदमी थे। उन्हें पहाड़ी के ऊपर चढ़ाने के लिए भगवान सहाय मीणा व एक अन्य साथी ने अपने हाथों की जोड़ी बनाई। उस पर बैठाया और सहज ही पहाड़ के पार देवरी गांव में पहुंचा दिया। सिद्धराज जी देवरी गांव वालों से उनकी ग्राम निर्माण योजना को सुनकर बहुत खुश हुए। उन्होंने आगाह किया- जब तक भारत के ग्रामीण समाज के मन में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूकता नहीं आयेगी, तब तक हमारा देश सही मायने में तरक्की नहीं कर सकेगा। देवरी गांव ने रिश्वत के खिलाफ जो आंदोलन शुरू किया है। यह बड़ा शुभ कार्य है। इसके साथ-साथ जंगल

श्री सिद्धराज जी ढड्ढा 11 मई, 1988
जब तक प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूकता नहीं आयेगी, तब तक हमारा देश तरक्की नहीं कर सकेगा। देवरी गांव ने रिश्वत के खिलाफ जो आंदोलन शुरू किया है यह बड़ा शुभ कार्य है।

संरक्षण करना समझदारी का काम है। उन्होंने रिश्वतखोरी के खिलाफ आवाज को बुलन्द करते हुए ग्रामीणों को अपना पूरा सहयोग देने की बात कहकर हिम्मत बँधाई। जैसे-जैसे गांव वालों की ताकत बढ़ रही थी, जंगलात वाले अधिक परेशान रहने लगे थे। उन्होंने स्थानीय खान मालिकों से मिलकर गांव के संगठन को तोड़ना चाहा। यद्यपि गांव का संगठन मजबूत था, फिर भी वे गांव में से एक-दो लोगों को प्रलोभन देकर तोड़ने में सफल हो गये थे। खान मालिक और वन विभाग वाले कैसे गांव के लोगों को बहकाते हैं ? इसे समझने के लिए हंस और बगुले की इस कहानी से सीख लेनी चाहिए। यह स्थिति नेता, सरकार व समाज के बीच आज भी बरकरार है इसलिए इसका यहां ज्यादा महत्व है।

मत्स्यबाकुलीकरण- एक दिन राज्य संचालक वर्ग का एक हंस उड़ता-उड़ता ऐसे गांव में पहुंचा, जहां मछलियों से भरा सुंदर तालाब था। वहां का वातावरण उसे बहुत भाया। पानी में मछलियों की उछल-कूद देखकर वह सोचने लगा- काश! ये मेरे सरोवर में भी होतीं। उसे लालच आया और वह मछलियों को साथ ले जाने का उपाय सोचने लगा। वहां का सहअस्तित्व, प्रेम और शांति देखकर वह अचम्भे में था। तुरन्त उसे समझ में आ गया कि मछलियां तो केवल बगुले ही ले जा सकते हैं। अब उन्हें कैसे तैयार करें ? उसने सबसे पहले उनके नेता की तलाश की। उनका नेता दिखाई नहीं देने पर उसने एक जवान बगुले को एक तरफ बुलाकर उसके कान में मंत्र फूंका- मैं तुम्हें मेरे जैसा सुंदर हंस बना सकता हूं। तुम मेरे साथ मेरे सरोवर के राजा से मिलने चलो। बगुले ने एक क्षण कुछ सोचा, फिर बिना किसी को बताए वह हंस के साथ उड़ गया।

सरोवर में पहुंचने पर हंस ने बगुले को अपने राजा से मिलाया। हंस ने बगुले से तालाब पर हुई सारी बातें पहले ही राजा के कान में कह दी थीं। राजा भी बगुले को प्रलोभन देने लगा- तुम्हें हम हंस बना देंगे। तुम वहां की सारी मछलियां अपने खाने के लिए यहां ले आओ। बगुले ने कहा- मैं अकेला मछलियां नहीं ला सकता। दूसरों को कहना पड़ेगा। राजहंस ने कहा - हम उन्हें भी हंस बना देंगे। तुम मछलियों को ले आओ। जल्दी करो। तीन माह के अंदर-अंदर सब मछलियां ले आओ। तो ही तुम सब हंस बन पाओगे।

बगुला वापस आया और उसने हंसों के राजा का प्रस्ताव दूसरे बगुलों के सामने रखा। बगुलों ने भी सोचा कि यहां के तालाब में रह-रहकर ऊब रहे हैं। हंस बन जाएंगे, तो उनके साथ रहने को मिलेगा। उन सभी ने अपने तालाब की मछलियां हंसों के तालाब में ले जानी शुरू कर दी। हंसों का तालाब मछलियों से भरने लगा और बगुलों का तालाब खाली होने लगा। यह काम बगुलों ने बड़े उत्साह में एक माह में ही कर दिया। तब एक नौजवान बगुले ने उन हंसों से कहा- हमारे तालाब की सभी मछलियां आपके तालाब में पहुंच चुकी हैं। अब हमें हंस बनाओ। उन्होंने हंसों के राजा से मिलने के लिए कहा। राजा ने पहले तो मिलने में आनाकानी की, लेकिन बाद में मिला। बोला- मैंने तो केवल एक बगुले को हंस बनाने की बात कही थी। आप सबको हंस बनाने की मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं है। जिसे मैंने कहा था, वह एक रुक जाए। बाकी बगुले जा सकते हैं। एक को छोड़ सब बगुले मुंह लटकाए अपने तालाब पर वापस आ गए।

तालाब में मछलियां थी नहीं। वापस लौटे बगुलों में बहुत निराशा फैली। उनमें इतना गुस्सा व तनाव था कि एक दिन जबर्दस्त धमाका हुआ और बगुले ही मछलियां बनने लग गए। जैसे ही बगुले मछलियां बने, प्रलय आई और सब ध्वस्त हो गया।

जंगलात हंस, समाज बगुला : कब तक ?- आज के गरीब इस कहानी के बगुले जैसे ही हैं। यहां के गरीबों ने भी कभी राज्य संचालक वर्ग के इशारे पर अपने पेड़ स्वयं ही काटकर उनके पास पहुंचाए थे। अपने पहाड़ों को भी ये ही खोद-खोद कर उन्हें दे रहे थे। अपने जंगलों के मृत जानवरों की खाल-सींग तक इन्होंने ही उनके घर पहुंचाए थे। दूध, फल, सब्जियां, अनाज... आदि खाने की किसी भी वस्तु की हंस कहलाने वाले राज्य संचालक वर्ग के पास आज कमी नहीं है। पैदा करने वाला प्रायः भूखा ही मर रहा है। लेकिन बगुलों में आज भी हंस बनने का लालच है। इनमें बहुत ही कम हंसों के वर्ग में पहुंच पाए हैं। अधिकतर मछलियां ही बन रहे हैं या प्रलय इनकी प्रतीक्षा में हैं। 'मत्स्यबाकुलीकरण कथा' से कितने लोग सीख पाये हैं ?

प्रलय रोकने के नाम पर बनाई गई समितियां आज जो रास्ते खोजती हैं, वे वर्तमान शोषणकारी व्यवस्था को बनाए रखते हुए गरीबों के प्राकृतिक संसाधनों को अपने नियंत्रण में लेने के रास्ते बनाते हैं। अरावली की वनस्पति पहले ही लूटी जा चुकी है। अब केवल कुछ पहाड़ शेष हैं। इन्हें भी गरीबों को रोजगार देने के नाम पर इन्हीं से खुदवा कर लूट रहे हैं। अरावली के पास अभी प्रलय से बचने का समय है। बशर्ते हम वर्तमान राज्य संचालक वर्ग को कह दें-हमें हंस नहीं बनना है। हम जैसे हैं, हमें हमारे हाल पर वैसे ही छोड़ दो। हमारे संसाधनों की लूट बंद कर दो। हम अपने पहाड़ों व जंगलों को खुद बचाकर अपना जीवन जी लेंगे।

जहाजवाली नदी क्षेत्र के लोगों ने एक वक्त यही बात शासन से कह दी थी। सिर्फ कही नहीं, बल्कि अपने संसाधन बचाने में भी लगे रहे। आस-पास के गांवों में भी यह चर्चा जोरों से फैली। ग्रामीणों ने जंगल संरक्षण के इस कार्य के साथ-साथ जल संरक्षण का कार्य भी शुरू कर दिया। गुवाड़ा में सेढ़वाला व देवरी में कारोजवाला जोहड़- ये दो जोहड़ गांव के श्रमदान व तरुण भारत संघ के आंशिक आर्थिक सहयोग से बनकर तैयार हो गये।

इसी बीच वन विभाग की तरफ से गढ़े गये झूठे मुकदमों का उत्तर देने का समय आ गया। पेशी-तारीखों का दुश्चक्र शुरू हो गया था। भोले-भाले ग्रामीण इजलास के खेल से परेशान हो उठे। वन विभाग ग्रामीणों को उनके सत्य आचरण का मजा चखाने को एकजुट हो गया था। सरिस्का वन विभाग में कार्यरत तत्कालीन रेंजर श्री भोजराज सिंह जी एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जो अपने वनकर्मियों के षड्यंत्र के खिलाफ़ थे। वह लोगों की मदद करना अपना कर्त्तव्य समझते थे। उन्होंने षड्यंत्रकारी वनकर्मियों द्वारा गांव वालों पर लगाये गये झूठे मुकदमों से गांवों को छुटकारा दिलाकर न्याय का पक्ष

लिया था। लोग उन्हें आज भी श्रद्धा से याद करते हैं। कुछ भी हो, वन विभाग के दुश्चक्र से अंततः जहाजवाली नदी क्षेत्र के गांव मजबूत होकर ही निकले।

ऐसे ही कई छोटे-बड़े वाक्यात जहाजवाली नदी को पुनर्जीवित करने की यात्रा कथा में शामिल रहे। अच्छी बात यही रही कि ऐसे कठिन मौकों पर जहाज के गांव न रोये,... न चिल्लाये, बल्कि एकजुट होकर दीप जलाने में लग गए।

आज अच्छी-खासी प्राकृतिक समृद्धि हासिल करने के बाद भी जहाज के लोग अपनी टेक भूले नहीं हैं। अब इनकी नदी, जोहड़, धरती, चारागाह, जंगल... इनके प्राण हैं। इनकी रक्षा के लिए ये प्राण-प्रण से ही जुटे हैं। राड़ा गांव का सत्याग्रह इस दिशा में ताजा उदाहरण है।

राड़ा गांव का सत्याग्रह- राड़ा गांव की उत्तर दिशा में शताब्दियों पुरानी एक जोहड़ी है। गाँडरवाली जोहड़ी ! इस जोहड़ी के आसपास हमारे पूर्वजों ने बहुत सारे पीपल के पेड़ लगाये थे। जब पेड़ बड़े हो गये, तो इस पूरे क्षेत्र को 'पीपलवनी' के नाम से जाना जाने लगा। गांव के लोग हमेशा से ही इस पीपलवनी की सुरक्षा करते आ रहे हैं। इस क्षेत्र में पीपल ही नहीं, बल्कि किसी भी किस्म का पेड़ काटने की मनाही है। यह एक तरह से समाज द्वारा संरक्षित वन क्षेत्र है।

इस पीपलवनी और गाँडरवाली जोहड़ी की जमीन सरकारी रिकॉर्ड में 'सिवाय चक' के रूप में दर्ज थी। आजादी के बाद 60 के दशक में भूमिहीन लोगों को सिवाय चक जमीनों में से आवंटन किया गया। उस समय भी गांव के लोगों ने गाँडरवाली जोहड़ी और पीपलवनी की जमीन को किसी के नाम आवंटित नहीं होने दिया था। गांव के लिए उनकी पीपलवनी आस्था के स्थान है।

उन्हीं दिनों सरकार ने यह जमीन भारतीय सेना से सेवानिवृत्त एक सैनिक के नाम कर दी। वह यहां से सौ किलामीटर दूर अलवर जिले के ही तसिंग गांव का रहने वाला था। उसका नाम प्रताप सिंह पुत्र श्री दीपसिंह था। चूंकि आवंटन करते समय इस खसरा नम्बर की जमीन को मौके पर जाकर नहीं देखा गया, इसलिए जोहड़ी व पीपलवनी की जमीन आवंटित हो गई। गांव वालों को इस आवंटन की जानकारी नहीं हुई। कुछ वर्षों बाद तसिंग का प्रताप सिंह पुत्र श्री दीपसिंह, अपने नाम आवंटित जमीन को तलाश करता वहां आया। तब गांव वालों को पता चला। गांव वालों ने उसे कब्जा देने से मना कर दिया। कहा कि वह भविष्य में भी कब्जा लेने न आए। इसके बाद वह व्यक्ति वहां कभी नहीं आया। उसने गांव का मान रखा।

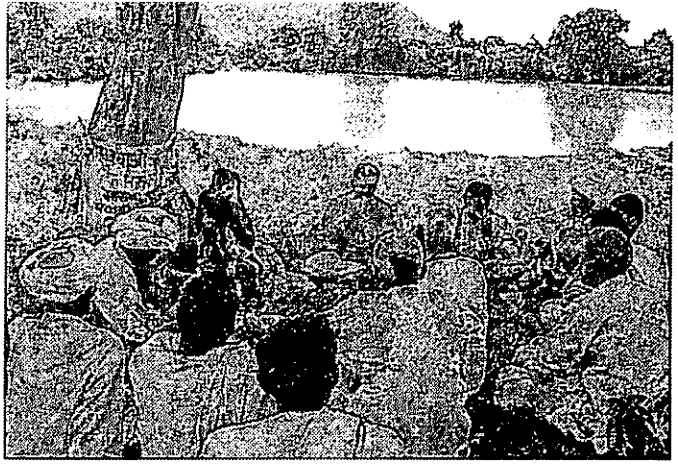

करीब 30-40 वर्ष बाद 2006-07 में तसिंग गांव का ही एक और व्यक्ति आया। उसका नाम प्रताप सिंह पुत्र श्री जनक सिंह था। उसने यहां के भू-राजस्व अधिकारी और प्रशासनिक लोगों से साँठ-गाँठ करके अपने आप को ही प्रताप सिंह पुत्र श्री दीपसिंह प्रमाणित करा लिया। यह प्रमाणित हो जाने के बाद उसने अधिकारियों से मिलकर किसी बादामी देवी पत्नी श्री राधेश्याम के नाम रजिस्ट्री करा दी। ताकि जब उस जमीन को सच में बेचा जाये, तो किसी प्रकार की कानूनी अड़चन नहीं आये। इस साजिश में यहां के सम्बन्धित अधिकारी भी शामिल थे। गांव वालों ने विरोध किया, तो तहसील के अधिकारी बौखला गये। चूँकि इस साजिश और घपले में ये अधिकारी स्पष्ट रूप से सहभागी थे। उन्होंने गांडरवाली जोहड़ी व पीपलवनी को नष्ट करने व कब्जा करने की धमकी दी। अब तक गांव में संघर्ष की लौ जग चुकी थी। वह घबराया नहीं। यह देखकर प्रताप सिंह ने नया दांव खेला।

उन्होंने बादामी देवी पत्नी श्री राधेश्याम के नाम से बदल कर एक पूँजीपति नीलम सिंह ठाकुर के नाम रजिस्ट्री कर दी। इस सौदे में लाखों का घालमेल हुआ। गांव वालों ने स्थानीय जिला कलेक्टर, मुख्यमंत्री तथा प्रधानमंत्री तक इस मसले के हल के लिये गुहार की। कोई संतोषप्रद जवाब नहीं मिला। शायद उन्होंने पहले से ही सब रास्ते साफ़ कर रखे थे। गांव ने अदालत की भी शरण ली। गांव सत्याग्रह के रास्ते पर भी उतर आया। गांव वालों ने कई दिन तक दिन-रात धरना दिया। इस धरने को वैचारिक समर्थन देने हेतु देशभर के पर्यावरणविद्, बुद्धिजीवी तथा आई. ए..एस. प्रशिक्षणार्थी भी यहां आ चुके हैं। अब गांव ने पक्का निश्चय कर लिया है कि वे गाँडरवाली जोहड़ी और पीपलवनी को किसी भी प्रकार से उजड़ने नहीं देंगे। यह सत्याग्रह पुस्तक छपने के समय भी जारी है। गाँडरवाली जोहड़ी और पीपलवनी को बचाने के लिये तो गांव प्राण तक न्योछावर करने को आमादा है। गांव को पूरा विश्वास है कि ईश्वर उसके संकल्प को अवश्य पूरा करेगा। काश! शासन को सद्बुद्धि आए और सत्याग्रह सफल हो।

जहाज में हरियाली

परंपरा ने बचाये जंगल

हमारे देश में जंगल बचाने की अनेक परम्परागत पद्धतियां रही हैं। जहाज में जब जंगलात के साथ जंगलवासियों का संघर्ष थमा, तो जंगलवासी वन बचाने में जंगलात के सहयोगी बन गए। तरुण भारत संघ ने जंगल बचाने के समाज के तरीकों व महत्त्व गांवों से जानकर उन्हें ही याद दिलाने का काम किया। सचमुच! ये अद्‌भुत तरीके थे। इन्हें भिन्न-भिन्न नाम से जाना जाता रहा है। देवबनी, रखतबनी, कांकड़बनी, देवी जी की बनी, देवओरण्य, सिद्ध क्षेत्र, पीर बाबा की बगीची, पठान की इबादतगाह बाबाजी की वाल आदि अनेक ऐसे नाम हैं, जिनका जिक्र भारत के वन कानून की किताबों में नहीं हैं। लेकिन यदि कहीं मानव संरक्षित पुराने जंगल बचे हैं, तो केवल उक्त नामों वाले क्षेत्रों में ही।

अरावली चेतना पदयात्रा के दौरान दक्षिण-पश्चिम राजस्थान में जहां जंगल देखा, वहीं पाया कि वहां कोई अमुक "धाम" है, अमुक देवता की धूणी है, अमुक देवी का स्थान है अथवा अमुक गुरु की समाधि है। उत्तर-पूर्वी अरावली में इसी तरह के स्थानों

को देवबनी, रखतबनी, बीड़, बाल आदि कहते हैं। मध्य अरावली में देवओरण्य, बाबा का मगरा, देवी माता का मगरा, देवता की डूंगरी, पीर बाबा की बगीची, सैयद का बाग या सिद्ध बाबा का स्थान आदि कहकर संरक्षित रखा गया है। हरे पेड़ काटने तो दूर, आज भी लोग ऐसे स्थान को श्रद्धा-भक्तिपूर्वक नमन करते हैं। हमारी श्रद्धा भक्ति को अंधविश्वास कहने वाली अंग्रेजियत ने हमारे जंगलों पर कब्जा करने की दृष्टि से ही उन्नीसवीं सदी में यहां वन अधिनियम बनाए व लागू किये थे। तभी से जंगलों को काटने के ठेके शुरू हुए।

भारतीय संस्कृति में हर जाति व हर गोत्र का एक पूजनीय पेड़ होता है। इसे ही 'धराड़ी' कहते हैं। कोई भी व्यक्ति अपनी धराड़ी न तो काटता है और न काटने देता है। चिपको आंदोलन इसकी याद दिलाता है। लेकिन जब लोगों के सामने ही उनकी 'धराड़ी' के पेड़ जबरन काटे जाने लगे, तो उनकी आस्था व भावनाओं को ठेस तो पहुंचेगी ही। यहां भी यही हुआ। पीपल और बरगद के वृक्ष बचाने के लिए लोगों ने जगह-जगह विरोध किया। लेकिन यह विरोध संगठित नहीं था। जातीय संगठन की बात छोड़ दें, तो संगठित विरोध राजस्थान की जीवन शैली का हिस्सा कभी रहा भी नहीं। इसीलिए अंग्रेजों का रचा गया कानूनी षड्यंत्र सफल हुआ। उन्होंने राजा व कुछ जागीरदारों को अपने कब्जे की जमीन में से 'रूंध' बनाने की बाध्यता कर दी थी ताकि उस पर सरकारी कब्जा हो सके। इसलिए कहीं-कहीं खेती की जमीन को भी 'रूंध' घोषित किया गया। 'रूंध' यानी परंपरागत जंगल। नीयत बुरी हो, नीति कैसे अच्छी हो सकती है। जंगल का नाश होना ही था। सो, हुआ।

जहाजवाली नदी जलागम क्षेत्र इसका अपवाद नहीं है। यहां भी जंगल की बर्बादी पहले कम नहीं थी। जब यहां के समाज ने जल संरक्षण के कार्यों के साथ-साथ अपने पूर्वजों द्वारा प्रतिपादित प्राचीन परम्पराओं को उभारते हुए जंगल बचाने का काम जोरों से शुरू किया, तो जंगल पुनः पनपा। बहुत सारी देवबनियों का विस्तार हुआ। गुवाड़ा, बांकाळा व देवरी में रूपनाथ जी की एक शामलाती देवबनी, कारोज का पापड़ा, ईसाळा का पापड़ा, खातियों के भैंरू की कांकड़बनी, राड़ा में बांसरोळ के भोमिया बाबा की बनी, गांडरवाली की पीपलबनी, सोना की सिद्धबनी। नाण्डू, कैरवाड़ा व राड़ी ने मिल कर जहाज में हनुमान जी की देवबनी आदि को संरक्षित व विस्तृत किया गया है। यहां आज सघन जंगल खड़े हो गये हैं। समाज की आस्था व दायित्व के एहसास ने ही इन जंगलों को खड़ा किया है।

वन सम्पदा के बारे में हमारी सरकार द्वारा बनाये कानूनों को जब हम देखत-समझते हैं, तो लगता है कि इसमें परोक्ष रूप से वनों से कुछ न कुछ अर्जित करने की बात ही प्रमुख है। जबकि भारत में जल, जंगल, जमीन, हवा, सूरज, आकाश... सभी भगवान सरीखे पूज्य व आदरणीय माने जाते हैं। पहले इसमें राज्य कहीं भी बीच में नहीं आता था। इसीलिए लोग भी इनका मर्यादित व सहज उपयोग करते थे। फलस्वरूप जनदबाव बढ़ने के बाद भी एक समय तक जल-जंगल-जमीन बचे रहे। भविष्य के लिए संग्रह करने की परंपरा हमारे यहां थी नहीं। राजा भी उपयोग के लिए प्रकृति से अनुशासित रूप में ही लेता था। प्रकृति से जितना लेता था, उतना उसे वापस भी करता था। इसीलिए लम्बे समय तक प्राकृतिक संतुलन बना रहा।

'सब कुछ इंसान के लिए ही है' - पश्चिम के जीवन दर्शन में तो यही सूत्र वाक्य था। जबकि भारतीय दर्शन में मनुष्य को प्रकृति का मामूली हिस्सा माना जाता था। इसीलिए जल, जंगल व जमीन पर राजाओं का प्रत्यक्ष नियंत्रण नहीं था। इन संसाधनों पर यदि राजा का नियन्त्रण होता भी था, तो वह प्रजा व प्रकृति... दोनों के हित के लिए ही। सिर्फ अपने लिए नहीं। अंग्रेज कंपनी शासकों को तत्कालीन व्यवस्था अपने लोभ के विपरीत लगी। इसलिए उन्होंने जंगल के कानून बनाए। इन कानूनों को आज की सरकार अभी भी चला रही है। इन कानूनों के बीच सामाजिक दायित्वों के लिए समाज को तैयार करना कठिन कार्य है। फिर भी जहाज का समाज तैयार हुआ है।

उसी की बदौलत जहाजवाली नदी का ऊपरी हिस्सा आज भी रूंध के अपने पुराने रूप में जीवित है। देवरी-बांकाळा, गुवाड़ा, राड़ा, नांडू, लोसल, घेवर सभी गांवों में देवबनी, रखतबनी, देवओरण्य, रूंध आदि परंपरागत वनों के रूप में दिखाई देते हैं। यूं पूरी अरावली परम्परागत वन प्रबन्धन भूल गई सी लगती है; लेकिन जहाजवाली नदी में परंपरागत वन प्रबंधन आज भी बचा हुआ है। हमारे गांववासियों ने तरुण भारत संघ के साथ मिलकर अपनी सभी देवबनियों को ठीक किया है। इन क्षेत्रों में पीपल के पेड़ लगाये हैं। अब ये बनी पुनः हरी-भरी बन गई हैं। इन्हीं से जहाजवाली फिर से बहने लगी है। इसी से सीखकर आज अलवर के कई गांवों ने अपनी हरियाली-खुशहाली हासिल की है। उम्मीद है कि भारत के वन और पानी के मंत्रालय यह बात हमेशा याद रखेंगे।

जहाजवाली नदी में परंपरागत वन प्रबंधन आज भी बचा हुआ है। हमारे गांववासियों ने तरुण भारत संघ के साथ मिलकर अपनी सभी देवबनियों को ठीक किया है।

यह उस दौर की बात है, जब देवरी गांव की ग्रामसभा के जल संरक्षण प्रयासों की चर्चा सुनकर जहाजवाली नदी के किनारे बसने वाले कई गांवों का समाज प्रेरित होने लगा था। मेरे गांव राड़ा में भी गांव वालों को जिज्ञासा हुई कि तरुण भारत संघ के बारे में जानकारी ली जाये। इसी जिज्ञासा को लेकर अपने गांव से मैं और भाई प्रभातीलाल देवरी गुवाड़ा पहुंचे। वहां गोवर्धन जी तो नहीं मिले। बांकाळा गुवाड़ा में जगदीश पंडित जी चून मांगते हुए जरूर मिल गये। हमने उनसे भी जानकारी ली। गांव के अन्य कई लोगों से भी सम्पर्क किया। वहां हम देवरी–गुवाड़ा में चल रहे संघर्ष से भलि–भांति अवगत हुए। हमने उनसे अपने गांव आने का आग्रह किया।

जब मैं कार्यकर्ता बना

तीन दिन बाद गोवर्धन जी व लक्ष्मण सिंह जी हमारे गांव राड़ा पहुंचे। उन्होंने गांव की बैठक बुलाई। गांव के लोगों का कहना था कि सरकार के गलत कानूनों के कारण उनका जंगल उनके हाथ से निकल गया है। गांव के लोगों ने गोवर्धन जी व लक्ष्मण सिंह जी को गांव की तत्कालीन योजनाओं से अवगत कराया। गांव में चारा व पानी की बढ़ती हुई समस्या पर गहराई से चर्चा हुई। रास्ता स्पष्ट हुआ, तो गांव में एक ग्रामसभा का गठन हुआ। ग्रामसभा के अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष व अन्य सदस्य तय हुए। ग्रामसभा चर्चा के दौरान ही गांव में एक विद्यालय चलाने की बात भी आई। इसका उद्देश्य गांव के बच्चों को शिक्षित करने के अलावा यह मंशा भी थी कि इसी बहाने हमारे गांव में एक कार्यकर्ता हमेशा रहेगा। इस बात पर रुचि दिखाते हुए गोवर्धन जी व लक्ष्मण सिंह जी ने कहा – आपकी बात बहुत अच्छी और मानने योग्य है। किंतु इसके लिए गांव की ग्रामसभा को अपने ही गांव में से सज्जन, कर्मठ और दसवीं–ग्यारहवीं पढ़े–लिखे किसी युवा को चुनना होगा। इस पर ग्रामसभा ने मेरा (जगदीश) नाम सुझाया। गोवर्धन जी व लक्ष्मण सिंह जी तत्काल सहमत हो गये। साथ ही यह भी साफ किया कि जगदीश स्कूल तो चलायेगा, पर संस्था के पास अभी तनख्वाह का कोई इंतजाम नहीं है। कहीं से व्यवस्था होने पर कुछ सोचा जा सकता है। इस पर मैंने और पूरे गांव ने कहा – ''तनख्वाह की कोई बात ही नहीं है। हम हमारे गांव के लिए ही तो काम करेंगे। तनख्वाह किस बात की लेंगे!'' यह सब तय हो जाने के बाद मैंने पढ़ने के लिए बच्चों को तैयार किया। 12 मई, 1988 को श्री लक्ष्मीनारायण जी रिटायर्ड हैडमास्टर के कर कमलों द्वारा राड़ा विद्यालय का शुभारम्भ कराया। उसी दिन से मेरा संस्था जगत में प्रवेश हो गया। मैंने राड़ा में स्कूल चलाया। मुझे वह सब करना बहुत अच्छा लगता था। जब मैं संगठनात्मक कामों में ज्यादा व्यस्त हो गया, तो स्कूल चलाने हेतु मेरी जगह रामदयाल गुर्जर आए। कुछ समय बाद हरफूल गुर्जर और विनोद गुर्जर भी जुड़े। धीरे–धीरे लोगों में काम के प्रति आस्था बढ़ने लगी। लोग कागज पर कार्यकर्ता न होते हुए भी स्वैच्छिक भाव से कार्यकर्ता की तरह जुड़ गए। गांव बदलने लगा था और मैं भी। यह बदलाव तब भी अच्छा लगता था और आज भी।

जहाज में जल

बंधा भर-भर बही नदी

स्वाभाविक है कि जहाज के जलागम में जंगल संरक्षण का काम बिना पानी तो हो नहीं सकता। आखिरकार जल-जंगल एक-दूसरे के पूरक ही तो हैं। इसीलिए जंगल-जोहड़ का काम यहां साथ-साथ हुआ। पानी पहली जरूरत थी; लेकिन यहां जंगल के प्रति चेतना पहले आई; इलाका पानीदार बाद में हुआ। जहाजवाली नदी क्षेत्र में पानी के काम की शुरुआत सबसे पहले गुवाड़ा देवरी गांव के सेढवाला जोहड़ से हुई। साथ-साथ काला खेत के बांध का काम भी शुरू हुआ। इन कामों को करने के लिए गोवर्धन जी ने गांव में मीटिंग की। गांव के एक-चौथाई श्रमदान से काम करना तय किया। गांव के लोगों ने बड़े ही उत्साह और मेहनत से इन दोनों कामों को पूरा किया था। यह 1988 की बात है।

प्रारम्भिक दौर में ही गुवाड़ा व बांकाळा क्षेत्र में अमन सिंह जी ने जल, जंगल व भू संरक्षण के बहुत सारे काम कराये। इन्होंने गांव वालों के साथ मिलकर पूर्ण श्रमदान से पचास से अधिक छोटे-छोटे टक (लूज स्टोन चैकडैम) लगवाये। इनके कारण मिट्टी का कटान भी रुका और हरियाली के निशान भी लौटे।

जैसे-जैसे देवरी, गुवाड़ा, बांकाळा व राड़ा आदि गांवों में काम की शुरुआत होती गई, वैसे-वैसे वहां के लोगों से सम्पर्क भी गहरा होता गया। महिलाएं भी काम में आगे आने लगीं। उन्हीं दिनों तरुण भारत संघ की कार्यकर्ता जेसी जोसफ़ भी महिलाओं को स्वास्थ्य रक्षण सम्बन्धी जानकारी देने हेतु आने लगी थी। धीरे-धीरे महिलाओं से भी अपनेपन के सम्बन्ध हो गए। नतीजन महिलाएं जल संरक्षण के रचनात्मक कार्यों में और ज्यादा सहभागी होने लगीं।

वहां एक बाबा थे- मल्ला बाबा! वह चाहते थे कि जहाजवाली नदी का धारा स्रोत बना झरना पुनः बह निकले। यह झरना वर्ष 1985 में सूख गया था। उन्होंने भी झरने को पुनर्जीवित करने की कभी कोशिश की थी। तरुण भारत संघ के साथी वहीं उनके नजदीक दह पर जा पहुंचे। वहीं से दहड़ा वाला बांध का सूत्र निकला।

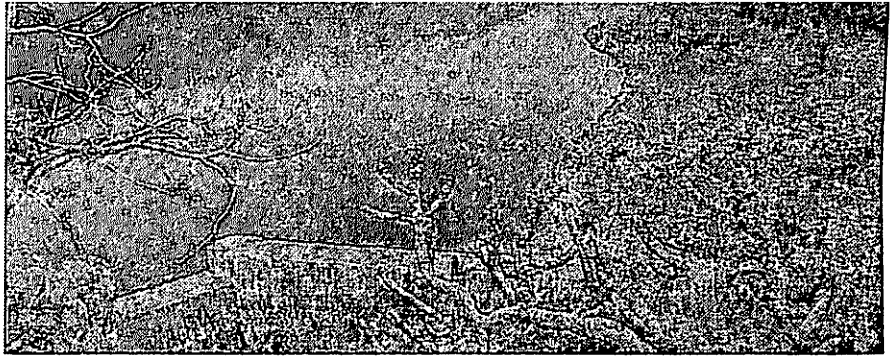

दहड़ा वाला बांध :- गुवाड़ा देवरी में सेढ़ वाले जोहड़, काला खेत (सुखसागर), और सुरजावाला (प्रेमसागर) का नवनिर्माण, कारोज वाला जोहड़, खारली का जोहड़ तथा गोया वाले जोहड़ का जीर्णोद्धार हो चुका था। इसके बाद के एक वक्त में एक बार मैं प्रभात पटेल बाबा के साथ देवरी से राड़ा जा रहा था। राड़ा जाकर फिर हमें तरुण भारत संघ में लौटना था। चलते-चलते रास्ते में हमें दहड़ा बांध की वर्तमान पाल के समान्तर खजूर का एक हरा पेड़ गिरा हुआ मिला। राहगीर नाण्डू से जाते वक्त व देवरी से आते वक्त पहाड़ की छाया में इसी पेड़ पर बैठकर विश्राम करते थे। हम लोग भी विश्राम करने के लिए वहां बैठ गये। बाबा पेड़ पर लेट गये। पेड़ पर लेटे-लेटे बाबा सोच रहे थे कि यहां एक बांध बन जाए, तो बहुत अच्छा हो। संयोग देखिये कि उसी समय मेरे दिमाग में भी यही विचार चल रहा था। इतनी देर में बाबा ने अपने मन की बात कह ही दी। उनकी बात सुनकर मैंने और ज्यादा स्पष्ट करने के उद्देश्य से पूछा - बाबा! यहां बांध बनने से क्या फायदा होगा ? मेरे इस सवाल पर पटेल बाबा ने बताया कि वहां बांध बन जाने से देवरी, नाण्डू, मुरलीपुरा, लोसल, घेवर आदि गांवों के कुओं का जलस्तर बढ़ेगा। जहाज का नाला हमेशा बहता रहेगा। देवरी गुवाड़ा की गाय-भैंसों और जंगली जानवरों को बारह महीनों पानी मिलेगा।

इसे बनाने के लिए हमारे पास पैसा कहां से आयेगा ? मैंने बाबा से पूछा। अपनी समस्या रखी। फिर मैंने एक पल सोचा कि चलो, आश्रम चलकर भाईसाहब से प्रार्थना करेंगे। भरोसा था कि संस्था के हिस्से का तो वह कहीं से भी इंतजाम कर देंगे; पर एक-चौथाई श्रमदान का इंतजाम कैसे होगा ?

उन्हीं दिनों खनन विरोधी आंदोलन भी चल रहा था। बौखलाए खान मालिक भी नाण्डू घेवर तक दौरा लगाकर माहौल खराब कर रहे थे। मन में एक उपाय सूझा। मल्ला बाबा व खेतिहर लोगों से बात करें। जहाज पहुंचकर मल्ला बाबा से बात की। बाबा को बात जंच गई। यह उनकी आत्मा की बात थी। बाबा ने कहा- हाँ! यह बहुत ही पुण्य और इस

इलाके की भलाई का काम है। आप भी प्रयास करो; मैं भी करूंगा। हम सब मिलकर इस बांध से प्रभावित होने वाले लोगों को श्रमदान के लिए तैयार करेंगे।

बाबा का यह आशीर्वाद लेकर हम भीकमपुरा पहुंचे। वहां राजेन्द्र जी भाईसाहब से दहड़ा वाले बांध के बारे में चर्चा की। उन्हें इस बांध से भविष्य में होने वाले लाभ से भी अवगत कराया। वर्तमान में खानों के विरुद्ध चल रहे आंदोलन में समाज को कैसे जोड़ा जाय ? इस बात पर भी चर्चा की। उन दिनों वहां के लोग कुओं में पानी की कमी हो जाने के कारण खानों में काम करते थे । सोचा कि जब वहां पर बांध बनने लगेंगे, तो नदी किनारे वाले सभी कुओं का जल स्तर बढ़ेगा। इससे लोगों का स्थानीय रोजगार भी पक्का होगा। बांध के कमान्डिंग एरिया वाले समाज के साथ ऐसी समझाइश करने का तय करके मैं पटेल बाबा के साथ रूपवास, चावा का बास, मुरलीपुरा और नाण्डू गया। वहां सम्पर्क कर लोगों से दहड़ा वाले बांध में सहयोग करने की अपील की। रूपवास वाले समाज ने पूर्ण सहमति दे दी। अनाज इकट्ठा करके देने का वादा भी किया। उन्होंने स्वयं दहड़ा में पहुंचकर डिजाइन भी तय किया। दिल्ली में अपनी एक फैक्ट्री चला रहे चावा का बास के मुंशी शर्मा जी ने 50 कट्टे सीमेन्ट या 51 सौ रुपये देने का वादा किया। विनोद शर्मा ने ग्यारह सौ रुपये दिये। समाज के इस सकारात्मक भाव ने हमें हिम्मत दी। हमने ये सारी बातें मल्ला बाबा को सुनाईं। बाबा ने इस प्रयास को सराहा। बाबा ने खुद मदद दी। बस! फिर क्या था। जल्द ही सब तैयारी हो गई। नींव का मुहूर्त देखकर नींव खुदाई का कार्य शुरू कर दिया। बाबूलाल प्रजापत अनावड़ा की मदद से बजरी डालने का काम भी शुरू हो गया। मूलसिंह घेवर ने कारीगर के रूप में नींव खुदाई का कार्य स्वयं शुरू किया।

इतने में शगुन हुआ। एक रात मैं, मूल सिंह जी और बाबूलाल जी सो रहे थे। रात करीब एक बजे अचानक शेर की दहाड़ गूंज उठी। शेर तीन बार तेज आवाज में दहाड़ा। हम घबरा गये। रात अंधियारी थी। शेर के दर्शन स्पष्ट रूप से तो नहीं हुए, पर बिल्कुल नजदीक से आवाज आने के कारण हम सब अपने आप को बुरी हालत में महसूस कर रहे थे। बाद में शेर बहुत दूर जाकर आवाज करने लगा। हम बच गये। बाबूलाल प्रजापत ने कहा- ''ओ भाई! क्यूं डरपै छै। काम की शुरुआत में शेर का आवा सूं सगुन होवे छ। अब या बांध इंडे जरूर बनेगो।'' पहले यह डर था कि वन विभाग व खान माफिया को समाज का यह उपक्रम पसंद नहीं आयेगा। यही हुआ भी। वन विभाग के रेंजर मानसिंह मीणा ने एक बार बांध की नींव खुदाई का सारा समान भरकर टहला रेंज में पहुंचा दिया था। पर बाबा के निर्देश पर प्रधान सचिव, वन विभाग से सीधा सम्पर्क करने पर सामान

वापस दहड़ा में पहुंचा दिया गया। जन दबाव के कारण छोटी-छोटी नापाक हरकतें कुछ समय के लिए जैसे थम गईं। इस प्रकार बांध बनाने का काम शुरू तो हो गया, लेकिन वन विभाग के स्थानीय कर्मी भीतर ही भीतर गुस्सा थे। कानूनी प्रक्रिया में लोगों को फंसाने की भी कोशिश की। कोशिश असफल होने पर वन विभाग ने कुछ ज़्यादा ही पढ़े-लिखों का रास्ता सोचा। एक नामी पर्यावरणविद् को 'वाटरशेड इम्पैक्ट ऑन वाइल्डलाइफ एण्ड फॉरेस्ट' विषय पर अध्ययन सौंप दिया। चाल उल्टी पड़ी। अध्ययन ने दहड़ा बांध को व्यापक सकारात्मक प्रभाव वाला पाया। उसके बाद सभी को भाने लगा हमारा यह दहड़ा वाला बांध!!

जहाजवाली नदी पर बांध बनने से हुए लाभ और जंगलात प्रमुख की बदली धारणा से उत्साहित होकर जहाजवाले बंधे के ऊपर देवरी, बांकाळा और गुवाड़ा के लोगों ने 25 छोटे-बड़े जोहड़ तथा बांध और बना लिए। उनमें से बीस का पानी जहाजवाली नदी की ही धारा में आता है। अब पालतू पशुओं और जंगली जानवरों के लिए पानी की कोई कमी नहीं रह गई है। सरिस्का कोर के ये तीनों गांव पानी के काम से पहले अपने मवेशियों को लेकर फागुन के महीने में ही नीचे आ जाते थे। वह भी कैसा

एक निष्कर्ष ने बदली धारणा

दहड़ा वाला बांध सरीखी जल संरचनाओं के बनने के बाद वन विभाग स्थानीय जीव व वन पर उनके प्रभाव की जानकारी हेतु किए गए अध्ययन का निष्कर्ष :

''बांध बनने से अब जंगल में पानी की कमी नहीं रही है। जंगली जीवों को सहज ही पानी उपलब्ध हो गया है। पीने के लिए कई जगह पानी उपलब्ध होने से अब जंगली जीवों का शिकार करने वाले शिकारियों को मुश्किलें आएंगी। इस बांध के बनने से मवेशियों और जंगली जीवों में पानी के लिए जो संघर्ष चलता था, खत्म हो गया है। पहले जंगली जीव कुओं पर आकर मवेशियों का पानी पी जाते थे। इससे गांव वालों को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता था। जाहिर है कि इस तरह के बांध जंगल में और बनने चाहिए। इससे जंगल और जंगली जानवरों को बहुत ही लाभ होगा। अध्ययन ने यह भी कहा कि इस बांध के बनने से जहाजवाली नदी में पानी दिखाई देने लगा है।''

इस अध्ययन ने बड़ा प्रभाव डाला। इस अध्ययन के बाद राजस्थान सरकार के तत्कालीन मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक ने भविष्य में जंगल संरक्षण का काम करने के लिए तरुण भारत संघ से स्वयं अनुरोध किया। कहा – ''तरुण भारत संघ इसी तरह के रचना कार्य करता रहे। सरकार उसके कार्यों में मदद करेगी।'' सचमुच! फिर हमने जंगलात के साथ मिलकर कई अच्छे काम किये। जंगलात हमारा सहयोगी हो गया।

जमाना था! तब यहां की महिलाएं तक राजनेताओं से कहा करती थीं -वोट तो तू लेजा। पण तू हमकूं ज्यानबरन कै बराबर तो कर।

एक जमाना ऐसा भी था, जब यहां आदमी और जानवर एक ही घाट पर पानी पीते थे। किंतु आज़ादी जानवरों के हिस्से में ही अधिक थी। जानवर तो बेफिक्री से घूम सकते थे, लेकिन आदमी नाजायज आबादी होने की पीड़ा झेलते हुए गांव की सीमा में ही रहने को मजबूर थे।

'चौथी दुनिया' नामक एक नामी साप्ताहिक के तत्कालीन पत्रकार आलोक पुराणिक ने अपने अध्ययन के बाद लिखा था- ऐसे 'लोकतांत्रिक सम्भाव' की कल्पना करने से पहले ही शायद तुलसीदास जी की प्रतिभा जवाब दे गई होगी। तब ही तो वह इससे ज्यादा नहीं लिख पाये कि रामराज में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। अब का इतिहास भविष्य में जब कभी भी लिखा जाएगा, तब इस बात पर बहस करने की संभावना बराबर बनी रहेगी कि बीसवीं सदी के आखिर में इंसान और जानवरों के एक ही जोहड़ से पानी पीने के सवाल से लोकतांत्रिक मूल्य किस तरह जुड़े हुए थे ?

आलोक पुराणिक, पत्रकार
चौथी दुनिया 1988-89

अब का इतिहास भविष्य में जब कभी भी लिखा जाएगा, तब इस बात पर बहस करने की संभावना बराबर बनी रहेगी कि बीसवीं सदी के आखिर में इंसान और जानवरों के एक ही जोहड़ से पानी पीने के सवाल से लोकतांत्रिक मूल्य किस तरह जुड़े हुए थे ?

राड़ा-नाण्डू के काम : हमारे राड़ा में भी अच्छे काम हुए। सोना वाला बांध और मोड़ा वाला एनीकट से गांव में सबसे ज्यादा लाभ हुआ। फिर एक-एक कर के गांव में कुल दस जोहड़-बांध बन गये। इन सारे कामों से राड़ा गांव की कायापलट ही हो गई।

नाण्डू गांव में मेरे साथ रामदयाल, सतीश व कुंजबिहारी ने जुड़कर काम किया। इस गांव में सबसे पहले राधेश्याम वाले जोहड़ का काम हुआ। फिर सब ने अलग-अलग गांवों में और भी बहुत सारे काम कराये। नाण्डू गांव जहाजवाली नदी के बीच में होने के कारण सभी कार्यकर्ताओं का इधर से आना-जाना होता था। इसलिए यहां काम अधिक नहीं होने पर भी सम्पर्क ज्यादा ही होता था।

बाद के दौर में जब यहां संस्था की कार्यकत्री भागीरथी राठौर का आना-जाना हुआ, तो यहां की निर्मला शर्मा भी संस्था से जुड़ गईं। दोनों ने मिलकर केवल नाण्डू गांव में

ही नहीं, बल्कि पूरे नदी क्षेत्र में महिलाओं को अधिक से अधिक संगठनात्मक व रचनात्मक रूप से जोड़ने का काम किया। महिला समूह भी बनाये। जब काम और बढ़ा तो यहां के सुभाष शर्मा भी संस्था से जुड़ गये। सुभाष जी ने मेरे व अन्य साथियों के साथ मिलकर पूरे नदी क्षेत्र में पानी के काम को आगे बढ़ाने में मदद की। निर्मला शर्मा और सुभाष शर्मा अभी भी स्वैच्छिक रूप से जल-जंगल-जमीन के संरक्षण हेतु साझे कामों में सहभागी रहते हैं।

एक मिसाल लोसल गूजरान : लोसल गूजरान के उत्तर-पूर्व में एक स्थान है- बीलूण्डा! बीलूण्डा में एक बांध बनाने के लिए गांव वालों ने पूर्व में सरकार से काफी प्रयास किये थे। किन्तु तब वहां बांध नहीं बन पाया था। जब गांव वालों ने सुना कि देवरी गुवाड़ा में तरुण भारत संघ व गांव के संयुक्त सहयोग से पानी के कई काम हो गये हैं, तो उन्होंने भी तरुण भारत संघ से सहयोग लेना चाहा। पर गांव वालों के पास कोई

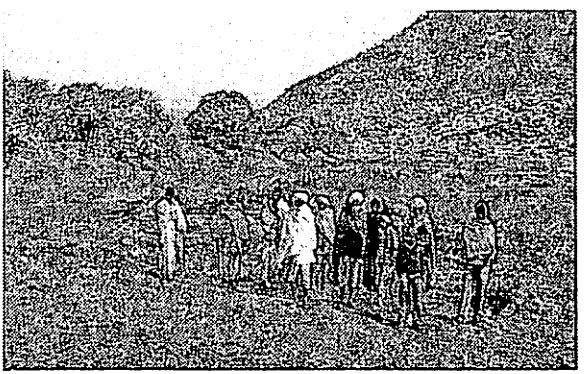

बीलूण्डा बांध बनाने के लिए गांव वालों ने पूर्व में सरकार से काफी प्रयास किये थे। किन्तु तब वहां बांध नहीं बन पाया था। अंतत: गांव खुद खड़ा हुआ। बांध बना और उसकी रचना का सुख गांव के मानस पर छा गया।

सम्पर्क सूत्र नहीं था। इस बीच इन्होंने अपने पड़ोसी गांव राड़ा में जोहड़ का काम चलते देखा। उन्हें बहुत अच्छा लगा। काम करने का तरीका भी समझ में आया। ललक थी ही; उन्होंने सम्पर्क सूत्र खुद ढूंढ़ निकाले। सूत्र बने राड़ा के श्रीकिशन जी व प्रभातीलाल डोई। उन्होंने बांध के संबंध में गांव वालों को गोवर्धन जी से मिलने को कहा। संयोग देखिए गोवर्धन जी लोसल गूजरान आने को खुद तैयार हो गये। गांव को श्रमदान के लिए तैयार करने में थोड़ा वक्त लगा। इस दौरान शिक्षा का काम भी हुआ।

1989 में दीवाली के आस-पास लोसल गूजरान गांव में बीलूण्डा बांध का काम शुरू हुआ। बीलूण्डा बांध का श्रेय इस गांव के लक्ष्मण गुर्जर को जाता है। लक्ष्मण ने ही ऊमरी के रामकिशन, राड़ा गांव के श्रीकिशन जी गुर्जर, भाई प्रभात डोई तथा श्रवण शर्मा को साथ लेकर इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। गांव के लोग उन्हें चाहने लगे

थे। उनकी बात भी मानने लगे थे। श्रवण जी ने बीलूण्डा बांध बनाने के लिए गांव के लोगों का श्रमदान जुटाने हेतु ग्रामसभा का निर्माण कराया। श्रमदान की उगाही के अलावा जंगल को बचाने हेतु कानून-कायदे व दस्तूर भी बनवाये। ग्रामकोष बनवाया। श्रमदान की तैयारी हो जाने के बाद बीलूण्डा बांध का काम दीवाली से शुरू होकर अगले जेठ मास की पूर्णिमा तक निरन्तर चलता रहा। पूरे आठ महीने के अथक प्रयास से काम पूरा हो पाया। गांव आनन्दित हो उठा। अपनी रचना का सुख गांव के मानस पर छा गया। इसका स्वाद जो चखे, वही जाने।

लोसन की ग्रामसभा आपसी सद्भाव की भी एक मिसाल है। यहां के लोग आज भी गांव के आपसी विवाद को यहीं निपटा देते हैं। लोसल गूजरान ऐसा गांव है, जहां आपसी लड़ाई-झगड़े का एक भी मुकदमा अदालत में नहीं है।

प्रेरणा ने जुटाए मोती: लोसल गूजरान के इस काम ने प्रेरक बयार बहाई। परिणामस्वरूप इस वर्ष कुछ और भी काम हुए। देवरी, बांकाळा व गुवाड़ा में भी कई नये काम हुए। देवरी में कारोज वाले जोहड़ का काम हुआ। बांकाळा में स्कूल के पास वाली जोहड़ी और रामसागर बांध बना। गुवाड़ा में भी दो और जोहड़ बने। राड़ा में गांडरवाली जोहड़ी व फूटा बांध का काम हुआ। इसी वर्ष लोसल ब्राह्मणान में भी जल संरक्षण की चेतना जागी। उसने भी जल संरक्षण का काम हाथ में लिया।

अच्छी बात यह थी कि गांवों की ग्राम सभाएं ज्यों-ज्यों सशक्त हो रही थीं, गांवों में पानी के काम की मांग त्यों-त्यों बढ़ती जा रही थी। 1990 में देवरी, राड़ा और लोसल गूजरान में भी कई नये काम हुए जिनमें लोसल का बैठकाला बांध प्रमुख है। 1991 में चतारा वाला व एक अन्य बांध बना। चावा का बास में जोबनाळी वाला जोहड़ से पानी के काम की शुरुआत हुई। अगले साल 1992 में चावा का बास में सेढ़वाला जोहड़ का काम हुआ। इसी तरह बांकाळा, मुरलीपुरा आदि गांवों में कई ढांचे बने।

रूपबास : रूपबास में लोगों के पास पैसे की कमी भी थी और मन में डर भी था। रूपबास में पानी और जंगल बचाने में छोटेलाल शर्मा, रामेश्वर शर्मा, छोटेलाल सैनी, जवाहरलाल सैनी, नवरत्या मीणा, रामजी लाल मीणा आदि लोग सक्रिय रहे। धीरे-धीरे लोगों को तैयार किया गया कि चलो! इससे गांव को कम से कम कुछ काम-धंधा तो मिल ही जायेगा। लोग श्रमदान के लिए तैयार हुए। इस तरह से बांध बनाने की शुरुआत हुई। धीरे-धीरे एक बांध बनकर तैयार हो गया। इससे लोगों के मन में जो आशंकाएं थीं, वे सब निकल गईं। संस्था के साथ काम करने का विश्वास बढ़ गया। उसके बाद नदी में एक एनीकट और बना। दूसरे एनीकट में कुछ लोगों ने पसीना बहाया

और कुछ ने पैसे के रूप में श्रमदान दिया। इस प्रकार एक के बाद एक गांव में पांच काम हो गये। इन्हीं कामों को देखने कभी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व प्रमुख श्री सुदर्शन

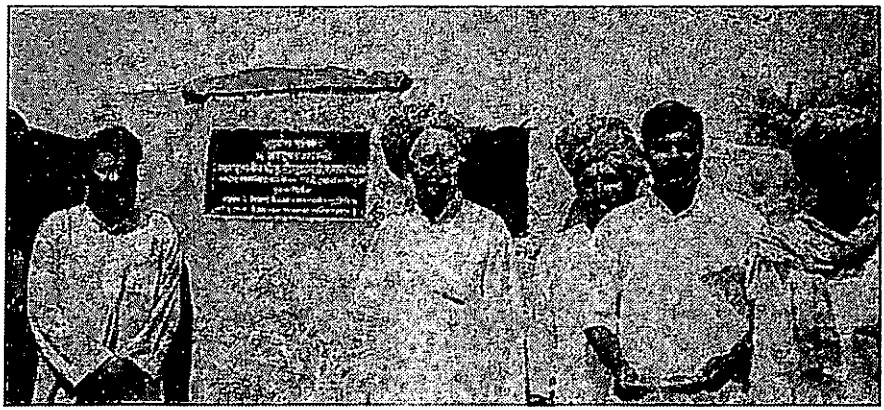

जी पधारे थे। इससे प्रभावित होकर उन्होंने संघ के जयपुर अधिवेशन में ऐसे रचनात्मक कार्यों पर सत्र चर्चा की। गांव ने भी कृतज्ञ भाव से अपने एक एनीकट का नाम ही 'सुदर्शन एनीकट' रख दिया। गांव कभी भी कृतघ्न नहीं होता। यही उसका गुण है।

घेवर सदैव आगे : रामजीलाल चौबे बताते हैं कि उनके गांव घेवर में सबसे पहले तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता श्रवण जी आये थे। उन्होंने ही लोगों को इकट्ठा किया था। गांव ने सबसे पहले 1988 में हनुमान जी वाले पुराने जोहड़ का काम करने का विचार किया। उसमें जो बरसात का पानी आता था, वह रुकता नहीं था। पाल टूट जाती थी। पानी बहकर चला जाता था। इस काम के होने से गांव वालों का आत्मविश्वास बढा। फिर धारूवाला बांध का काम शुरू करने का तय हुआ। यह नया बांध था। काम शुरू करने का तो तय हो गया, लेकिन श्रमदान कौन देगा? कहां से देंगे? कितना देंगे? यह अभी तक तय नहीं हुआ था।

समस्या यह थी कि लोग गांव में समय पर नहीं मिलते थे। मजदूरी के लिए बाहर चले जाते थे। लोगों के पास पैसे की कमी थी। इसलिए उगाही करने में दिक्कत आई। मिट्टी भी दूर थी। वहां तक जाने में परेशानी आ रही थी। लोगों के साथ बार-बार मीटिंग करके श्रमदान उगाहने का काम किया गया। जोहड़ बनकर तैयार भी नहीं हुआ था कि बरसात आ गई। इस कारण पाल थोड़ा कट गयी। फिर से श्रमदान इकट्ठा करके किसी तरह बांध को पूरा किया। काफी दिक्कत रही। लेकिन जल्द ही नतीजा आया। बांध भरने पर रिचार्ज बढ़ा। खाली कुओं में परछाइयां दिखने लगी। पानी के मीठे स्पर्श ने

शीतलता पहुंचाई। गांव पीछे आई सारी दिक्कतें भूल गया। अपने हाथों किए काम से खुद के पानीदार होने के एहसास ने मन में जैसे एक गौरव भर दिया।

इसके बाद इसी गांव के सुगन सिंह ज़ी ने अपने ही नाम पर सुगनसागर नामक जोहड़ बनाया। सुगन सिंह जी पानी के काम के लिए लोगों को हमेशा प्रेरित करते रहते थे। जब तक रहे, गांव के भले के लिए ही काम करते रहे। पानी के काम में उनके योगदान को किसी भी तौर पर भुलाया नहीं जा सकता।

बाद में गोवर्धन जी के साथ कार्यकर्ताओं की एक नाटक मण्डली भी यहां आई। जिसमें नवनीत त्रिवेदी, कुंजबिहारी, हीरालाल गुर्जर व मिश्री लाल वगैरह थे। उन्होंने नाटक के माध्यम से पानी के काम के साथ-साथ जंगल बचाने की भी प्रेरणा दी। यह अच्छा तरीका रहा। इसके बाद घेवर गांव में कुछ संजीदा लोग तैयार हुए। इनमें देवीसहाय जी चौबे, प्रहलादजी मिश्रा, मूलचन्द्र गुप्ता, रामवतार गुप्ता, मिश्रीलाल बैरवा, रामजीलाल चौबे, हरिकिशन जांगिड़ आदि ने अपने गांव की महिमा बढ़ाने वाले कदम उठाये। घेवर गांव में उक्त लोगों के प्रयास से हमेशा संगठन कायम है। अपने गांव में जोहड़-तालाबों के निर्माण कार्य को इन्होंने हमेशा आगे रखा। घेवर गांव में निर्मित जोहड़-तालाबों का तत्कालीन जिला कलेक्टर श्री मनोहरकांत जी ने स्वयं आकर अवलोकन किया था।

घेवर गांव जहाजवाली नदी के किनारे पर बसा हुआ है। इस गांव का पानी जहाजवाली नदी के प्रवाह में बड़ा सहायक है। परिणामस्वरूप जिन बच्चों को अपना पूरा दिन मवेशी चराने में लगाना पड़ता था, वे अब पढ़ाई के रास्ते पर मुड़ गए हैं।

122 जोहड़- बांध : इन सब कामों ने ऐसा प्रभाव छोड़ा कि जिसने पानी का काम नहीं किया, वही गांव शर्म महसूस करने लगा। इस एहसास ने गांवों को एकजुट भी किया और ऊर्जावान भी बनाया। जहाजवाली नदी क्षेत्र में अब तक 122 जोहड़-बांध बन गये हैं। देवरी, गुवाड़ा व बांकाळा में कुल 25 काम हुए हैं। इनमें से चार जोहड़ों का पानी रूपारेल नदी में, एक जोहड़ का पलासान नदी में और 20 जोहड़ों का पानी जहाजवाली नदी में आता है। इसी प्रकार राड़ा में 10, नाण्डू में 3, राड़ी में 5, लोसल गूजरान में 13, लोसल ब्राह्मणान में 21, मुरलीपुरा में 9, चावा का बास में 7, नायाळा में 4, लाड़ा का गुवाड़ा में 5, घेवर में 9, राजड़ोली में 1, रूपबास में 5, धोळा राड़ा में 3, तालाब में 5 और टहला में 2 जोहड़-बांधों का निर्माण हुआ है। इन बंधों के बनने से पानी ही नहीं रुका, लोग भी पानीदार हुए हैं।

जहाज का पुण्य

दोगुनी इज्जतः चौगुनी पैदावार

पानी के छोटे-छोटे काम... छोटी-छोटी जल संरचनाओं ने अलवर के इस इलाके में कुछ ऐसा कमाल किया है कि आप किसी भी गांव चले जाएं... किसी से भी बात करें... पानी के पुण्य व प्रताप को याद करने के किस्से आम हैं। लोग अपनी गलती व सुधार को याद करना नहीं भूलते। कहते हैं कि पहले कुओं में पीने भर को ही पानी था। अगर ज्यादा बरसात होती थी, तो ही पैदावार कर पाते थे। मिट्टी पानी के साथ बह जाती थी। लोग गांव छोड़ कर मजदूरी करने दिल्ली-जयपुर चले जाते थे। अब जब हम सब गांव वालों की मेहनत से खूब पानी हो गया, तो बाहर गये हुए लोग भी वापस आ गये। सभी के साझे से खेतों में काम करने से पैदावार भी बढ़कर चौगुनी हो गई है। गांव हर तरह की फसलें करने लगे हैं। पर लोग कम पानी की फसल को प्राथमिकता देते हैं। स्वयं अनुशासन की यह समझदारी हिन्दोस्तान के दूसरे इलाकों को राजस्थान से सीखनी चाहिए। पहले तो कुओं में 40-50 फीट पर पानी मिलता था। अब कुओं में 6-7 फीट पर ही पानी मिल जाता है। कहीं-कहीं तो कुओं में 2-3 फीट पर भी पानी मिल जाता है। आज जहाजवाली नदी में पानी रहता है। राजस्थान में ऐसी उपलब्धता क्या उल्लेखनीय तथ्य नहीं हैं?

हालांकि जहाज के जंगल के कई गांव सरकार की नजर में आज भी नाजायज ही हैं; फिर भी गांव वालों में आज संगठन से उपजा आत्मविश्वास मौजूद है। इनका यही आत्मविश्वास सरकार की नीति-नीयत को हाशिये पर रखने के लिए काफी है। आज जो गांव के गांव सरसब्ज और गुलज़ार दिखते हैं, वह किसकी वजह से ? पानी के कारण ही ना। यह पानी सरकार नहीं लाई। स्थानीय गांवों ने खुद अपने श्रम से यह पानी संजोया है। इनसे गांवों में आज अनाज की पैदावार कई गुणा बढ़ी है। कुओं का जलस्तर इतना बढ़ गया है कि देखकर आखें चमक उठती हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा, आय, खेती... सभी में तरक्की है। अपराध व बेबसी दोनों में कमी आई है।

लौट आई लय : 2009 के वर्तमान अकाल में भी नदी बही। राजस्थान में यह छोटी बात नहीं। यह स्वयं के श्रम का ही प्रताप है। नदी की अविरल धारा में गूंजती रागिनी

की तान से देवरी गांव के लोगों का जीवन भी लयबद्ध हो गया है। ध्रुपद के अनोखे राग की तरह यहां सुबह होती है और लोग प्यार और संगठन का गीत गाते हुए अपने-अपने काम पर जाते हैं। यह जहाजवाली नदी से उपजी आस्था ही तो है जिसने देवरी गांव को पूरी तरह 'देवरी' ही बना दिया है।

देवरी वह गांव है जो कभी पानी के अभाव में जी रहा था। जहां रिश्वतखोर वन कर्मचारी लकड़ी के एक परमिट पर छमाही के हिसाब से ढाई किलो घी वसूलते थे। सचमुच! कितने बुरे दिन थे! जंगलात विभाग का जंगलराज उत्पीड़न, शोषण और आतंक की अपनी सबसे खौफनाक शक्ल में यहां मौजूद था। ऊपर से चौतरफा पसरा सूखे का आलम! अस्सी के दशक के अन्त में सूखे ने यूं तो पूरे राजस्थान में ही तबाही मचा दी थी, पर सरिस्का के कोर क्षेत्र के इस गांव में प्रशासन और जंगलात विभाग की बेरुखी और उपेक्षा से यह त्रासदी और दर्दनाक साबित हो रही थी।

देवरी गांव की धारणा ठीक ही है कि यदि आज जहाजवाली नदी बहने लगी है, तो यह काम उनके संगठन और मेहनत के बल पर ही संभव हुआ है। गांवों में जो हालात बदले हैं, वे गांव के संगठन की बदौलत ही बदले हैं। उनकी आस्था व बड़प्पन इस सोच में दिखता है कि वे साथ ही यह भी सोचते हैं कि हालात बदलने में उनकी सक्षमता के पीछे जरूर कोई अवतारी शक्ति रही है। जो दिखती नहीं। बस! महसूस होती है। वे कहते हैं-अब ऐसा बदलाव हमारे गांव में ही नहीं, आस-पास के सैकड़ों गांवों में हो चुका है। एक-दूसरे गांव के काम को देखकर हमें ताकत मिलती है। आज हमारे काम को देखने व उससे सीखने के लिए देशभर से लोग आते हैं। इस तरह के कामों से हमारे दूरदराज के अन्य गांवों के दुःखों का भी हरण होगा। उन गांवों में भी जरूर कोई ऐसा ही अवतार पैदा होगा, जो सारे गांव को साझा करके सुख व समृद्धि लायेगा।

यह कितना सुंदर भाव है ! अब देवरी गांव में सचमुच जैसे देवों का वास हो गया है। अब तो यह अपने नाम को सार्थक करने लगा है। पहले हमें कभी समझ में नहीं आया था कि इस गांव का नाम देवरी क्यों पड़ा होगा? लेकिन अब यह समझ में आ गया है कि चारों तरफ सघन हरियाली, बाघ, बकरी तथा आदमी इस भूमि पर एक साथ क्यों रहते हैं। यह सब किसी देवभूमि या तपोभूमि पर ही संभव है। तभी हमारे पुरखों ने इसे 'देवरी' नाम दिया होगा।

पहले हमें कभी समझ में नहीं आया था कि इस गांव का नाम देवरी क्यों पड़ा होगा? लेकिन अब यह समझ में आ गया है कि बाघ, बकरी तथा आदमी यहां एक साथ क्यों रहते हैं।

यक्ष प्रश्न ये सारे घटनाक्रम इस बात के साक्षी हैं कि नदियां एक तथाकथित नाजायज आबादी को कैसे जायज सिद्ध कर देती हैं। समाज पानीदार हो, तो लोग अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ लेते हैं। जहाजवाली नदी का पुनर्जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। लेकिन क्या पानी का यह प्रताप हमेशा कायम रहेगा ? क्या जहाज हमेशा बहती रहेगी ? क्या गांव हमेशा कुशासन से बचा रह सकेगा ? क्या जहाज की जल सरंचनाएं फिर कभी बदहाल व बेकार नहीं होंगी ? उत्तर है - नहीं! ऐसी आफतें फिर कभी इस इलाके में नहीं आयेंगी। बशर्ते लोग सो न जायें।... बशर्ते लालच हमारी आंखों पर पट्टी नहीं बांध दे। यदि ऐसा हुआ, तो जल्द ही वक्त वापस 80 के दशक में लौट जाएगा। नदी फिर सूखेगी।

जहाज का एक परसेन्ट

एक अनुभव : एक सीख

1987 के दौरान तरुण भारत संघ के कार्यक्षेत्र में भीषण अकाल था। उसी दौरान 10-11-12 फरवरी को प्रसिद्ध सर्वोदयी नेता स्व. श्री सिद्धराज जी ढड्ढा भी तरुण भारत संघ व कुछ अन्य संगठनों द्वारा की जाने वाली पदयात्रा में अलवर आये थे। उन्होंने उस समय का अपना अनुभव लिखते हुए एक प्रेरक प्रसंग का जिक्र किया था; जिसे मैं नई पढ़ाई पढ़ गए कुछ लोगों की दृष्टि में 'गंवार' कहे जाने वाले ग्रामीणों की असल गौरवगाथा मानकर कभी नहीं भूलता।

एक गांव में 'बंधी' बनाने के काम को देखकर हम लोग पगडंडी के रास्ते खेतों में होते हुए वापस आ रहे थे। एक कुएं के पास खेत में एक महिला मेथी-पालक निकाल रही थी। हम पास से गुजरे, तो उसने हमारे स्थानीय साथी से पूछा - 'मेथी चाहिए क्या ? ''ना'' कहकर हम लोग आगे बढ़ गये। लेकिन मुझे लगा कि शायद वह महिला मेथी बेचना चाहती है। हमें भी खेत की ताजा मेथी खाने को मिलेगी... इस दृष्टि से मैंने साथी से कहा - ''क्या हर्ज है, थोड़ी सी मेथी ले लें!'' हम लोगों ने वापस मुड़कर उस महिला से मेथी-पालक मांगा। महिला ने दो-तीन अंजलियां भरकर दे दी। अपना उपकार जताने की भावना से मेरा शहरी दिमाग झट पूछ बैठा-''कितने पैसे हुए ?'' महिला अचम्भे में पड़ गयी। मेरी ओर देखने लगी। उसके भाव से ऐसा लग रहा था, जैसे वह कह रही हो कि यह कैसा फूहड़ आदमी है। हमारे साथी ने मुझे तत्काल कहा - 'ये पैसे से नहीं, वैसे ही दे रही है।' बात मेरे ध्यान में आ गयी और मैं तत्काल झेंप गया। मेरी आंखें नीचे हो गयीं। मुझे यह कभी कल्पना ही नहीं थी कि हमें रास्ते से गुजरता हुआ देखकर खेत में पत्तियां तोड़ती कोई ग्रामीण महिला खुद आगे होकर बिना पैसे साग-सब्जी देने के लिए यूं हमें टोकेगी। पैसे की बात सुनकर उस महिला ने जिस प्रकार अचम्भे भरी

मुझे यह कभी कल्पना ही नहीं थी कि हमें रास्ते से गुजरता हुआ देखकर खेत में पत्तियां तोड़ती कोई ग्रामीण महिला खुद आगे होकर बिना पैसे साग-सब्जी देने के लिए यूं हमें टोकेगी।

आखों से मेरी ओर देखा, उससे हम शहरी लोगों की संस्कारहीनता मेरे सामने स्पष्ट हो गयी। हम समझते हैं कि सारी दुनिया पैसे से ही चलती है। हम लोग आइने में अपनी ही तस्वीर देखते रहते हैं।

उस वृद्ध महिला ने बिना बोले जो कह दिया था; वही मुझे लज्जित कर देने के लिए काफी था। लेकिन शायद उसे यह ध्यान भी आ गया कि इस प्रकार सामने वाले को लज्जित करना ठीक नहीं है। उसने दो-चार क्षण बाद हंसकर कहा - ''हां पीसा तो ल्यूं ली, पण रिपया सौ से कम कोनै ल्यूं।'' यह कहकर वह फिर से हंस पड़ी। कुछ क्षण पहले का उसका अचम्भा और मेरी लज्जा... दोनों ही इस एक वाक्य में बह गये। हम पढ़े-लिखे शहरी लोग समझते हैं कि गांव के अनपढ़ लोग गंवार, संस्कारहीन और हमारी ही तरह लालची होते हैं। पर उस महिला के उस एक वाक्य में कितनी शालीनता और कितना सहज विनोद भरा था।''

इस स्व. सिद्धराज जी के इस अनुभव से हम अपने आप का मूल्यांकन कर सकते हैं। जानना चाहिए कि लेना... गरीबी है और देना... अमीरी। और इस दृष्टि से भारत के गांव बहुत अमीर हैं!... सभ्य भी!! जहाजवाली नदी के गांव भी ऐसे ही हैं। नदी किसी प्रोजेक्ट-फंड से जिंदा नहीं हो सकती। इसी संस्कार से कोई गांव अपनी नदी जीवित कर सकता है। जहाजवाली की दास्तान भी ऐसे स्वभाव व संस्कारों पर खड़ी हुई कहानी है। क्या आप ऐसे गौरवशाली चेहरों से परिचित नहीं होना चाहेंगे?

जहाजवाली नदी पुनर्जीवन के इस एक परसेन्ट ने भी कभी प्रचार नही चाहा। लेकिन इन्हें याद करना जरूरी है। शायद इनकी बात भारत में ऐसे एक परसेन्ट को दो परसेन्ट बना सके!!

ऐसे लोग संख्या में भले ही कम हों, पर हर जगह मिल जाते हैं। ऐसे लोग स्वार्थ के लिए या अपने नाम के लिए काम नहीं करते, बल्कि सार्वजनिक भलाई के लिए काम करते हैं। ये लोग सब को आगे रख कर काम करते हैं। यूं ये खुद पीछे रहते हैं, पर न्याय, ईमानदारी, पारदर्शिता, अनुशासन, धैर्य व सामाजिक सहयोग में सबसे आगे रहते हैं। भले ही इनका प्रचार ज्यादा नहीं होता हो, पर नींव के पत्थर की तरह ये गांव के गौरव को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यही है हिन्दुस्तान का एक परसेन्ट। जिसकी सब दुहाई देते हैं। जहाजवाली नदी पुनर्जीवन के इस एक परसेन्ट ने भी कभी प्रचार नही चाहा। लेकिन इन्हें याद करना जरूरी है। शायद इनकी बात भारत में ऐसे एक परसेन्ट को दो परसेन्ट बना सके!!

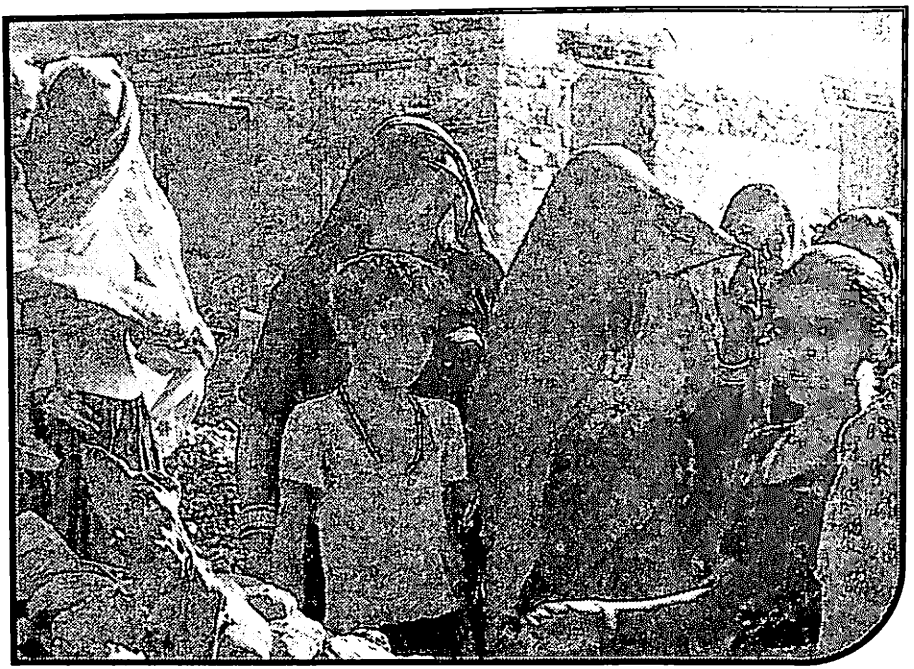

उनके वंशज

हमारे गौरव

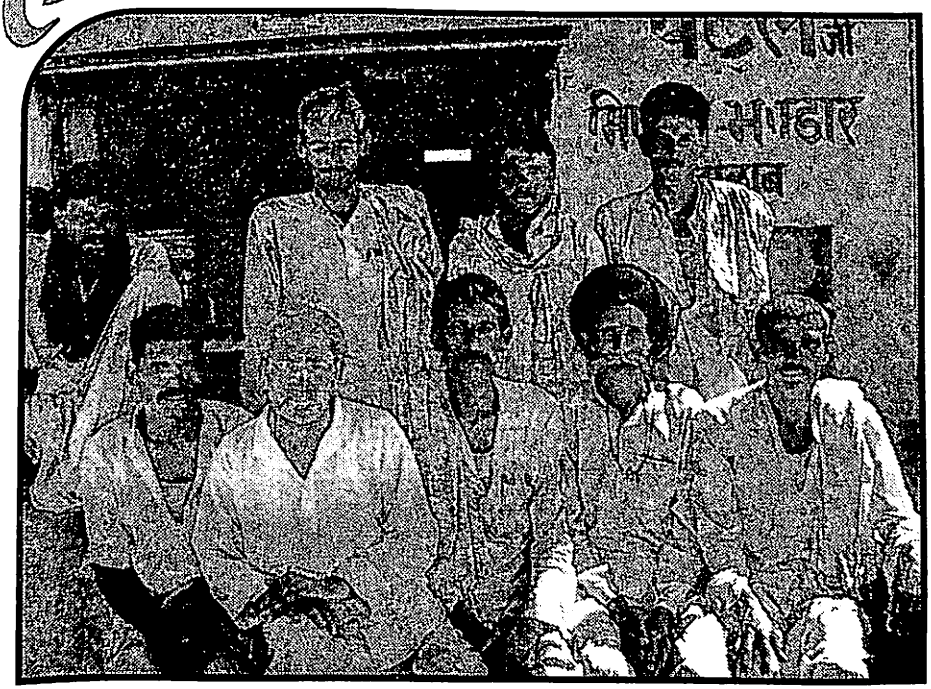

देवरी मन्दिर के पुजारी **स्व. जगदीश शर्मा** सचमुच श्रम के सिपाही थे। वह 1988 में तरुण भारत संघ के साथ जुड़े थे। वह सदैव सच्चे व ईमानदार लोगों के बीच बैठते थे। मुझे याद है कि जब देवरी में संकट आया था, तब उन्होंने रात-दिन लगकर लोगों की हिम्मत बंधाई। हर बुरे वक्त में वह गांव के साथ खड़े रहे। देवरी के मन्दिर की पूजा करते हुए वह वहां बच्चों को पढ़ाने का काम भी करते थे। उन्होंने मन्दिर को ही शिक्षा का केन्द्र बना लिया था। उस दौरान मेरा मन बहुत करता था कि मैं भी देवरी में जगदीश शर्मा जी के साथ रह कर खेती, पशुपालन व बच्चों को पढ़ाने आदि का काम करूं।

मुझे याद है जब तक जगदीश शर्मा देवरी गांव में रहे, तब तक मेरा ज्यादा समय देवरीवासियों व जंगलात विभाग के बीच की लड़ाई के समाधान में ही बीता। लेकिन जब उनमें पानी के काम करने की कुशलता व क्षमता आ गई, तो उन्हें देवरी जैसे ही काम करने हेतु दूसरे गांवों में भेज दिया। तभी से मेरा उनसे मिलना-जुलना कम हो गया। लेकिन मुझे उनकी पानीदार आंखें सदैव याद रहेंगी। वह किसी का तनिक सा भी दुःख देखकर दुःखी हो जाते थे। उसकी मदद के लिए तत्पर रहते थे। उन्होंने तरुण भारत संघ से कभी भी बहुत ज्यादा लेने की कोशिश नहीं की। उन्होंने तरुण भारत संघ से जितना लिया, उससे असंख्य गुणा समाज को दिया। वह धरती व प्रकृति से लेने व देने में भी बहुत ही अनुशासित व मर्यादित थे।

अपने जीवन के अंतिम क्षणों में जब वह सभी कुछ छोड़कर जा रहे थे, उस समय भी वह अपनी मां के लिए अपने सिर पर पानी का घड़ा भरकर लाने ही गए थे। अंतिम विदाई का मौका था। प्राण छूटने वाले थे। लेकिन तब भी उन्होंने अपने सिर के घड़े को गिराया नहीं, बल्कि बैठकर धीरज से नीचे रख दिया। फिर हमेशा-हमेशा के लिए सो गये। वह 62 साल के थे। यद्यपि वह आज शरीर से हमारे बीच नहीं हैं; लेकिन वह अपनी बहुत सारी यादें तरुण भारत संघ परिवार के लिए छोड़कर गये हैं। तरुण भारत संघ परिवार उन्हें हमेशा याद रखेगा। हमारी कामना है कि वह अगले जन्म में भी समाज के साझे कामों को करते रहें। सभी को पानीदार बनाते रहें। जगदीश शर्मा जी ने अपने जीते जी जहाजवाली नदी को जीवित करने में त्यागी, तपस्वी और सामाजिक कार्यकर्ता की तरह जीवन दिया। भला उन्हें कौन भुला सकता है!

गुवाड़ा (देवरी) गांव के परता बाबा आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन समाज के हित में उनकी निस्वार्थ सेवाओं को किसी भी रूप में भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने गांव में जंगलात द्वारा किये जा रहे शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने के साथ-साथ संगठन बनाकर पानी के काम में भी अच्छी भूमिका निभाई थी। वह सच्चाई, न्याय व

सेवाभावी स्वभाव के धनी थे। वह तरुण भारत संघ की कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे हैं। परता बाबा ने प्रेमसागर (सुरजा वाला बांध), सुखसागर (काला खेत वाला बांध), रामसागर व मोड्याळा जोहड़ में तन-मन-धन लगाकर अपने गांव में खुशहाली लाने का प्रयास किया। इनके प्रयास हरे-भरे खेतों के रूप में हमेशा दिखाई देते रहेंगे। जहाजवाली नदी के सबसे ऊपरी भाग में बांकाळा व देवरी के बीच बहने वाली पतली धारा इन्हीं के साझा प्रयासों का परिणाम है।

इसी गांव के लक्ष्मण बाबा (बैरा बाबा) बड़े ही दूरदर्शी आदमी हैं। इनमें व्यक्ति की पहचान करने की विशेष योग्यता है। यह स्पष्टवादी, संयमी और हिम्मत के साथ काम करने की प्रवृत्ति वाले व्यक्ति रहे हैं। यह अपने गांव में तो काम करते ही हैं; पदयात्राओं के दौरान बाहर भी पहुंच कर जल-जंगल जमीन बचाने का अलख जगाते रहते हैं। अच्छे कार्य करने वालों को यह सदैव प्रोत्साहित करते हैं। यह कागजी विकास को कोरा ही मानते हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षणार्थियों का एक दल जब देवरी गुवाड़ा गया, तब भी इन्होंने अपनी भाषा में उन्हें बहुत आगाह किया था - "आप तो देश में अन्न और जल कैसे बढ़े ? इसी का प्रयास करना। जमीन में से अधिक से अधिक पानी कैसे निकाला जाये ? इसका प्रयास मत करना। जहाजवाली नदी जोहड़-बंधों से कैसे सदानीरा हुई ? यह समझाने के लिए बैरा बाबा ने उन्हें नदी किनारे ले गए। फिर पानी हाथ में लेकर कहा- ये हैं हमारे प्रयासों की गंगा मां।

श्री कानाराम जी आज हमारे बीच नहीं हैं, पर वह बड़े कर्मयोगी पुरुष थे। परिवार में अकेले होने पर भी गांव के शामलाती जोहड़-तालाबों के निर्माण में हमेशा पूर्ण सहयोग दिया करते थे। गांव के साझे कामों में इन्होंने हमेशा अपने हिस्से से ज्यादा बड़ा सहयोग दिया। यह वर्षा से पूर्व हर निर्मित जोहड़-तालाब का निरीक्षण करते थे। किसी का सुख हो, दुख हो... आप मदद के लिए कानाराम जी को वहां मौजूद देख सकते थे।

गुवाड़ा गांव के जयराम भी बहुत ही भले इंसान हैं। यह गांव के अच्छे काम के लिए हर वक्त तैयार रहते हैं।

बांकाळा के भम्बू गुर्जर जहाजवाली नदी क्षेत्र के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने तरुण भारत संघ को समझकर कई सौ की आबादी वाले गांव देवरी गुवाड़ा का तरुण भारत संघ पर विश्वास जमा दिया था। यह इनकी परख शक्ति व दूरदर्शिता का कमाल रहा। देवरी गांव से उपजा यह विश्वास जहाजवाली नदी क्षेत्र में सब जगह फैल गया। इस विश्वास ने अरावली में चल रहे अवैध खनन के खिलाफ लोगों को खड़ा करने में अहम् भूमिका निभाई। ऐसे काम को टिकाने का प्रेरणा स्रोत भी श्री भम्बू गुर्जर ही हैं।

देवरी गांव के प्रभात पटेल बाबा भी यद्यपि आज हमारे बीच नहीं हैं, पर उनके प्रयास से हुए काम आज भी उनकी याद को ताजा कर देते हैं। प्रभाती पटेल बच्चे, युवा, बुजुर्ग व महिलाओं में समान रूप से सम्मानित थे। इनकी भलमनसाहत और परोपकार के लिए इन्हें इसी गांव के लोग नहीं, बल्कि पूरे इलाके के लोग बड़ी श्रद्धा से याद करते हैं। यह गांव के पटेल भी रहे; पर उससे ज़्यादा पानी के पटेल रहे।

अलवर से देवरी आने के बाद प्रभाती लाल जी पटेल ने अपना पटेलाई का दायित्व पूरा निभाया। तरुण भारत संघ के साथ जुड़कर इन्होंने ऊमरी में स्कूल चलाया। बाद में गांव के जंगल संरक्षण अभियान में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इन्हें वनकर्मियों का भी कोपभाजन होना पड़ा। पटेल जी के बेटे को भी वनकर्मियों ने अपने षड्यंत्र का निशाना बनाया। इन्हें भी कई तरह के मुकदमों में फंसाया गया। इन्होंने लुहारी वाले जोहड़ से लेकर दहड़ा वाले बांध निर्माण तक के कार्यों में अपने हिस्से का पूरा सहयोग किया। प्रभाती बाबा गांव में अच्छे लोगों की पहचान करके उन्हें हमेशा गांव के विकास के कार्यों में लगते रहे। वह आपस में लड़ाने वाले, गलत कामों के करने वाले, जंगल काटने वाले और शराबी लोगों से हमेशा नाराज रहते थे। वह ऐसे कुकृत्यों का सदैव विरोध किया करते थे। वह हमेशा गांव के भले के लिए समर्पित रहे। कार्यकर्ताओं को उन्होंने हमेशा प्यार दिया। कार्यकर्ताओं को उन्होंने कभी भी रहने-खाने की व्यवस्था के लिए परेशान नहीं होने दिया। सचमुच! वह देवपुरुष ही थे।

भगवान सहाय देवरी के प्रभाती पटेल के ही बेटे हैं। समाज सेवा का काम इन्हें विरासत में ही मिला है। बीस साल पहले के अपने अतीत को याद कर भगवान सहाय भाव-विभोर हो उठते हैं - "जब 1987 में हमारे गांव में तरुण भारत संघ का प्रवेश हुआ, तब मीटिंग करने के लिए गांव को इकट्ठा करने की जरूरत पड़ती थी। लोगों को बुलाकर इकट्ठा करने में मेरी स्वाभाविक रुचि थी। इसलिए पिताजी के कहे अनुसार मैं तीनों गांवों में तुरन्त घर-घर जाकर सूचना देता था और जरूर आने का आग्रह करता था। मुझे इंतजार रहता था कि कब बैठक हो और कब मुझे बुलाने को भेजा जाये। गांव की बैठक में होने वाली वार्ताओं और निर्णयों से प्रेरित होकर ही मैं गांव के कामों में रुचि लेने लगा। धीरे-धीरे मेरी समझ विकसित होने लगी। फिर मैं दूसरे गांवों में जाकर सरिस्का क्षेत्र में जंगल संरक्षण के लिए ग्रामसभाएं गठित करने का काम करने लगा। अब मैं अपना घर का काम करते हुए भी स्वतंत्र रूप से जल व जंगल बचाने का काम करता हूं। इस काम में मुझे आत्मिक आनन्द आता है।"

देवरी गांव के दक्षिण की तरफ की पहाड़ी को पार करते ही राड़ा गांव आता है। राड़ा के **जयनारायण गुर्जर** आज हमारे बीच नहीं हैं, पर वह अपने जीवन काल में गांव के साझे काम में सबसे आगे रहे। अच्छे नियम-कानूनों से गांव का भला हो, वह हमेशा इन्हीं विचारो में खोए रहते थे। वह नहीं चाहते थे कि बिचौलियों व वनकर्मियों की साजिश से गांव का जंगल बर्बाद हो। अपनी जानकारी में वह कभी भी हल्का पटवारी को रिश्वत नहीं लेने देते थे। राड़ा ग्रामवासियों ने अपने गांव की ग्रामसभा का अध्यक्ष पद उन्हें ही दिया था। वह जब तक अध्यक्ष पद पर रहे, अपना पूरा दायित्व निभाया। रीति-नीति के साथ जल-जंगल संरक्षण का पक्ष लिया। जोहड़-तालाबों के स्थान व आकृति निर्धारण में भी हमेशा निर्णायक भूमिका निभाई।

राड़ा के ही स्वर्गीय घमण्डी गुर्जर सदैव प्रयासरत रहते थे कि जल-जंगल संरक्षण के लिए बने गंवई कानून हमेशा कारगर रहें। एक प्रसंग है कि गांव में कई अपराधी पेड़ काटकर ग्रामसभा के नियमों का उल्लंघन कर रहे थे जिसके लिए ग्रामसभा में काफी समझाइश की जा रही थी। गांव का भला चाहने वाले व्यक्ति बेहद दुःखी थे। अन्तिम उपाय करने से गांव वाले बचना चाह रहे थे। इसी प्रक्रिया के दौरान एक अपराधी ने घमन्डी जी पर यह झूठा आरोप लगा दिया कि उन्होंने भी एक दिन एक झाड़ की टहनी काटी थी। घमण्डी जी ने बिल्कुल झूठा आरोप होते हुए भी बिना आनाकानी, गांव की समस्या के हल को ध्यान में रखते हुए पंचों के सामने जुर्म कुबूल कर लिया। पंचों ने उन पर 11 रुपये का जुर्माना कर दिया। घमण्डी जी ने उसे सादर स्वीकार कर पंचों को जुर्माना तत्काल अदा किया। ऐसा करना अच्छे समझ व स्वभाव का प्रतीक है।

राड़ा गांव के ही स्वर्गीय हरजी गुर्जर स्पष्टवादी, भावुक और तुनकमिजाजी व्यक्ति थे। तरुण भारत संघ के गांव में आने के बाद जब जोहड़ों का काम शुरू हुआ, तो वह इसमें बड़ी श्रद्धा रखते थे। वह पानी के काम के पुण्य से बड़ा किसी भी काम को नहीं मानते थे। वह गांव के लोगों को श्रमदान के लिए प्रेरित करते थे। जो श्रमदान नहीं देता था, उससे लड़ पड़ते थे। काम किसी भी तरह से बाधित नहीं हो, वह इसका भी ध्यान रखते थे। गांव के साझे काम के लिए लोगों को प्रेरित करना इनका प्रमुख काम था।

यहीं के प्रभाती लाल डोई सहनशील, निर्णायक और मितभाषी व्यक्ति हैं। इन्होंने तरुण भारत संघ के जल-जंगल-जमीन संरक्षण के चेतना अभियानों की श्रृंखला में नींव की ईंट बनकर कार्य किया। प्रारम्भिक दौर में आप तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं को भी प्रोत्साहित करने में विशेष भूमिका अदा करते थे। सरिस्का में किये गये जंगल संरक्षण यज्ञ में भी इन्होंने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। इन्होंने गांव-

गांव जाकर प्रचार किया। वन उजाड़ने वालों की बुद्धि ठीक हो। इस हेतु गांव-गांव से घी इकट्ठा करके भर्तृहरि यज्ञ में पहुंचाया। इन्होंने लोसल गूजरान, राड़ी, बांकाळा, देवरी, गुवाड़ा गांवों में बार-बार पहुंचकर समाज को जोहड़-तालाब के लिए प्रेरित किया। यह आज भी बढ़-चढ़ कर जल संरक्षण के कार्य में लगे हुए साथी हैं।

राड़ा गांव के दयाराम गुर्जर भी बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं। इन्हें गांव के साझे काम की जो भी जिम्मेदारी दी जाती है, उसे यह तत्परता से पूरा करते हैं। अपने अंदाज से लेवल लेना, पाल की चौड़ाई तय करना, जोहड़-तालाब की साइट तय करना आदि तकनीकी काम में भी आप अपनी पूरी भूमिका अदा करते रहे हैं। इन्होंने कई बार गांवों में पदयात्राएं भी की हैं। इन्होंने सोनावाला बांध, गोवर्धनपुरा की जोहड़ी, भैंरू वाला बांध, झोतवाला जोहड़, फूटा बांध, गाण्डरवाली जोहड़ी, बेरला का बांध, भाल की जोहड़ी, ओणावाला जोहड़, मन्याली की जोहड़ी आदि निर्माण कार्यों में मिट्टी की खुदाई-छँटाई पर पूरा ध्यान रखा।

इसी गांव की श्रीमती ज्ञानी देवी इस बात का विशेष ध्यान रखती रही हैं कि गांव या परिवार के साझले काम में अपनी तरफ से कोई कमी न रहे। साझे काम में किसी दूसरे का योगदान भी कम नहीं रह जाये। इसके लिए पूरी तरह से सतर्क रहकर उसे आगाह करना भी इनका स्वभाव है। कितना भी कठिन काम क्यों न हो, उसे करने में ज्ञानी देवी कभी पीछे नहीं हटी। ज्ञानी देवी ने कई जोहड़-तालाबों में अच्छी मेहनत करके अपना योगदान दिया है। इन्होंने राड़ा वाला जोहड़ में गांव द्वारा तय चौकड़ियों से भी अधिक चौकड़ियां निकालीं और लोग भले ही पीछे रह गये हों, पर ज्ञानी देवी ने अपना दायित्व पूरा निभाया। जोहड़ में काम चलते वक्त हर शाम अथवा भुगतान के दिन, सब की चौकडिय़ों को नपवाने और कम रहने पर कम पैसा दिलाने और अधिक होने पर अधिक पैसा दिलाने के काम को वह अपना कर्तव्य समझती थीं। कहीं एक भी पैसा कम या ज्यादा न चला जावे... इसका पूरा ध्यान रखती थीं। मिट्टी सही जगह पर नहीं डालने पर लोगों से लड़ पड़ती थीं। उसका विरोध कर मिट्टी सही जगह डलवाती थीं। साथ ही नये जोहड़-तालाब की योजना बनाने में भी इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। गांव के रीढ़, फूटा बांध व राड़ा का बांध आदि का प्रस्ताव ज्ञानी देवी ने ही कराया। यह बांध सार्वजनिक नहीं होकर सामुदायिक था। इसके लिए साझे परिवारों को जोड़ने हेतु इन्होंने समझाकर, दबाव डालकर... हर तरह से तैयार किया। जिससे इसके नीचे के मीणा वाला कुएं में अटूट पानी हो गया है जिसे देखकर इनका मजाक उड़ाने वाली महिलाएं भी एक बार दांतों तले अंगुली दबा गईं।

राड़ा की ही गंगा देवी महिला जुड़ाव की समझ व व्यक्ति पहचान की क्षमता रखने वाली महिला हैं। गांव में झोतवाले जोहड़ (स्कूल वाला जोहड़) के काम में प्रारम्भ में गांव का जुड़ाव अच्छा नहीं था। फिर भी गंगा बहन ने बिना किसी की परवाह किए अपने साथ कई महिलाओं को जोड़कर काम शुरू कर दिया था। बाद में पुरुषों को भी शर्म आई। वे भी जुड़े। इनके ऐसे प्रयासों से ही गांव में 12-13 बड़े-बड़े जोहड़-तालाबों का निर्माण हो पाया। कितने पशु, पक्षी, धरती... सब तृप्त हो गए। गंगा देवी अपने गांव में इतने सारे तालाबों का निर्माण करके गौरवान्वित महसूस करती हैं।

राड़ी के नौजवान श्री **रामप्रताप गुर्जर** गांव में बालकों की पढ़ाई व कुओं में पानी की बढ़ोत्तरी करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति थे। इन्होंने तरुण भारत संघ से सम्बन्धित लोगों से मिलकर गांव में स्कूल चलाने का आग्रह किया। गांव में कई विरोधी होने पर भी रामप्रताप ने हिम्मत के साथ अपने भाई रामकरण की मदद से गांव महादेववाला जोहड़ का काम पूरा किया। इनके परिवार के हीरालाल, देवीसहाय, हरिकिशन, नारायण सहाय, जगदीश पीलवाल ने बेहद प्रयास करके गांव में भरतावाला बंध तथा गंगोती पाली जोहड़ी का निर्माण कराया। शिक्षा के काम में भी काफी सहयोगी रहे।

लोसल गूजरान गांव के स्व. श्री हरसहाय गुर्जर गांव में बीलूण्डा बांध के निर्माण कार्य हेतु हमेशा प्रयासरत रहे। यह अपने समय के पढ़े-लिखे लोगों में से एक थे। अस्सी के अन्त में इन्होंने तरुण भारत संघ व अपने गांव को बीलूण्डा बांध के निर्माण के लिए तैयार कर दिखाया। बीलूण्डा बांध निर्माण के समय अपनी वृद्धावस्था में भी हरसहाय जी तन-मन-धन से जुटे रहे। अपना सपना अपनी ही आखों के सामने सच हुआ देख वह धन्य महसूस करते थे।

इसी गांव के स्व. श्री सरदाराराम अपने जीवन में हमेशा जुझारू, न्यायप्रिय, गरीब के हितैषी और शुभचिंतक रहे। वह सामाजिक पंचायती में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। बीलूण्डा बांध के निर्माण के समय इन्होंने भी बड़ा सहयोग दिया था।

यहीं के लक्ष्मण गुर्जर दूसरों की पीड़ा व साझे कामों में सहयोग करके खुश होने वाले व्यक्ति हैं। इनसे सब खुश रहते हैं। यह अपनी रिश्तेदारियों के माध्यम से तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करके उसे अपने गांव में लेकर गये थे। बीलूण्डा बांध को बनवाने में इनकी भूमिका भी खास रही है। गांव का संगठन बनाने में भी इन्होंने बहुत परिश्रम किया था।

लोसल ब्राह्मणान के मनोहरलाल शर्मा मेहनत के काम में विश्वास रखने वाले व्यक्ति हैं। इन्होंने अपने गांव के चारागाह व सीमाओं पर बहुत सारे जोहड़-बांध

बनाने में सहयोग दिया है। इनके प्रयासों से बनाये गये तालाबों का प्रभाव मोतियों की सी माला के रूप में बहते झरनों में दिख जाता है।

लाड्या का गुवाड़ा के रामप्रताप, जगदीश, छीतर, प्रभु, मुरली और रामस्वरूप जी ने ग्रामवासियों को जोड़कर कई तालाबों-जोहड़ों का निर्माण किया है। ये जोहड़-तालाबों की आज भी भली-भांति देखरेख करते हैं। तालाबों में जब भी मरम्मत कार्यों की जरूरत हुई, ये कभी पीछे नहीं रहे। जहाजवाली के दक्षिण-पूर्व में 2 किलोमीटर दूर आबाद हुआ यह गांव खुद नदी की शोभा बढ़ाने में कभी पीछे नहीं रहा।

लाड्या का गुवाड़ा गांव के श्रीकिशन मीणा मास्टर जी को पढ़ाई-लिखाई का अच्छा अवसर मिला। राजकीय प्राथमिक पाठशाला, नाण्डू में कक्षा पहली से पांचवीं तक मुझे भी इनके पास पढ़ने का सौभाग्य मिला। इनकी मेहनत व सान्निध्य भुलाया नहीं जा सकता। इन पांच वर्षों में मात्र एक दिन का अवसर ऐसा रहा, जब यह पेट-दर्द की पीड़ा के कारण बिना राजकीय अवकाश के विद्यालय नहीं आ पाये। लेकिन उस दिन भी इन्होंने स्कूल समय से पहले ही हर बालक के घर सूचना भिजवा दी थी कि वह नहीं आ सकेंगे। तरुण भारत संघ के जल संरक्षण अभियान व लोकचेतना की बिगुल की आवाज़ सुनी, तो श्री किशन मास्टर जी भी संगठन जोड़ने में जुट गए। सेवानिवृत्ति के कुछ हफ्ते बीत जाने के बाद तरुण भारत संघ के तरुण आश्रम में आकर इन्होंने मुझे (जगदीश गुर्जर) बहुत धन्यवाद दिया था। कहा था -मुझे गर्व है कि मेरा शिष्य अपने क्षेत्र सहित पूरे देश में जल संरक्षण हेतु जन-चेतना जगाने का कार्य कर रहा है। मेरे ऐसे आदर्श गुरुजी को मैं शत् शत् बार नमन करता हूँ।

इसी गांव के रामप्रताप, जगदीश, छीतर, प्रभु, मुरली, रामस्वरूप जी ने सभी ग्रामवासियों को जोड़कर कई तालाब-जोहड़ों का निर्माण किया है। इसी गांव के श्रीराम गुर्जर कहते हैं - पानी का काम करके संस्था ने हमारे पूरे एरिया को टापू बना दिया है। संस्था ने यहां काम करने का नक्शा-मौका भी अच्छा देखा है। लगभग 25 वर्ष पहले हमारे गांव में चार कुएं थे। इनमें प्रतिदिन मात्र 300 चड़स पानी ही निकाला जा सकता था। अब पूरे दिन भर इंजन चलता है। तब भी पानी की कमी नहीं आती।''

चावा का बास जहाजवाली क्षेत्र के मध्य का गांव है। यह गांव इस नदी क्षेत्र में हमेशा निर्णायक भूमिका निभाता रहा है। जब जल-जंगल संरक्षण हेतु चेतना अभियान आगे बढ़ा, तो उस वक्त इस गांव ने सबसे पहले अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

यहां के ही लक्ष्मीनारायण जी शर्मा जाति-पाँति से ऊपर उठकर जीवन जीने वाले, निष्पक्ष, निडर, गरीब-हितैषी व प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किए

जाने वाले व्यक्ति थे। वह इलाके की पूरी समझ रखते थे। वह रिश्वतखोरों का डटकर विरोध करते थे। देवरी के काम में लक्ष्मीनारायण जी ने बिना कार्यकर्ताओं से सम्पर्क हुए ही स्वयं के विवेक से संस्था को सहयोग करने का वादा किया था। देवरी, गुवाड़ा व बांकाळा में जंगलात विभाग ने जब कहर ढाना शुरू किया, तब श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा व इनके पुत्र मुकेश शर्मा ने ग्रामवासियों का अकथनीय सहयोग किया था। इन्होंने अपने गांव में तरुण भारत संघ के सहयोग से सात जोहड़-तालाबों का निर्माण भी कराया।

चावा का बास के ही सुभाष जी शर्मा व भगवान सहाय जी कहते हैं - हमने स्वयं जब यह महसूस किया कि जोहड़-एनीकट बनने से कुओं का जलस्तर बढ़ेगा, तो फिर हमने गांव वालों के साथ बैठकर उन्हें श्रमदान के लिए तैयार किया। तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क कर उनसे जोहड़ों के काम की स्वीकृति ली। आज हमारे कुओं में भी तीस फीट के ऊपर पानी बना हुआ है। मुरलीपुरा के खाड्या वाला जोहड़ के बनने से लल्लूराम जी के कुएं में तो दस फीट पर ही पानी आ गया है। रही जहाजवाली के जिंदा होने की बात, तो वह तो सचमुच! अद्भुत आनंद देने वाली है।

नायाळा गांव के बुद्धराम, शिवदयाल, श्रीराम व बाबूलाल ने भी जहाजवाली नदी को सदानीरा बनाने में अपनी अहम् भूमिका अदा की है। गांव में कई लोगों को समझाने में इन्हें बहुत मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ी थी। कई लोगों के द्वारा इनका विरोध किया गया, पर इन लोगों ने दिन-रात लगकर तालाबों का निर्माण कार्य किया। अब इनके सपने साकार होते दिख रहे हैं। अब इन्हीं की पगडंडी पर ग्राम पंचायत भी चल रही है। शिवदयाल जैसे नौजवान तो समाज में सौहार्द की भावना फैलाने से खुद निखर गये हैं। ये आस-पास के गांवों में अपनी अच्छी पहचान बना चुके हैं।

नाभाला: जहाजवाली नदी क्षेत्र के सभी गांवों में जब जल संरक्षण का कार्य परवान चढ़ रहा था, उस समय नाभाला के रामपाल, मूलचन्द्र, आनन्दा, छोटेलाल, देवी सहाय व सूंस्याराम ने भी गांव-गांव में ग्राम सभाएं आयोजित करके ग्रामीणों को जोहड़ निर्माण हेतु तैयार किया। अपने प्रयासों से बने जोहड़ में पहले मानसून के वर्षा जल को भरा देखकर ये बड़े धन्य हुए। अब ये सभी हमेशा जोहड़ की सुरक्षा में रहते हैं।

राजडोली गांव के नानगराम लुहार दरीबा यानी कॉपरमाइन्स में तकनीकी काम करते थे। दरीबा माइन्स छोड़ने के बाद से नानगराम सामाजिक उत्थान के कार्य में लगे हुए हैं। तरुण भारत संघ द्वारा संचालित प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व जन चेतना अभियान

में जुड़कर इन्होंने अपने गांव राजडोली तथा आसपास के क्षेत्र में पानी का काम किया है। इन्होंने अपने गांव-समाज को जागरूक किया। वन संरक्षण हेतु टहला सरिस्का संरक्षण मंडल की सदस्यता ग्रहण करके जंगल संरक्षण प्रयासों में भी शामिल हुए। ऐसे कामों से ही जहाजवाली नदी सदानीरा हो सकी।

धोळा राड़ा गांव तालाब गांव की ही एक ढाणी है, जो तालाब से करीब 2 किलोमीटर दूर दक्षिण दिशा में पहाड़ी के पास स्थित है। अपने सूख चुके कुओं को पुनः पानीदार बनाने हेतु यहां के रामजीलाल राजोरिया व रमेश राजोरिया ने अपने गांव के जंगल में कृषि भूमि की ऊपरी दिशा में तीन जोहड़ तैयार किये हैं।

तालाब गांव के बिशन सहाय जी ने काफी प्रयास करके अपने गांव में पाँच जोहड़ बांध बनाये हैं। बड़ा गांव होने के कारण इन्हें यहां काफी मेहनत करनी पड़ी।

टहला जहाजवाली नदी का सबसे बड़ा गांव है। यद्यपि कस्बे के नीचे यहां का एक पुराना बांध है, लेकिन ऊपर की जमीन में प्रायः पानी का अभाव रहता है। इसलिए लोगों ने यहां पर दो जोहड़ ऊपर की तरफ बनाकर पानी की कमी को पूरा कर लिया है।

सब जगह... सभी गांवों में ऐसे गौरवशाली लोग मिले, जिनके प्रयासों ने जहाजवाली नदी को उसका गौरव लौटा दिया। ऐसे ही एक और गौरवशाली पुरुष के जिक्र के बगैर यह अध्ययन अधूरा रहेगा।

श्री भोजराज सिंह! आप सरिस्का बाघ परियोजना में रेंजर के पद पर कार्यरत थे। सरकारी मशीनरी में रहकर भी तरुण भारत संघ के वन संरक्षण हेतु संचालित जन चेतना अभियान को समझने वाले और उसमें सहयोग करने वाले यह सबसे पहले वन अधिकारी रहे हैं। श्री भोजराज जी ने ग्रामीणों को साथ लेकर हमेशा जंगल बचाने का कार्य किया। इन्होंने जंगल बचाने वालों के खिलाफ वन विभाग के वनकर्मियों द्वारा लगाये गये झूठे मुकदमों को निरस्त कराने में बढ़-चढ़कर अपनी अहम् भूमिका निभाई। अभयारण्य के अंदर करणा का बास, नया पानी आदि जगहों पर जल संरक्षण हेतु जल संरचनाओं के सम्पादन में भी इन्होंने बड़ा योगदान दिया था। इन्होंने देवरी गांव के लोगों के जल संरक्षण व चेतना कार्यों के प्रति हमेशा सकारात्मक भाव रखा। जयराम गुर्जर व गिर्राज मीणा के खिलाफ झूठा मुकदमा दर्ज होने पर इन्होंने ही मुकदमे की गहराई से जांच कराकर ग्रामीणों का पीछा छुड़ाया था। जहाजवाली नदी और जंगल की ओर से हम ऐसे रेंजर के भी आभारी रहेंगे, जिसने अपनी 'रेंज' से बाहर निकलकर बेहतर कार्य किया। **ऐसे गौरवों को प्रणाम!**

जहाज की जल संरचनाएं

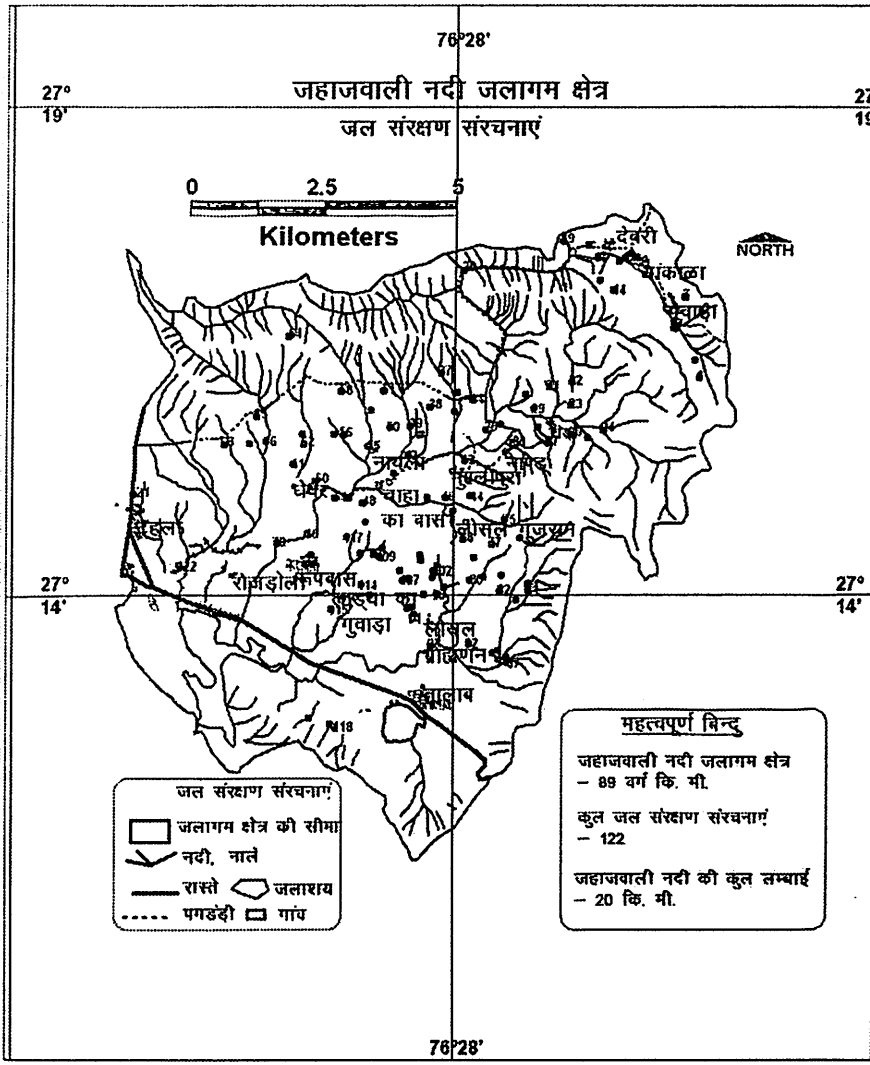

जहाज नदी जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ के आंशिक सहयोग से ग्रामवासियों द्वारा मार्च, 2009 तक निर्मित जल संरक्षण संरचनाएं और ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम (जीपीएस) के जरिए श्री गोपाल सिंह द्वारा आंकी गई उनकी भौगोलिक स्थिति।

क्र.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री
1	खारली वाला जोहड़	गुवाड़ा	27	16	35	27.2763	76	30	59	76.5163
2	कदम वाला बाँध	गुवाड़ा	27	16	45	27.2792	76	30	55	76.5152
3	काळा खेत का बाँध	गुवाड़ा	27	17	5	27.2847	76	30	41	76.5113
4	भैंरु वाला जोहड़	गुवाड़ा	27	17	8	27.2857	76	30	41	76.5114
5	सेढ वाली जोहड़ी	गुवाड़ा	27	17	9	27.2858	76	30	40	76.5112
6	राम सागर बाँध	गुवाड़ा	27	17	15	27.2875	76	30	60	76.5166
7	मोड्याळा जोहड़ -1	गुवाड़ा	27	17	24	27.2899	76	30	48	76.5134
8	मोड्याळा जोहड़ -2	गुवाड़ा	27	17	24	27.2899	76	30	48	76.5133
9	सुरज्या वाळा बाँध	बाँकाळा	27	17	37	27.2936	76	30	20	76.5057
10	गौर वाळी जोहड़ी (स्कूल के पास)	बाँकाळा	27	17	48	27.2966	76	30	15	76.5041
11	हरलाल की मेड़बन्दी	बाँकाळा	27	17	50	27.2972	76	30	10	76.5029
12	शोभाराम की मेड़बन्दी	बाँकाळा	27	17	47	27.2965	76	30	7	76.5018
13	भम्भू वाला बाँध	बाँकाळा	27	17	45	27.2959	76	30	3	76.5007
14	रूपनाथ जी का जोहड़-1	बाँकाळा	27	17	28	27.2911	76	29	59	76.4997
15	रूपनाथ जी का जोहड़-2	बाँकाळा	27	17	28	27.2911	76	29	58	76.4996
16	रूपनाथ जी का कुण्डा	बाँकाळा	27	17	33	27.2926	76	29	49	76.4970
17	बलखण्डा बाँध	देवरी	27	17	48	27.2966	76	29	48	76.4966
18	उमराव की मेड़बन्दी	देवरी	27	17	55	27.2987	76	29	42	76.4949
19	कारोज वाला जोहड़	देवरी	27	17	58	27.2994	76	29	24	76.4899
20	दहड़ा वाला एनीकट (जहाज वाला बाँध)	देवरी	27	17	40 44.4	27.2944	76	28	15 8	76.4708
21	मंन्याळी जोहड़ी -मीणाला के पास	राड़ा	27	16	30	27.2749	76	29	15	76.4876
22	गाँडर वाली जोहड़ी	राड़ा	27	16	32	27.2756	76	29	31	76.4918
23	फूट्या बाँध-(मीणाला के पास)	राड़ा	27	16	18	27.2717	76	29	30	76.4917
24	सोना वाला बाँध	राड़ा	27	16	2	27.2674	76	29	52	76.4979
25	भैंरू वाला जोहड़ (बावा वाला जोहड़)	राड़ा	27	15	58	27.2661	76	29	42	76.4951

क्र.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री
26	बळा गोवर्धनपुरा का जोहड़	राड़ा	27	16	0	27.2667	76	29	31	76.4919
27	क्यारड़ा का जोहड़	राड़ा	27	15	55	27.2652	76	29	14	76.4872
28	गाँव का जोहड़ (स्कूल वाला जोहड़) झोत वाला जोहड़	राड़ा	27	16	5	27.2680	76	29	8	76.4855
29	मोड़ा वाला एनीकट	राड़ा	27	16	16	27.2712	76	29	5	76.4847
30	ओदरा वाला जोहड़	राड़ा	27	16	25	27.2735	76	28	59	76.4831
31	नाण्डू का पुराना जोहड़	नाण्डू	27	15	55	27.2654	76	28	50	76.4806
32	राधेश्याम वाला जोहड़	नाण्डू	27	16	6	27.2684	76	28	41	76.4782
33	नानगा खाती का एनीकट	नाण्डू	27	16	3	27.2675	76	28	32	76.4755
34	गंगोती वाला जोहड़	राड़ी	27	16	21	27.2725	76	28	22	76.4729
35	महादेव जी वाला जोहड़	राड़ी	27	16	14	27.2705	76	28	10	76.4694
36	हरलाल की मेड़बन्दी	राड़ी	27	16	26	27.2739	76	28	12	76.4699
37	लहलाज वाला जोहड़	राड़ी	27	16	38	27.2771	76	28	1	76.4669
38	नीलकंठणी का जोहड़	राड़ी	27	16	17	27.2714	76	27	52	76.4646
39	चौंतरा वाला (गोविन्दा का) जोहड़	मुरलीपुरा	27	16	5	27.2681	76	27	40	76.4610
40	खाडाळा का बाँध	मुरलीपुरा	27	15	60	27.2666	76	27	46	76.4627
41	खाडाळा का एनीकट	मुरलीपुरा	27	16	0	27.2668	76	27	48	76.4632
42	कोंछ वाला एनीकट (किशन का)	मुरलीपुरा	27	15	48	27.2632	76	27	38	76.4605
43	भरथरी की राड़ी (ढ़ाणी) का जोहड़	मुरलीपुरा	27	15	43	27.2620	76	28	17	76.4715
44	गिर्राज वाला बाँध (ठेकड़ा के नीचे)	मुरलीपुरा	27	15	22	27.2560	76	28	21	76.4725
45	उमराव वाला बाँध (ठेकड़ा के नीचे)	मुरलीपुरा	27	15	31	27.2586	76	28	20	76.4722
46	बन्दड़ी वाला जोहड़	मुरलीपुरा	27	15	20	27.2556	76	28	4	76.4677
47	ओंडा नळा का बाँध	मुरलीपुरा	27	15	21	27.2558	76	27	51	76.4642
48	पथवारी वाला जोहड़	चावा का बास	27	15	17	27.2549	76	27	7	76.4519
49	पचवीर वाली जोहड़ी (सेढ़ की राड़ी के पास)	चावा का बास	27	15	21	27.2557	76	26	57	76.4493

क्र.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री
50	बौंळी वाला जोहड़ (पामदाळा का जोहड़)	चावा का बास	27	16	5	27.2679	76	27	26	76.4571
51	जोवन्याळी का बाँध	चावा का बास	27	16	27	27.2741	76	27	21	76.4558
52	भज्या मास्टर जी का बाँध	चावा का बास	27	15	36	27.2600	76	27	28	76.4577
53	मुकेश मास्टर जी का बाँध	चावा का बास	27	15	5	27.251	76	27	9	76.45252
54	महेश जी शर्मा का बाँध	चावा का बास	27	15	20	27.256	76	26	47	76.44647
55	गाँव का जोहड़	नायाळा	27	15	53	27.2647	76	27	10	76.4528
56	खाळ (ओणा) वाला जोहड़	नायाळा	27	15	60	27.2666	76	26	54	76.4482
57	नीमड़ी वाली जोहड़ी	नायाळा	27	16	15	27.2709	76	27	12	76.4533
58	भैंसोटा का जोहड़	नायाळा	27	16	27	27.2742	76	26	52	76.4477
59	कुराँतळी का जोहड़	घेवर	27	16	0	27.2668	76	26	47	76.4464
60	गाँव का जोहड़	घेवर	27	15	31	27.2586	76	26	34	76.4429
61	मोहन सहाय शर्मा की मेड़बन्दी	घेवर	27	15	41	27.2615	76	26	19	76.4386
62	धारू वाला जोहड़	घेवर	27	15	54	27.2650	76	26	26	76.4407
63	धारू वाला बाँध	घेवर	27	16	1	27.2668	76	26	25	76.4402
64	बल्ल्या रैबारी का बाँध	घेवर	27	16	60	27.2833	76	26	15	76.4375
65	बड़वाला बाँध	घेवर	27	16	11	27.2697	76	25	54	76.4317
66	बड़वाली जोहडी	घेवर	27	15	56	27.2655	76	26	0	76.4334
67	सुगन सागर	घेवर	27	15	55	27.2652	76	25	49	76.4303
68	राजड़ोली का जोहड़	राजड़ोली	27	15	54	27.2650	76	25	32	76.4255
69	रूपबास का एनीकट (सड़क के ऊपर वाला)	रूपबास	27	14	58	27.2495	76	26	29	76.4414
70	सुदर्शन एनीकट (सड़क के नीचे वाला)	रूपबास	27	14	52	27.2478	76	26	8	76.4356
71	सेढ वाली जोहड़ी	रूपबास	27	14	39	27.2443	76	26	28	76.4412
72	रामेश्वर (बोहरा बाबा) की मेड़बन्दी	रूपबास	27	14	40	27.2444	76	26	33	76.4425
73	रामेश्वर (बोहरा बाबा) की जोहड़ी	रूपबास	27	14	45	27.2458	76	26	32	76.4421

क्र.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री
74	वुद्धा की राड़ी (धोकाँळी) का जोहड़	लोसल गूजरान	27	15	12	27.2533	76	28	9	76.4693
75	बीलूण्डा बाँध	लोसल गूजरान	27	15	7	27.2519	76	28	45	76.4791
76	चतारा वाला बाँध	लोसल गूजरान	27	14	56	27.2488	76	28	55	76.4821
77	रामनिवास की मेड़बन्दी	लोसल गूजरान	27	14	51	27.2476	76	28	36	76.4767
78	नवरतन की मेड़बन्दी	लोसल गूजरान	27	14	55	27.2485	76	28	16	76.4712
79	वाण्डाळा जोहड़	लोसल गूजरान	27	14	43	27.2454	76	28	24	76.4733
80	रेतली वाला बाँध	लोसल गूजरान	27	14	29	27.2415	76	28	21	76.4725
81	मलहट वाला (श्मशान वाला) जोहड़	लोसल गूजरान	27	14	31	27.2421	76	28	30	76.4751
82	देवकरण की मेड़बन्दी-1	लोसल गूजरान	27	14	23	27.2397	76	28	42	76.4783
83	देवकरण की मेड़बन्दी-2	लोसल गूजरान	27	14	33	27.2424	76	28	43	76.4786
84	बैठकाळा बाँध	लोसल गूजरान	27	14	27	27.2409	76	29	1	76.4835
85	खोंद वाला बाँध	लोसल गूजरान	27	14	24	27.2399	76	29	2	76.4838
86	गोपाल बाँध (एनीकट)	लोसल गूजरान	27	14	18	27.2383	76	28	53	76.4813
87	हरिकिशन मिश्र की मेड़बन्दी	तालाब	27	13	41	27.2281	76	28	47	76.4798
88	शम्भू मिश्र की मेड़बन्दी	तालाब	27	13	44	27.2290	76	28	46	76.4795
89	बेरीन का जोहड़	तालाब	27	13	43	27.2286	76	28	41	76.4780
90	बेरीन का एनीकट-1	तालाब	27	13	48	27.2299	76	28	40	76.4779
91	बेरीन का एनीकट-2	तालाब	27	13	46	27.2296	76	28	37	76.4770
92	आनन्दी लाल का एनीकट	लोसल ब्राह्मणान	27	13	52	27.2311	76	28	21	76.4724
93	नदी वाला एनीकट	लोसल ब्राह्मणान	27	13	51	27.2308	76	27	54	76.4650
94	नवल शर्मा की मेड़बन्दी-1	लोसल ब्राह्मणान	27	14	7	27.2353	76	27	42	76.4617
95	नवल शर्मा की मेड़बन्दी-2	लोसल ब्राह्मणान	27	14	9	27.2359	76	27	43	76.4618
96	हरीराम की मेड़बन्दी	लोसल ब्राह्मणान	27	14	13	27.2370	76	27	38	76.4605
97	काळा भाटा का जोहड़ गाँव के पास	लोसल ब्राह्मणान	27	14	14	27.2372	76	27	41	76.4614
98	बनवारी शर्मा की मेड़बन्दी	लोसल ब्राह्मणान	27	14	21	27.2393	76	27	58	76.4662
99	रावळकी वाला जोहड़	लोसल ब्राह्मणान	27	14	26	27.2405	76	28	3	76.4675

क्र.	जोहड़ / बाँध का नाम	गाँव	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री	डि.	मि.	सै.	डेसीमलडिग्री
100	घाटी वाला जोहड़ (नेतराळा) -रोड़ के पास	लोसल ब्राह्मणान	27	14	21	27.2392	76	27	49	76.4637
101	खैणी भाटा का जोहड़	लोसल ब्राह्मणान	27	14	31	27.2420	76	27	55	76.4654
102	भैंरु जी वाला जोहड़	लोसल ब्राह्मणान	27	14	35	27.2432	76	27	56	76.4656
103	लाद्या वाळी (बाँड़ाळी) जोहड़ी	लोसल ब्राह्मणान	27	14	38	27.2440	76	27	59	76.4663
104	छोटी पळाई का जोहड़	लोसल ब्राह्मणान	27	14	42	27.2450	76	27	48	76.4632
105	बड़ी पळाई का जोहड़	लोसल ब्राह्मणान	27	14	45	27.2459	76	27	46	76.4629
106	काँसली वाला जोहड़	लोसल ब्राह्मणान	27	14	31	27.2419	76	27	39	76.4607
107	लाम्बा पापड़ा का जोहड़	लोसल ब्राह्मणान	27	14	30	27.2416	76	27	35	76.4597
108	छोटी भाट का जोहड़	लोसल ब्राह्मणान	27	14	35	27.2432	76	27	33	76.4591
109	रामजीलाल जी की मेड़वन्दी -1	लोसल ब्राह्मणान	27	14	44	27.2456	76	27	18	76.4550
110	रामजीलाल जी की मेड़बन्दी -2	लोसल ब्राह्मणान	27	14	44	27.2454	76	27	20	76.4555
111	छोटी जोहड़ी	लोसल ब्राह्मणान	27	14	49	27.2470	76	27	21	76.4557
112	किशना कोळी का बाँध	लोसल ब्राह्मणान	27	14	46	27.2460	76	27	15	76.4541
113	बलखण्डी महादेव जी का बाँध	लाड्या का गुवाड़ा	27	14	46	27.2462	76	27	6	76.4515
114	बलखण्डी वाला जोहड़ (श्री किशन मास्टर जी का)	लाड्या का गुवाड़ा	27	14	27	27.2409	76	27	6	76.4517
115	गौर वाली जोहड़ी	लाड्या का गुवाड़ा	27	14	13	27.2369	76	26	45	76.4459
116	मदन पटेल का बाँध	लाड्या का गुवाड़ा	27	14	21	27.2391	76	27	12	76.4533
117	कुण्डाळा की जोहड़ी	लाड्या का गुवाड़ा	27	14	56	27.249	76	26	56	76.44897
118	हजारी वाला बाँध	धोळा राड़ा	27	13	2	27.2173	76	26	48	76.4467
119	राजोरियाँ वाली जोहड़ी	धोला राड़ा	27	13	5	27.2180	76	26	45	76.4458
120	नीमड़ी वाला जोहड़	धोळा राड़ा	27	13	9	27.2190	76	26	30	76.4418
121	टहला गेट के अन्दर वाला जोहड़	टहला	27	15	23	27.256	76	24	31	76.40858
122	गूयल्या बाँध	टहला	27	14	38	27.2440	76	25	2	76.4172

हमारा काम

समझना ● सहेजना ● समझाना ● सत्याग्रह

तरुण भारत संघ ● जलबिरादरी

हमारा लक्ष्य

जल स्वराज से ग्राम स्वराज

तरुण भारत संघ

यह कभी नहीं जानता था कि छोटे-छोटे बंधे,
जोहड़, एनीकट, मेड़बंदियां, रोपे गए पौधे और
बिखेरे गए बीज मिलकर एक दिन पूरी
नदी को ही पुनर्जीवित कर देंगे।
जहाजवाली नदी के पुनर्जीवन की यह दास्तान
प्रमाण है कि यह असंभव नहीं। दुनिया में कहीं
भी... किसी भी नदी का पुनर्जीवन संभव है।
मगर शर्त यह है कि वहां जहाज जैसा
विरला समाज होना चाहिए।

तरुण भारत संघ, भीकमपुरा-किशोरी वाया थानागाजी, जिला-अलवर, राजस्थान-301022
फोन नं. 01465-225043 • ई मेल- watermantbs@yahoo.com